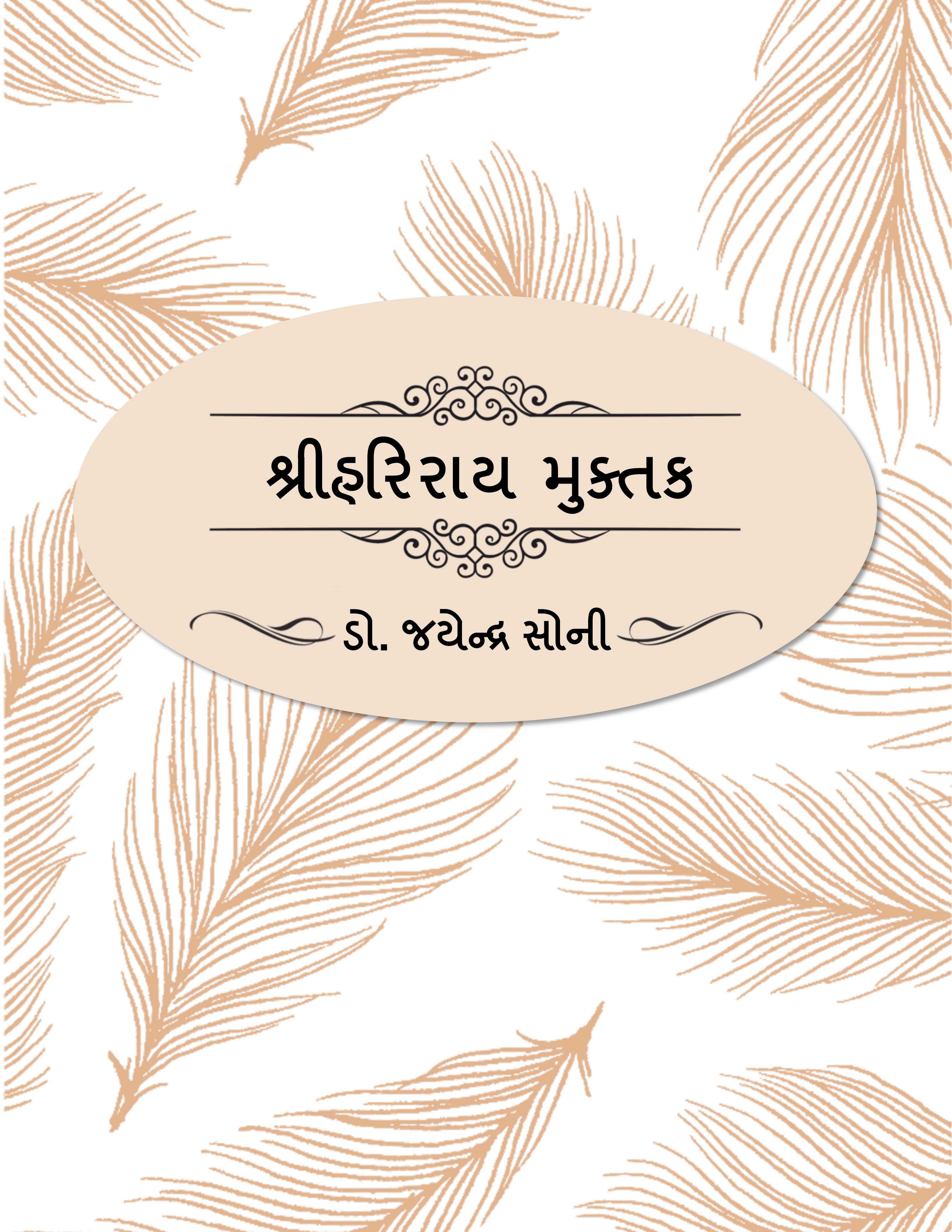

શ્રીહરિરાય મુક્તક

ડો. જયેન્દ્ર સોની

શ્રીહરિરાય મુક્તક

(*"શ્રીહરિરાય મુક્તક"* was one of Dr. Jayendrabhai Soni's message segments which was delivered on mediums like Whatsapp groups and his Facebook account. Here is a collated document of all the messages related to this segment.)

जयश्रीकृष्ण. शिक्षा सागर श्रीहरिराय महाप्रभु के प्राकट्योत्सव की सभी मित्रोको बहोत बहोत हार्दिक बधाई। यदि आपश्रीका प्राकट्य नहीं हुवा होता तो न हम श्रीमदाचार्यचरणके वास्तविक स्वरुप को जान पाते न उनके सिद्धांतोकी गहराई ! संप्रदाय के मर्म को यथार्थ रुपसे समझानेमें उनका अमुल्य योगदान है। आजसे हम अपनी नित्य सत्संग माला में उनका एक ओर मुक्तक पिरोये ! (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय - मुक्तक" (१)
****
"श्रीवल्लभभावाष्टकम्"
""""""""""""""""""""""""""""""

है श्रीवागीश महाप्रभु ! जो आ भूतल पर आपनुं प्राकट्य ऩ थयुं होत तो दैवी जीवो अपार पापावार संसार रुपी समुद्रने केवी रीते करी शकत, रसिक भगवदियो भावात्मक श्रीहरि ने केवीरीते अनुसार सकत अने व्रजभूमि ना माहात्म्य ने पोताना ह्रदयमां केवी रीते स्थापित करी शकत ? (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय - मुक्तक" (२)
****
"श्रीवल्लभभावाष्टकम् "
""""""""""""""""""""""""""""""

'हे वागीश महाप्रभु ! जो पृथ्वी पर आपनुं प्राकट्य न थयुं होत तो दैवी जीवो पुष्टि भक्तिमार्ग नो आश्रय शी रीते करत, सुखसागरनो अनुभव केवीरीते करत, अने पोतानुं सर्वस्व (स्त्री पुत्र घर कुटुंब द्रव्यादिक) आत्मनिवेदन द्वारा प्रभुने समर्पि शी रीते सफळ करत ? जेमां पुण्य क्षीण थतां जन्म-मरण नुं दुःख भोगववुं पडे छे तेवा दुःखवाळा कर्मादिकना फळनो केवी रीते त्याग करी शकत ? (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३)
****
"श्रीवल्लभभावाष्टकम्"
""""""""""""""""""""""""""""""""

"'हे वाक्पति महाप्रभु ! जो भूतल पर आपनुं प्राकट्य न थयुं होत तो दैवी जीवो शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद नुं केवीरीते वर्णन करी शकत, मायावादादिकथी कलुषित बुद्धि ने केवीरीते शुद्ध करी शकत अने सुबुद्धिमान भक्तजनो भगवान मां केवीरीते सदबुद्धि धारण करी शकत, शांतियुक्त भगवदियो तत्काल केवीरीते लौकिकासक्ति ने त्यजी शकत ? (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४)

****

'श्रीवल्लभभावाष्टकम्'

''

'हे वागीश महाप्रभु ! आप जो भूतल पर प्रकट न थया होत तो भगवल्लीला -मध्यपातरुपी उत्कृष्ट फल जेमां प्राप्त थाय छे तेवा निःसाधन मार्गमां विश्वास केवी रीते प्राप्त थात, तेमज लोकनो अने वेदनो भय त्यजी जगतमां केवी रीते फरी शकत ? अत्यंत हर्ष पूर्वक सर्वे भगवल्लीलाओनुं वर्णन केवीरीते करी शकत ? (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५)

****

''श्रीवल्लभभावाष्टकम्"

''

'हे वागीश महाप्रभु ! भूतल पर जो आपनु प्राकट्य न थयुं होत तो भगवद् भाव अर्थात् प्रभु प्रत्ये निर्गुण प्रेम भाव नुं अने प्रभु नी समग्र लीलाओनुं दैवी जीवो केवीरीते स्मरण करी शकत, समग्र दैवी जीवो प्रभु स्वरुप अनंत छे ते पण केवीरीते जाणी शकत अने आ भूललमां अलौकिक रसिक भगवदियो प्रभुना गुण समुहने केवीरीते गाई शकत ? (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६)

****

"श्रीवल्लभभावाष्टकम्"

''

'हे वागीश महाप्रभु ! जो आ भूतल पर आपनुं प्राकट्य न थयुं होत तो श्रीकृष्णचंद्र प्रभुए कहेला गीताजी अने पुराण श्रीमद्भागवत नो अर्थ समझीने नियम पूर्वक दैवी जीवो पाठ केवी रीते करी शकत, एना अर्थ ने, एटले श्री सुबोधिनीजी ना भावने पण धैर्य युक्त थई केवी रीते पोताना ह्रदयमां धारण करी शकत, अने दयाळु

श्रीगोपीजनवल्लभ श्रीकृष्णचंद्र ने 'फल रुप' समझी केवी रीते तेमनी सेवा करी शकत ?' (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७)

****

"श्रीवल्लभभावाष्टकम्"

""

'हे श्री वागीश महाप्रभु ! भूतल पर आपनुं प्राकट्य जो न थयुं होत तो अन्याश्रय त्यागपूर्वक अनन्य भक्ति रुपी स्वधर्म नुं केवीरीते पालन करी शकत, आसुरी जीवोनी बाण जेवी वाणी नी कठोरताने केवीरीते सहन करी शकत, अने आ कलियुग मां साधन-बल वगर पोताना 'सहज दोष' एटले जन्म थी थता दोष, 'देशोत्थ दोष', अर्थात् म्लेच्छ देशमां रहेवा थी थता दोष, 'कालोत्थ दोष', एटले अशुभ मुहूर्तादिथी या अवस्था थी थता दोष, 'संयोग दोष', अर्थात् धर्मभ्रष्ट पतितादिक ना संसर्गथी थता दोष, तेमज 'स्पर्श दोष', शास्त्रो मां अस्पृश्य गणावेल वस्तु तथा प्राणीओना स्पर्श थी उद्भवता दोषो नुं निवारण केवी रीते संभव थइ शकत ? (७).

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८)

****

"श्रीवल्लभभावाष्टकम्"

""

'हे श्रीवागीश महाप्रभु! भूतल पर आपनुं प्राकट्य न थयुं होत तो कोईना थी न जिताय तेवा अर्थात् दुःख थी जिताय तेवा असुरोने अने असुरोने अनुसरनार एटले आसुरीभाववाळा जीवोने केवीरीते जीती शकात, अने आ निःसाधन निर्गुण पुष्टि भक्तिमार्ग ना उत्कृष्ट फलरुप महामंत्रनो उपदेश कोण आपी शकत, अने अत्यंत भावपूर्वक निरंतर प्रभुने शरणे शी रीते जई शकात ?

आथीज 'हे श्रीवागीश प्रभु ! भूतल पर आपना प्राकट्य नी दैवीजीवोद्धारार्थ जरुर हती. (८).

* श्रीवल्लभभावाष्टकम् संपुर्णम् *

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९)

****

"श्रीवैश्वानराष्टकम्"

''

'कलियुग मां दैन्यरहित अर्थात् निःसाधन मनुष्योनो सारी रीते उद्धार करवा, एटले तेओने चोराशी लाख योनिमांथी निर्मुक्त करी भगवद् लीला मध्यपात रुपी फल प्राप्त करावववाने माटे दयायुक्त थई, पृथ्वी मां भगवद् अवतार तरीके जेओ प्रकट थया अने अत्यंत आनंदजनक पोतानो निर्गुण भक्तिमार्ग प्रकट कर्यो ते भगवन्मुखावतार वैश्वानर मारा मस्तक पर बिराजो'. (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०)

****

"श्रीवैश्वानराष्टकम्"

''

'निजानंद मां डूबेला अने निरंतर श्रीहरि मां जेमनी चित् वृत्ति नो निरोध थयेलो छे तेवा, जगतमां भगवदासक्ति राखी जगतनो उद्धार करवा वाळा, कृपाना समुद्र रुप पारकाना ह्रदयना शोकने दूर करनार एवा भगवन्मुखावतार वैश्वानर प्रभु मारा मस्तक पर बिराजो (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११)

****

"श्रीवैश्वानराष्टकम्"

''

'महामाया रुप शक्ति ना मोहथी मनना दोषसमुहने सारी रीते शांत करनारा अने प्रगट मार्गना द्वेष मां जोडायेला मायावादी मनुष्योना श्रीकृष्ण स्वरुपे प्रतीत थईने वेद-वचनोथी जेमणे मुख बंध कर्या छे तेवा भगवन्मुखावतार वैश्वानर प्रभु मारा मस्तक पर बिराजो.' (३)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२)

****

"श्रीवैश्वानराष्टकम्"

''

'प्रसिद्ध एवा १. सहज दोष,. २. देशोत्थ दोष,. ३. कालेत्च दोष, ४. संयेगज दोष,. ५. स्पर्शज दोष,. ए पांच प्रकार ना दोष -स्वधर्मथी रहित थया. छे तेवा सर्वे मनुष्योने जेमणे ब्रह्मसंबंध.

द्वारा एमना ए सर्व दोषो निवृत्त करी प्रभु ना चरणार्विंद नी सेवा मां परायण. कर्या ते भगवन्मुखावतार वैश्वानर प्रभु मारा मस्तक पर बिराजो'. (४). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३)

****

"श्रीवैश्वानराष्टकम्"

''

'श्रीहरि नी भक्ति अने पूजन वगेरे विधिओमां जेओए विशेष करीने भेद करेलो छे, अर्थात् पूजन मां विधिनुं प्राधान्य छे अने भक्ति मां स्नेह नुं प्राधान्य छे एम बतावी स्वमार्गीय एटले भगवद् भक्ति करनाराओने अन्य कर्म -ग्यान वगेरे मर्यादामार्गीयोना फलथी सारी रीते अधिक अने वैराग्यादिक सिवाय परमलीलामध्यपातरुपी एक फलने आपनार एवा ए भगवन्मुखावतार वैश्वानर प्रभु मारा मस्तक पर बिराजो . (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१४)

****

"श्रीवैश्वानराष्टकम्"

''

'पोताना भक्त जनोने आपनुं स्मरण रहे एटला माटे अने तीर्थो नुं माहात्म्य प्रसिद्ध थवा माटे तेमज जगतमां समग्र दैवी जीवोने शरणे लई अन्य जीवो थी जुदा करवा जेओए पोताना चरणकमलो थी पृथ्वी परिक्रमा करी ते भगवन्मुखावतार वैश्वानर प्रभु मारा मस्तक पर बिराजो'. (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१५)

****

"श्रीवैश्वानराष्टकम्"

''

''भावात्मक श्रीहरिने, एमना समग्र विहारोने तेमज मनुष्य पशु पक्षी सहित समस्त लीला सामग्रीने पण जेओ कृपा मात्र थी अहीं प्रकट करे छे तेवा, द्रष्टि पडवाथी करुणामय एवा ए भगवन्मुखावतार वैश्वानर प्रभु मारा मस्तक पर बिराजो'. (७). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१६)

****

"श्रीवैश्वानराष्टकम्"

'जेनो अन्य जीवो थी पुत्र धन शरीर वगेरे मां जे द्रढ आसक्ति हती ते आसक्ति नो, अग्नि जेम मोटा रु ना ढगला नो नाश करे छे तेम, नाश करीने पोताना सानिध्य थी ज श्रीकृष्ण मां व्यसन पण सिद्ध करावे छे, ते भगवन्मुखावतार वैश्वानर प्रभु मारा मस्तक पर बिराजो'. (८)

आ रीते श्रीमद् वल्लभाचार्यजीना चरणार्विंद ना दास श्रीहरिरायजी रचित आ अष्टकनो जे प्रेमपूर्वक पाठ करे छे तेने भगवन्मुखावतार वैश्वानर प्रभु ना चरणार्विंद मां समग्र फलरुप अने तेनाथी अधिक फल प्राप्त थाय छे.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१७)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य निरुपणम्"

(आ स्तोत्रमां श्रीहरिरायजीए श्रीमहाप्रभुजी ना चरित्र ने भागवत मां वर्णित भगवान ना २४ अवतारो साथे अद्भूत रीते सरखाव्यु छे)

'जेवी रीते श्रीमद् वराह भगवाने दाढथी पृथ्वी नो उद्धार कर्यो अने गायो ब्राह्मणो अने देवोने दुःख देनार हिरण्याक्षने मार्यो तेवी रीते श्रीवागीश (श्रीवल्लभाचार्यजी) महाप्रभुए भक्तिनो द्वेष करनार, भय आपनार दुष्टोना समुदाय ने हणीने नाश पामेली भक्ति नो उद्धार कर्यो, जेथी आ श्री वल्लभाधीश्वर "रोषदृक्पातसंप्लुष्ट भक्त द्विड्" अर्थात् "रोषदृष्टिना निक्षेप थी नाश कर्या छे, भक्तना द्वेषीओ जेमणे", एवा नामथी पृथ्वी मां प्रसिद्ध थया'. (१, २,३) (आ प्रकारे वराह अवतार नुं साम्य बताव्यु छे) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१८)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

'जेवी रीते शुद्ध मार्गना प्रवृत्त करनारा, ब्रह्मचर्य व्रतने प्रकाश करनारा, ब्रह्माजीना पुत्रो सनंदन, सनक, सनातन अने सनत्कुमारो थया, तेवी रीते आ श्रीवागीश महाप्रभु पण अन्य स्त्रीओना संग ने त्याग करनारा थया, एटला

माटे एमना नाम "सुपूरितः", "रहप्रिय", "पतिव्रतापतिः" अर्थात् 'परम पूर्ण एवा', 'एकांत प्रिय एवा' , अथवा 'एकांतिक भक्तोमां प्रीतिवाळा' अने 'प्रतिव्रताओ ना पति एटले उद्धारक एवा', अथवा 'प तिव्रता एटले अनन्य भक्ति करनाराओनुं रक्षण करनारा एवा छे', तेथी ए सनकादिक तुल्य थया, अने तेथी श्रीमहाप्रभुना ब्रह्मचर्यत्वनी सारी रीते सिद्धि थयेली छे'. (५-६-७). (आ प्रकारे सनकादिक अवतार नुं साम्य बताव्यु छे). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१९)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

''

'जेवी रीते श्रीमान प्रभु नारदजीए पंचरात्रनी रचना करी छे के जेमां स्पष्ट रीते सेवा प्रकार वर्णित करेलो छे, तेवी रीते श्रीमहाप्रभुजीए पण "भक्ति माटे आचारनो उपदेश करनारा", अने "कर्ममार्ग ने प्रवृत्त करनारा" होवाथी "जेमणे पुष्टिमार्ग रुपी आचार-यग्य प्रवृत्त करेलो छे", तेथी आ श्री महाप्रभुजी "भक्त्याचारोपदेष्टा", "कर्ममार्ग प्रवर्तकः" "यग्यकर्ता", "यग्यभोक्ता" ए प्रकारे नामोथी प्रसिद्ध थया'. (७-८-९).

(ए प्रकारे नारदजी ना अवतार नुं साम्य बताव्यु छे). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२०)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

''

'जेम श्रीनारायणदेव गंधमार्दन पर्वतमां निवास करतां कामदेव नी सेनाने सत्वर जीतीने समर्थ बनी एकांतमां रहे छे, तेवी रीते आ करुणासागर श्रीमहाप्रभुजी पण दुष्ट ईन्द्रियसमुहने जीतीने श्रीकृष्ण भगवान ने प्रिय एवा व्रजमां निवास करे छे, जेथी आ श्रीमहाप्रभुजी "व्रज़प्रियः" अर्थात् "जेमने ''व्रज प्रिय छे" एवा नामे कहेवाया छे'. (१० -११). ए प्रकारे आपनुं 'नारायण अवतार साथे साम्य बताव्यु छे). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२१)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

""

'जेवी रीते श्री कपिलदेवजी ए सांख्य नुं निरुपण करीने दुष्ट मनवाळा जीवोनुं अग्यान दूर कर्युं अने देवहूतिनुं प्रिय कर्यु, तेवी रीते आ समग्र दैवी जीवोद्धारक श्रीमहाप्रभुजी पण ब्रह्मसूत्र उपर "अणुभाष्य" नी रचना करीने पोताना भक्तिमार्ग ने अनुसरनार ना जीवोना अग्यान-समुह ने दूर करी सर्वत्र विजयी थया अने श्री इलम्मागारुजीनुं प्रिय कर्यु, एटला माटे एमनुं नाम "सूत्रभाष्यप्रवर्तकः", "सूत्रभाष्यप्रवर्तकः प्रवृत्त करनारा" एवुं कहेवायुं'. (१२-१३ -१४). (ए प्रकारे श्री कपिलदेवजी नु साम्य बताव्यु) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

""

'जेवी रीते श्रीदत्तात्रयजीए आन्वीक्षिकी विद्या प्रह्लादजी वगेरे ने वर्णित करीने अनेक प्रकार ना उपदेश नो प्रचार करी सत्पुरुषोना मतने दृढ कर्यो, तेवी रीते आ श्रीवागीश महाप्रभुए पण सत्पुरुषोना मतने आश्रय करी "भक्ति माटे आचार नो उपदेश करवा सारु नाना प्रकारे वाक्यनुं निरुपण कर्युं" अने आ भक्ति ना प्रचारार्थे ज श्रीमहाप्रभुजीए ज "श्रीकृष्णहार्दविद्", श्रीकृष्ण ना हार्द ने जाणनारा कहेवाया'. (१५-१६-१७). (ए प्रकारे श्री दत्तात्रय अवतार नुं साम्य बताव्यु छे) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२३)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

""

'जेवी रीते गुणसमुह ना सागररुप यग्यावतार प्रभु ए याम वगेरे बार पुत्रो साथे मळी ने स्वायंभूवमन्वंतरनुं रक्षण कर्यु, तेवीरीते श्रीवल्लभाधीश्वर प्रभु ए पोताना श्रीगोपीनाथजी अने श्रीविठ्ठलनाथजी ए बे पुत्रो तथा श्रीविठ्ठलनाथजी ना सात पुत्र रुप पौत्रो एम ए बधाए साथे मळी ने सर्वे आसुरी जीवोने अलग पाडी सारस्वत कल्पना दैवी जीवोनुं रक्षण कर्युं'. (१८-१९) (ए प्रकारे यग्यावतार - साम्य दर्शाव्यु छे) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

'जेवीरीते, प्रकट जणाती नथी अंतरनी बुद्धि जेमनी, तेवा निर्मळ श्रीरुषभदेवजी, पोताना पुत्रो ना निमित्ते मोहसागरमां डूबता पुरुषोने ग्यानआपनार थया, तेवीरीते आ श्रीमहाप्रभुजी, जेमनी लीला कोई जाणी शकतुं नथी, तेथी "अग्यातलीलाः" ए नामे, अने "पोताना वंशमां स्थापित कर्यु छे समग्र माहात्म्य", एटले पोताना वंशमां समग्र माहात्म्य स्थापितकरवाथी "स्थापिताशेषस्वमाहात्म्यः " ए नामे भूतळमां प्रसिद्ध थया थया'. (२०-२१). (ए प्रकारे श्रीरुषभदेवजी अवतार साम्य प्रकाशित थयुं.)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२५)

****

''श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

'जेवी रीते मोटा राजाओए सेवायेला पापरहित श्री पृथुराजा ए सर्वे जीवोना उपकारार्थे गायनुं रुप धारण करनार पृथ्वीनुं दोहन कर्युं, तेवी रीते महालक्ष्मीपति श्रीमहाप्रभुजीए शुद्धाद्वैत मतनुं स्थापन करवा अने पुष्टिभक्तिमार्ग नो प्रचार करवा सामवेदोद्भव रुगवेदनी श्रुतिओ रुपी धेनुओनुं दोहन करी अने भक्तो नी ईच्छा पूर्ण करी, जेथी "भक्तेच्छापूरकः" अने लीलामृतरुप रस ना समुहथी समग्र देहधारीओने स्निग्ध करवाथी लीलामृतरसौधारद्री कृताखिलशरीरभृत्" ए नामे कहेवाया'. (२२-२३-२४). (ए प्रकारे श्रीपृथुअवतार -साम्य निरुपण थयुं)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

'जेवी रीते श्रीमत्स्यावतार प्रभुए एक सत्यवान भक्त नुं प्रलयकाळना जळथी रक्षण करी मनुष्योने मत्स्यपुराणनुं श्रवण कराव्यु, तेवीरीते महालक्ष्मी पति महाप्रभु श्रीवल्लभाधीश्वरे पण सुबोधिनीजी नुं श्रवण करावीने संसार-भयना समुद्रंथी अर्थात् जन्म-मरण ना दुःख थी घणा भक्तो नुं रक्षण कर्यु.' (२५-२६). (ए प्रकारे 'मत्स्यावतार'-साम्य-निरुपॉण कर्युं).

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२७)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

""

'देवो-दैत्यो मळी समुद्रमंथन करतां अमृत उत्पन्न न थयुं अने अमृत प्राप्त न थतां केवळ मंथन करवा रुप कर्म थी ज्यारे देवो अने दैत्यो क्लेश पामवा लाग्या त्यारे प्रभुए साक्षात् श्रीकूर्म (कच्छप) स्वरुप धारण करी एक लाख योजन विस्तारवाळी पीठ उपर सुवर्ण मय मंदराचल पर्वतने धारण कर्यो. तेवीज रीते संसार समुहमां मोक्ष रुप अमृत ने माटे दैवी तथा आसूरी क्लेश पामता जीवोने वाक्पति श्रीमहाप्रभुजीए ग्यान रुप सर्व ना मुख अने पुच्छ ग्रहण करीने ए समये डूबता वेदरुप मंदराचल नो उद्‌धार कर्यो अने दुष्टोए करेला अत्यंत पराक्रमी पाखंड मार्ग रुप विष नुं त्यारपछी पत्रावलंबन रुपी शिवरुप धारण करीने हर्षपूर्वक पान करी गया'. (२७-३१) (ए प्रकारे श्रीकूर्मावतार-साम्य दर्शाव्यु)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८)

****

श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

""

'जेवी रीते श्रीधन्वंतरिजी ना स्मरण करवा मात्र थी दुःख नो तथा रोगादिनो नाश थाय छे, तेवी रीते श्रीमहाप्रभुजी सत्पुरुषोने पण तेमना स्मरण करवा मात्र थी जन्म-मरण रुप दुःख नो नाश करी भगवद् प्राप्ति करावनार होवाथी, "स्मृतिमात्रार्तिनाशनः" कहेवाय छे.' (३२). (ए प्रकारे श्रीधन्वंतरि -साम्य प्रदर्शित कर्युं छे). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

""

'जेवी रीते श्रीमहाविष्णु श्रीमोहिनी स्वरुपे अद्‌भूत स्त्रीरुप धारण करीने नेत्रोना कटाक्ष द्‌वारा दैत्यो ने मोह पमाडी, तेमनी पासे गयेला निर्मल अमृतनुं पात्र लई वारंवार देवोने आप्युं, अने दैत्योने न ज अाप्यु तेम श्रीवल्लभाधिश्वरे पण, नष्टप्राय थयेला वेदनो उद्‌धार करी गुणना

समुद्र अने भक्तवत्सल श्रीमहाप्रभुजीए विरुद्धधर्माश्रय स्वरुप थी अासुरी जीवोने मोह पमाडी, निजभक्तो माटे वेद रुप पर्वतथी संसारसमुद्रनुं मंथन करी, पुष्टिरुप अमृत काढी ने दैवी जीवोने पान कराव्यु, अने आसुरी जीवोने न आप्युं. पूर्वे नित्यलीलामां अने बीजा अवतारमां श्रीवाक्पति श्रीवल्लभाचार्यजी थया.' (३३ थी ३८). (ए प्रकारे श्रीमोहिनी अवतार - साम्य दर्शाव्यु) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

""

'त्यारपछी समग्र जगत ना दुःख रुपी समुद्रनुं निवारण करनार भगवान नृसिंहे जेवी रीते स्तंभ मां थी प्रकट थइने हिरण्यकशिपुनुं नखथी विदारण करीने स्वकिय भक्त प्रहल्लाद नुं रक्षण कर्युं', तेवी रीते भगवान श्रीवल्लभाधिश्वरे पण चंपारण्य मां अग्नि थी प्रकट थइने समग्र जगत ने दुःख आपनार जीवोना अग्यान रुप मोटा दैत्यनुं, सद्वाक्यना प्रचार रुप नखोथी विदारण करीने प्रहल्लाद रुप वैष्णव -समुह नुं रक्षण कर्युं', एटला हेतुथी ज "उग्र प्रताप", महान प्रतापवाळा एवा नामथी प्रसिद्ध थया'. (३९) (ए प्रकारे श्रीृसिंहावतार -साम्य प्रकट कर्युं.). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

""

'जेवीरीते समग्र देवसमुहे स्तुति करी एवा महान गुणसमुह थी व्याप्त कश्यपपुत्र भगवान वामनजीए भिक्षुरुप धारण करी बलिराजा नुं सर्वस्व लईने पछी विराट रुप धारण करी बलिराजा नी पूजा थी तेना पर कृपा करीने अंतर्ध्यान थया, तेम श्रीलक्षमणभट्टजीना पुत्र भगवान श्रीवल्लभाधिश्वरे शुद्ध भिक्षुकनुं रुप धारण करीने महा अभिमानी पंडितोना समुहने जीतीने, आचार्य पदवी मेळवी ने, विद्यानगरना राजा पर कृपा करीने, तेमने निरुत्तर करेला पंडितो पर विजय मेळवी ने "शुद्धाद्वैत ब्रह्मवाद" रुप पुष्टिमार्ग रुपी सूर्यनो उदय करीने, अने पोताना मामानो गर्व उतारीने, कनकाभिषेक थी प्राप्त करेली सत्कीर्तिना प्रकार थी वृद्धि पामीने पृथ्वी परिक्रमा करी'. (४०). (ए प्रकारे वामनामतार -साम्य दर्शाव्यु). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

''

'जेवी रीते रेणुकाना आनंद नी वृद्धि करनार परशुरामे ब्रह्मद्रोह करनारा घणा क्षत्रियोनो तीक्ष्ण परशु द्वारा नाश कर्यो हतो तेवी रीते श्रौत-द्रोही स्मार्त आसुरी जीवोने वाक्पति श्रीमहाप्रभुजीए "पत्रावलंबन" ग्रंथ द्वारा जीतीने निरुत्तर कर्या.' (४१ -४२). (ए प्रकारे श्रीपरशुरामावतार -साम्य दर्शाव्यु). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

''

'जेवीरीते महादयावान श्रीमान् सत्यवतीपुत्र वेद-व्यासजीए मळथी घेरायेला, दुष्ट बुद्धि वाळा, मंदभाग्यवाळा दुष्ट जीवोने जोईने पाखंड रुप अंधकार थी व्याप्त जीवनसमुहनुं अग्यान नाश करवामां सूर्य समान श्रीमद्भागवत प्रकट करीने तेमनो उद्धार कर्यो, तेवीरीते श्रीमहाप्रभुजीए पण पाखंडमार्ग रुप समुद्रमां डूबेला जीवोने जोईने, तेमने शरण अने आत्मनिवेदन ना 'मंत्रोपदेश' थी अंगीकार करी, पुष्टिमार्गनो उपदेश आपी ने भयरहित कर्या, अने पोताना पुत्रो अने तेमना पुत्रो वगेरे अर्थात् स्ववंश द्वारा भयरहित करे छे अने करशे'. (४३ थी ४६) (ए प्रकारे श्रीवेद-व्यासावतार -साम्य निरुपण कर्युं). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

''

'जेवीरीते अयोध्याना अधिपति भगवान श्रीरामचंद्रजी समुद्र पर सेतु बांधीने पोतानी सेनाने पार लई गया अने जल्दीथी लराक्षसोने जीत्या, तेवी रीते ईलम्माकुमार श्रीवल्लभाचार्यजीए पण श्रीमद् भागवत रुपी समुद्र उपर सुबोधिनी रुप सेतु बांधीने दैवी जीवोने तार्या अने वैष्णवो नो द्वेष करनारा आसुरी जीव समुहने जीत्या, ए हेतुथी ज "श्रीभागवत पीयुष समुद्र मथन क्षमः" अर्थात् "श्रीभागवत रुपी अमृत ना समुद्रनुं मंथन करवामां समर्थ" एवा नामे प्रसिद्ध थया. (४७-४८-४९) (ए प्रकारे श्रीरामावतार - साम्य दर्शाव्यु). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

''

'जेवीरीते समग्र जगतने ईच्छित संपादन करनार षड-ऐश्वर्य संपन्न श्रीनंदराजऱकुमार श्रीकृष्णचंद्र प्रभुए पोताना सहोदर श्रीरेवतीरमण श्रीबलभद्रजी साथे पूर्ण चंद्रतुल्य सारस्वत कल्पमां प्रगट थईने दुष्ट समुह रुपी पृथ्वीना भारने उतार्यो अने श्रीहस्ते मारवाथी मोक्ष कर्यो, ते प्रकारे आ पुरुषोत्तम भगवाने पण नारायण दीक्षित वगेरेना सोमयाग ना फल रुपे एवा श्रीलक्ष्मण भट्टजीना अंगथी प्रकट थयेला श्रीमहाप्रभुजीए कलियुग मां प्रकट थईने श्रीगोपीनाथजी अने श्रीविठ्ठलनाथजी बन्ने पुत्रो साथे अष्टाक्षर अने गद्यमंत्र नुं दान करीने कोई अपराध वशात् बुद्धि नाश थवाथी ए ज हेतुथी गोलोकथी च्युत थयेला जीवोनो उद्धार कर्यो'. (५०) (ए प्रकारे श्रीकृष्णावतार -साम्य-निरुपण कर्युं)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

''

'हळने धारण करनार, निजानंद रुपी समुद्रमां डूबेला, श्रीकृष्ण ना सुख माटे प्रयत्नशील जेमनो आत्मा छे तेवा' रोहिणीजीना आनंदने वधारनार अने 'निज क्रीडा करववाळाओने ईच्छित दान करनारा, रेवतीजीना पति श्रीबलदेवजी 'जेवीरीते पुष्टिमार्ग स्थित सत्पुरुषोए निरंतर व्रजेश श्रीकृष्णचंद्रनी माफक सेववा लायक छे, तेवीरीते श्रीवागीश महाप्रभु पण "आनंदः", आनंद रुप, "परमानंदः", परमानंद रुप, "पूर्णानंदः", पूर्ण आनंद स्वरुप, "जगद्गुरुः", जगतना पुज्य एवा, "स्वानंदतुंदिलः", पोताना स्वरुपे करीने आनंदवाळा, "ईलम्मानंदवर्धनः", ईलम्माजीना आनंद ने वधारनार, "अदेयदानदक्षः", न आपी शकाय तेवा दान आपवामां समर्थ, "श्रीअक्काप्राणवल्लभः", श्रीअक्काजीना प्राणप्रिय, "भक्तेच्छापूरकः", भक्त नी ईच्छा पूर्ण करनार, "श्रीकृष्णभक्तिकृत्", श्रीकृष्णनी भक्ति करनार, अने "निखिलेष्टदः", समग्र ईच्छित वस्तु ने आपनारा, ए प्रकारे ते ते सत्पुरुष ने रक्षण करवावाळा नामो वडे त्रणेय लोकमां श्रीकृष्ण ना कृपापात्र तरीके प्रसिद्ध थया'. (५१ थी ५५). (ए प्रकारे श्रीहलधरावतार -साम्य -निरुपण कर्युं) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

'भगवान बुद्धे 'जेवीरीते देवो नुं कार्य करवा माटे ब्राह्मणो अने वैदिकोनी निंदा करीने जगत थी विपरित कर्म नुं आचरण करता सर्वे दैत्योने मोह पमाडना लाग्या, तेवी रीते श्रीकृष्ण मुखार्विंद रुप श्रीमहाप्रभुजीए पण "प्राकृानुकृतिव्याजमोहितासुरमानुषः", प्राकृत मनुष्य ने अनुसरवा ना मिष थी आसुरी जीवोने मोह पमाडनार, ए नाम प्रमाणे वैष्णवो ने विपरित कर्म देखाडता अने अत्यंत गूढ हृदयपणाने देखाडता संन्यसाश्रम नो अंगीकार करीने आसुरी जीवोने मोह उत्पन्न करनारी लीला नुं आचरण कर्युं'. (५६). (ए प्रकारे बुदधावतार -साम्य दर्शाव्यु). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

"जेवी रीते हयग्रीव भगवान नाश पामेला वेदो नो उद्धार करनारा हता, तेवी रीते श्रीमहाप्रभुजीए पण नाश पामेला वेद प्रतिपादित शुद्धाद्वैत निर्गुण भक्ति मार्ग ने प्रदर्शित कर्यो छे. (५७) (ए प्रकारे हयग्रीवावतार -साम्य दर्शाव्यु छे). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

'जेवी रीते पूर्वे ब्रह्माजीना मोटा पुत्रो सनकादिकोने, ब्रह्नाजीने अनुग्रह करवावाळा, श्रीहंस भगवान पृथ्वी मां ग्यान आपनार थया, तेवी रीते श्रीरामचंद्रजी ने संतोष पमाडनार श्रीमहाप्रभुजी पण हनुमान सरखा महान भक्तोने ग्यान आपनार थया'. (५८ - ५९). (ए प्रकारे हंसावतार -साम्य निरुपण कर्युं) . (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

'जेवीरीते कलियुगना अंतमां कल्कि भगवान चारे तरफथी जीवोना अग्यान नो नाश करनारा अने जीवोनुं कल्याण करनारा थशे, ते प्रकारे समर्थ एवा श्रीमान् वैश्वानर पण कलियुग थी नष्टप्राय दुर्बळ बनेला निर्मळ पुष्टिभक्तिमार्ग नो फरीथी प्रकाश करशे. भगवान सर्वकालमां पुष्टिमार्ग नुं तो रक्षण करे छे अने दुर्लभ जेमना चरणकमल छे, तेवा सत्ययुगने भोगवनार समर्थ भगवान सर्व समयमां भूत भविष्य अने वर्तमान, चारे युगोमां पण पुत्रपौत्र वगेरे स्ववंश द्‌वारा पुष्टिमार्ग नुं अवश्य रक्षण करशे ज'. (६० थी ६३). (ए प्रकारे कल्कि-अवतार -साम्य दर्शाव्यु) . (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

''

'ए प्रकारे सत्पुरुष श्रीमान् लक्षणनंदन श्रीमहाप्रभुजी सर्व अवातारोनां अत्यंत गुणकर्म एवम् पराक्रमोने धारण कर छे. एटला माटे त्रैलोकमां सर्व वैष्णवो द्‌वारा तेओ पंडितेश्वर श्रीकृष्णरुप श्रीपुर्णपुरुषोत्तम कहेवाया छे, अने एटला ज माटे पापथी भय पामता वैष्णवोए ज तैलंगकुल-तिलक रुप श्रीमहाप्रभुजी नुं ज स्मरण अने ध्यान करवुं जोईए.' (६४ थी ६६). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२)

****

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्"

''

'आ "सर्वावतार-साम्य निरुपण" नो पृथ्वी मां पाठ करवाथी अथवा सांभळवा थी पुरुषोने नक्की श्रीनंदकुमार श्रीकृष्णचंद्र अने श्रीमहाप्रभुजी नुं अभेदपणुं सिद्‌ध थाय छे. श्रीहरिरायजी कहे छे के आ बालस्भावथी मारुं कहेलुं स्ववंश उपर प्रेम राखनार श्रीवल्लभाचार्यजी नामना प्रभु सर्व प्रकारे क्षमा करजो, जे आनंद ना भंडार रुप श्रीहरि, श्रीवल्लभाचार्यजी नो अने निःसाधन एवो मारो पोतानो जाणी अंगीकार करे छे, ते श्रीकृष्णचंद्र मारो आश्रय हो.' (६७ थी ६९).

"श्रीमदाचार्य सकलावतार साम्य रुप निरुपणम्" स्तोत्र सपुंर्ण.

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३)

****

"श्रीनिजाचार्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""

पुष्टिजीवनुं गंतव्य छे -'भगवान श्रीकृष्ण'. परंतु त्यां पहोंचवा नुं माध्यम छे - श्रीमदाचार्यचरण महाप्रभु श्रीवल्लभाधीश नी शरणागति. आवो, तेमनुं शरण स्वीकारीए !

"श्रीगोपीजनवल्लभ प्रभु श्रीकृष्णचंद्रमांना भावने लीधे विरह मां थतो जे संताप, तद्रुप एवा जे अग्निस्वरुप श्रीवल्लभाचार्यजी भक्ति रुपी अमृतना सागरने प्रकट करतां प्रादुर्भाव पाम्या, ते श्रीमहाप्रभुजी मारी गति थाओ". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४४)

****

"श्रीनिजाचार्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""

"भगवान ना संबंध थी बीजुं जे कोई लौकिक फल, तेनी साथे जेने क्यांय पण संबंध नथी, वळी जे रहस्य अने रहस्यना मनननने भक्तना ह्रदयमां उतारवाने जे शक्तिमान छे, अने हंमेशा लीलाना आश्रय रुप प्रभुमां लीन थयेला जे भक्तो छे, तेओने जे नित्य ताप-क्लेश होय छे, ते ताप-क्लेश जेओने छे, तेवा श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय हंमेशा छे". (२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४५)

****

"श्रीनिजाचार्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""

"वियोग अने संयोग एवा उभय रस ना खास अनुभव नी सिद्धि माटे जेमणे नित्य देह धारण कर्यो छे, अने ए देहथी सिद्ध करी शकाय तेवा जे सर्वोत्तम पुष्टिमार्ग ने प्रकट करवामां बीजा कोई पण कारण विना, कारण खातर ज 'कारण' रुपे रहेला श्रीमहाप्रभुजी मारी गति छे". (३). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६)

****

"श्रीनिजाचार्याष्टकम्"

""

"निःसाधन एवा जे पोताना जन छे, तेओने आ मार्गमां उत्पन्न थता संशय ने केवळ पोताना मुखार्विंदना स्मरण मात्रथी ज जेमणे दूर कर्या छे तेवा अने नित्य दयामय लाल नेत्रो वडे पोतानुं हृदय जेमणे जणाव्यु छे तेवा श्रीमहाप्रभुजी मारो हंमेशा आश्रय छे". (४). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७)

****

"श्रीनिजाचार्याष्टकम्"

""

"श्रीगोकुलेशना चरणकमलनी सेवामां खास दोषो जोनाराओना पण दोषोने बाळी नांखनारा अने अशुद्धि ने लईने जेओने खोटो भ्रम पोताना मनमां उत्पन्न थयो छे तेवाओने पण शुद्ध करनारा श्रीवल्लभाचार्यजी मारा स्वामी (मने प्रिय) थाओ". (५). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८)

****

"श्रीनिजाचार्याष्टकम्"

""

"प्रभु साथे ना संबंध ने लईने उत्पन्न धयेल अति अलौकिक जे भाव, अने तेना तरफ जेमना आदरवाळा अंतःकरण छे, तेवा निजभक्तोनी आगळ अलौकिक सुंदर आदर्श रुप अने सर्वात्मभाव खातर ज जेमणे पोतानुं शरीर धारण कर्युं छे, तेवा श्रीगुसांईजी ना पिता श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय छे. (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९)

****

"श्रीनिजाचार्याष्टकम्"

""

"अमारा स्वामी, अमारुं अने बीजा नुं जे रक्षण करे छे ते बाबत मां अमारी बुद्धि ने दोरनारा, अत्यंत करुणायुक्त ह्रदयवाळा, निजजनो जेओने बहु वहाला छे तेवा, अने मारा चित्त मां विलास करतां, पोताना नाम रुपी सुंदर सामवेदनी ऋचाओ तेओ नुं जे गान करे छे, ते जेमने प्रिय छे तेवा श्रीमहाप्रभुजी पोताना प्रियजन एवा मारा उपर करुणा करो" (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०)

****

"श्रीनिजाचार्याष्टकम्"

""

"खास कृपा करी ए श्रीमहाप्रभुजी पोताना चरणकमल रुपी फल नुं दान सदाने माटे मने करे तो 'निज भक्तो' ए करेलां पापोना समुहने दूर करनारा श्रीहरि भगवद् भाव मां प्रतिबंध करनारी वस्तुओने चोक्कस दूर करे". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदासोक्तं श्रीनिजाचार्याष्चकम् संपुर्णम्'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५१)

****

"श्रीवल्लभ पंचाक्षर स्तोत्रम्"

""

आपणे 'श्रीनिजाचार्याष्टम् स्तोत्रम्' द्वारा श्री महाप्रभुजीनी शरणागति स्वीकारी परंतु आपणे तेमने निवेदन करीए के 'हे श्रीवल्लभ हुं आपनो छुं".

तदर्थ -

'हे श्रीगोपीजन वल्लभ प्रभु श्रीकृष्णचंद्रना मुखार्विंद रुप , वियोगाग्नि रुप, 'हे कृपा करनारा अने अलौकिक 'निज आनंदवाळा श्रीवल्लभाचार्यजी हुं आपनो छुं'. (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२)

****

"श्रीवल्लभ पंचाक्षर स्तोत्रम्"

""

तदर्थ -

श्रीकृष्ण चंद्रनी अधरसुधा ना नाम थी भरपुर तेवा 'निज अंगो थी ववि‍ंटळायेला अने श्रीमद् भागवत ना तत्त्व ना महा सागर रुप 'हे श्रीवल्लभाचार्यजी ! हुं आपनो छुं.' (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३)

****

"श्रीवल्लभ पंचाक्षर स्तोत्रम्"

""

तदर्थ -

''भावात्मक जे प्रभु छे, तेमनी आर्तिभाव (ताप-क्लेश) थी जे सेवा ने बतावनारा अने भावने कारणे ज जेमना चरणकमल वहाला लागे छे, तेवा 'हे श्रीवल्लभाचार्यजी ! हुं आपनो छुं". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी).

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४)

****

"श्रीवल्लभ पंचाक्षर स्तोत्रम्"

""

तदर्थ -

"करुणायुक्त नेत्रो ना अंतभागथी दृष्टि करतां ज पापोनो नाश करनारा अने निःसाधन जनोना स्वामी है श्रीवल्लभाचार्यजी ! हुं आपनो छुं". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५५)

****

"श्रीवल्लभ पंचाक्षर स्तोत्रम्"

""

तदर्थ -

"'हे मधुर मुख वाळा ! 'हे मधुर नेत्रो ना अंतभागवाळा ! 'हे मधुर अधरवाळा अने मधुर स्वरुप वाळा श्रीवल्लभाचार्यजी ! हुं आपनो छुं". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६)

****

"श्रीवल्लभ पंचाक्षर स्तोत्रम्"

""

तदर्थ -

"मात्र दीनता थी संतोष पामेला, दीनता ना मार्गनो बोध करनारा अने दीनता थी पूर्ण हृदयवाळा हे श्रीवल्लभाचार्यजी ! हुं आपनो छुं". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५७)

****

"श्रीवल्लभ पंचाक्षर स्तोत्रम्"

""

तदर्थ -

"जे भक्तो ने आपे आपना कर्या छे, तेवा भक्तो ना अनेक अपराधोनो नाश करवाने माटे शक्तिवाळा अने एवा भक्तो नां योगक्षेम वहावनारा हे श्रीवल्लभाचार्यजी ! हुं आपनो छुं. (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८)

****

"श्रीवल्लभ पंचाक्षर स्तोत्रम्"

""

तदर्थ -

"न आपी शकाय तेवा दान ने माटे संपुर्ण भावे हरिदासो मात्र द्वारा जेमनां चरणकमलनी सेवा करवामां आवी छे तेवा हे श्रीवल्लभाचार्यजी ! हुं आपनो छुं". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदासोक्तं श्रीवल्लभ पंचाक्षर स्तोत्रं संपुर्णम्'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५९)

****

"श्रीवल्लभ शरणाष्टकम्"

""

"निःसाधन जनोनो उद्धार करवा माटे प्रभुए प्रकट करेला 'वस्तुतः गोपीश' श्रीवल्लभ - श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय छे". (१). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०)

****

"श्रीवल्लभ शरणाष्टकम्"

""

"निज भक्तोने भजनना आनंद नुं दान करवा माटे रसात्मक पोषण-अनुग्रह-मार्ग नो प्रकाश करनार, करुणाथी वरी शकाय तेवा श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय छे". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिरायजी मुक्तक" (६१)

****

"श्रीवल्लभ शरणाष्टकम्"

""

"श्रीस्वामिनीजी ना भावथी युक्त एवा भगवद् भाव थी भावयुक्त, अति अलौकिक स्वरुप वाळा श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय छे. (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६२)

****

"श्रीवल्लभ शरणाष्टकम्"

""

"श्री सदानंद प्रभु ना मुखार्विंद रुपे आनंदरुप, मूर्तिमान वियोगरुप अग्नि, भक्तिमार्ग रुपी कमलने प्रफुल्लित करवामां भानु-सूर्य रुप श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय छे" (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी).

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३)

****

"श्रीवल्लभ शरणाष्टकम्"

""

"रासलीला ना रसभार थी सर्व देहधारीओने सारी रीते रसबस करनार, भावात्मक सर्व अंग वाळा श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय छे." (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४)

****

"श्रीवल्लभ शरणाष्टकम्"

""

"श्रीभागवत ना गूढ भावार्थने प्रकट करवा माटे पृथ्वी पर जेमने अवतार लेवराव्यो छे तेवा अने स्वामी श्रीकृष्णचंद्र ना संतोषना कारण रुप श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय छे". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५)

****

"श्रीवल्लभ शरणाष्टकम्"

""

"गोपांगनाओना वल्लभ श्रीकृष्णचंद्रना अंतःकरण मां रहेल लीला नो अनुभव जेने वहालो छे अने तेथी अन्य वातो जे स्फुरवा पण देता नथी तेवा श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय छे". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६)

****

"श्रीवल्लभ शरणाष्टकम्"

""

"पोताना चरणकमलों थी पृथ्वी ने विभूषित करनार, सदा श्रीगिरिराजजी मां बिराजमान श्रीमहाप्रभुजी मारो आश्रय छे". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

****

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६७)

****

"दैन्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""""

सुविदित छे के श्रीहरिराय महाप्रभु एटले 'दैन्यभाव' नुं मूर्त स्वरुप !

"'हे श्रीमहाप्रभु ! श्रीवृंदावन नी रजथी युक्त, श्रीयमुनाजी ना जलनी माटीवाळुं आपनुं चरणतल मारा मस्तक उपर क्यारे पधरावशो ?" (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६८)

****

"दैन्याष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''''''

'सर्व विदित छे के श्रीहरिराय महाप्रभु "दैन्यभाव" नुं मूर्त स्वरुप छे'

"'हे महाप्रभु ! प्रेम सहित भीना ह्रदयमां सर्वदा (सेवकोए) विचारेलुं आपनुं चरणतल मारा मस्तक उपर आप क्यारे पधरावशो ?" (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९)

****

"दैन्याष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''''

'सुविदित छे के श्रीहरिराय महाप्रभु दैन्यभाव नुं मूर्त स्वरुप छे'

"'हे श्रीवल्लभ ! पोताना प्रक्षालन ना जलरुपी अमृत थी आश्रितोने सारी रीते जीवनदान करनार आपना चरणतल मारा मस्तक उपर आप क्यारे पधरावशो ?" (३). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७०)

****

"दैन्याष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''

'सुविदित छे के श्रीहरिराय महाप्रभु दैन्यभाव नुं मूर्त स्वरुप छे'

"'हे श्रीवल्लभ ! पुण्य ना गंज ने करनार सेवको ए प्राप्त करेला अने सर्वदा सेवेला आपना चरणतल ने मारा मस्तक उपर आप क्यारे पधरावशो ?" (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७१)

****

"दैन्याष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''''''

'सुविदित छे के श्रीहरिराय महाप्रभु दैन्यभाव नुं मूर्त स्वरुप छे'

"'हे श्रीवल्लभाधीश ! भक्ति सहत धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष आ पांच पुरुषार्थ रुपी आंगळीयोथी युक्त आपना चरणतल मारा मस्तक उपर आप क्यारे पधरावशो ?" (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७२)

****

"दैन्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""

'सुविदित छे के श्रीहरिराय महाप्रभु दैन्यभाव नुं मूर्त स्वरुप छे'

"'हे श्रीवल्लभाधीश ! पोतानी भक्ति रुपी राग- लाल- रंगना समुह थी हंमेशां स्थितिना -निवास ना स्थलने रंजन करनारुं आपनुं पदतल मारा मस्तक उपर आप क्यारे पधरावशो ?" (६). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (७३)

****

दैन्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""

'सुविदित छे के श्रीहरिराय महाप्रभु दैन्यभाव नुं मूर्त स्वरुप छे'

"'हे श्रीमद्वल्लभ प्रभो ! नख - चंद्र ना प्रकाश थी पोतानी मेळे पोतानाओनो प्रकाश करनारा आपना चरणतल ने मारा मस्तक उपर आप क्यारे पधरावशो?" (७) (डो जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७४)

****

"दैन्याष्टकम्"

"""""""""""""""""""""""

'सुविदित छे के श्रीहरिराय महाप्रभु दैन्यभाव नुं मूर्त स्वरुप छे'

"'हे श्रीमद्वल्लभ प्रभो ! पुष्टिमार्ग रुपी कल्पवृक्ष नुं स्वरुप मूलनी माफक जे पृथ्वी उपर प्राप्त थयुं छे तेवुं आपनुं पदतल मारा मस्तक उपर आप क्यारे पधरावशो ?". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

संपुर्ण

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७५)

****

"श्रीकृष्णशरणाष्टकम्"

""

"दरेक जातना साधन विनानो, चारे बाजुथी पराधीन, पापथी भरपूर अने दीन एवो जे हुं, तेनुं शरण 'श्रीकष्ण' छे". (१)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७६)

****

"श्रीकृष्णशरणाष्टकम्"

""

"खास करीने संसार ना सुख मेणववा तरफ मुख करी बेठेलो अने प्रभु सिवाय अन्य तरफ वळेलो बहिर्मुख एवो जे हुं, तेनुं शरण 'श्रीकष्ण' छे". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७७)

****

"श्रीकृष्णशरणाष्टकम्"

""

"हंमेशा विषय नी ज ईच्छा करतो, दरेक रीते देहना आनंद मां रच्यो रच्यो रहेतो अने दुष्ट स्वभाव ने लीधे वांको थयेलो एवो जे हुं, तेनुं शरण श्रीकृष्ण छे" (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७८)

****

"श्रीकृष्णशरणाष्टकम्"

''

"संसार रुपी सर्पथी करडवामां आवेलो, धर्मभ्रष्ट, दुष्ट बुद्धिवाळो अने लौकिक पदार्थो नी प्राप्ति ना कष्टवाळो एवो जे हुं, तेनुं शरण श्रीकृष्ण छे". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७९)

****

"श्रीकृष्णशरणाष्टकम्"

''

"जे पोतानो धर्म भूली गयो छे, कर्म मां जेनुं चित्त मोह पामेलुं छे, अने पोताना स्वरुपनुं जेने ग्यान नथी तेवो जे हुं, तेनुं शरण श्रीकृष्ण छे". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८०)

****

"श्रीकृष्णशरणाष्टकम्"

''

"संसार रुपी सागर मां डूबी गयेलो, जेनो भाव भांगी पड्यो छे तेवो, दुष्ट कार्य वाळो अने दुष्ट भाव मां लागेला मनवाळो एवो जे हुं, तेनुं शरण श्रीकृष्ण छे". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८१)

****

"श्रीकृष्णशरणाष्टकम्"

''

"खास करीने विवेक धीरज भक्ति वगेरे जेमां जराये नथी तेवो अने विरोधी कार्योमां आसक्ति वाळो एवो जे हुं, तेनुं शरण श्रीकृष्ण छे. (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

. "हरिराय मुक्तक" (८२)

****

"श्रीकृष्णशरणाष्टकम्"

''

"विषयो थी जेनो देह घेराई गयेलो छे, अने विमुख थई जवाथी जेनी सद्बुद्धि हराई गई छे अने इन्द्रिय रुपी घोडाओए जेने जकड्यो छे, तेवो जे हुं तेनुं शरण श्रीकृष्ण छे". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८३)

****

"श्रीकृष्णशरणाष्टकम्"

"आ श्रीकृष्णशरणाष्टकम् ना पाठथी अने एमां कहेला अर्थ नो विचार करवा थी आपणा आचार्य श्रीवल्लभाचार्यजी ना चरणकमल नो सेवक दीनता प्राप्त करे". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदासोक्तं श्रीकृष्णशरणाष्टकम् संपुर्णम्'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८४)

****

"श्रीकृष्ण शरणाष्टकम् (द्वितीय)"

"श्रीस्वामिनीजी विषयक चिंताने लीधे थयेला चित्तमांना खेदने लई जेमनुं मुखकमल खिन्न थयेलुं छे अने जेमनां नेत्रकमल नीचां ढली रह्या छे, ते श्रीकृष्णचंद्रजी मारुं शरण छे". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८५)

****

"श्रीकृष्ण शरणाष्टकम् (द्वितीय)"

"मनोभावयुक्त, मनथी रतिनी भावना करता अने स्वामिनीजीने मलवाने माटे व्याकुल चित्तवाला ए श्रीकृष्णचंद्रजी मारू शरण छे". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८६)

****

"श्रीकृष्ण शरणाष्टकम् (द्वितीय)"

""

"निसासाने लीधे सुकाई जता मुखकमलवाला, मधुर अधरवाला अने मुरलीना नाद मां मची रहेला एवा ए श्रीकृष्णचंद्रजी मारुं शरण छे". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८७)

****

"श्रीकृष्ण शरणाष्टकम् (द्वितीय)"

""

"निकुंज मंदिरना अंदरना भागमां रहेला पुष्पो अने कुंपलो नी शैय्या करी छे, तेवा अने स्वामिनीजीनी प्राप्तिनी राह जोता ए श्रीकृष्णचंद्रजी मारुं शरण छे." (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८८)

****

"श्रीकृष्ण शरणाष्टकम् (द्वितीय)"

""

"वियोगनो भाव करीने हसता मुखकमलने लीधे सुंदर देखाता अने भ्रभरोनो गणगणाट सांभलतां ए श्रीकृष्णचंद्रजी मारुं शरण छे". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (८९)

****

"श्रीकृष्ण शरणाष्टकम् (द्वितीय)"

""

"आंखोमांथी आंसु सारता, लोटी पड़ता, कोई वार गांडानी माफक गान करतां अने नाच करतां अने रसमां आसक्त चित्तवाला ए श्रीकृष्ण चंद्रजी मारुं शरण छे". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९०)

****

"श्रीकृष्ण शरणाष्टकम् (द्वितीय)"

""

"शय्या मां एकला ज सूतेला अने जाग्या पछी स्वप्न मां थयेलो श्रीस्वामिनीजीनो संबंध सिद्ध थाय ए उद्देशे जेमने संताप थयो छे तेवा श्रीकृष्णचंद्रजी मारुं शरण छे". (७). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९१)

****

"श्रीकृष्ण शरणाष्टकम् (द्वितीय)"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"रसरुप, रस नी रीतिना जाणकार, रसात्मक लीलाओमां तत्पर, अने रसात्मा एवां गोपीजनोमां रसवृत्तिवाला ए श्रीकृष्णचंद्रजी मारुं शरण छे". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"ईति श्रीहरिदासोक्तं श्रीकृष्ण शरणाष्टकम् संपूर्णम्"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९२)

****

"पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"हुं अत्यंत दुष्ट छुं, दयारहित छुं, अन्य प्रकारना धर्मना कार्यथी जाहेर थयेलो छुं, दुर्जनना संग मां आसक्त छुं अने हलकोय छुं, आम छतां 'हे कृष्ण हुं तमारो छुं', बीजानो नथी". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९३)

****

"पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"हुं लोभमां रच्योपच्यो रहेनारो छुं, अभिमानवालो छुं, बीजाना बुराने माटे काम करनारो छुं, क्रोधपरायण छुं, अने अविवेकथी हणााई गयेलो छुं, आम छतां पण 'हे कृष्ण ! हुं तमारो छुं', बीजानो नथी". (२).
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९४)

****

"पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम्"

""

"हुं कामी छुं, जेनो आश्रय छूटी गयो होय तेवो छुं, पारकाना आश्रये जवानी ईच्छाए चंचल थई गयेलो छुं, अने विषय संबंधी पदार्थों तरफना आदरवालो छुं, छतां पण 'हे कृष्ण ! हूं तमारो छुं', बीजानो नथी". (३). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९५)

****

"पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम्"

""

"उत्तम एवा धैर्य विनानो छुं, मारुं पेट भरवानी प्रवृत्तिमां पडेलो छुं, अने जेणे मत्सर मोह अने मद नो स्वीकार कर्यो छे तेवो छुं, छतां पण 'हे कृष्ण ! हूं तमारो छुं, बीजानो नथी". (४). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९६)

****

"पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम्"

""

"भक्तिमार्ग तरफ आदत मात्र कर्या छतां पण नकामी भक्तिमार्ग थी विरुद्ध कृतिमां पड्यो-पाथर्यो रहुं छुं, अने आपना चरणार्विंदमां आवी पडेलो छुं, 'हे कृष्ण ! हुं तमारो छुं', बीजा नो नथी". (५). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९७)

****

"पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम्"

""

"संसार संतति, घर अने स्त्रि मां रच्यो-पच्यो पड्यो छुं, धन मेलववा खोटा खेद ने सही रहेलो छुं, आने गांडपण भरेला मानस वालो छुं, छतां पण 'हे कृष्ण ! हुं तमारो छुं', बीजा नो नथी". (६). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९८)

****

"पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम्"

""

"आप श्रीकृष्ण ना मार्ग सिवायना बीजा मार्गमां प्रेमवालो छुं, मारी स्थिति (ओलख) नी विस्मृति वालों छुं, अने दुर्जनोना दूष्ट वचनोमां आदर वालों छुं, छतां 'हे कृष्ण ! हुं तमारो छुं', बीजा नो नथी. (७). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (९९)

****

"पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम्"

""

श्रीहरिरायजी आज्ञा करे छे -

"श्रीवल्लभाचार्यजी ना वंश मां जन्म लेवाथी ए प्रकारना बलवालो छुं, मारा प्रभुना चरणकमलना बलवालो छुं, अने लोकिक -वैदिक वादोथी (धर्मोथी) दूष्ट छुं, (अने आपणे ?), छतां पण, 'हे कृष्ण ! हुं तमारो छुं, बीजा नो नथी". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१००)

****

"पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम्"

""

अंतमां श्रीहरिरायजी आज्ञा करे छे -

"आ 'पंचाक्षर-महामंत्र गर्भित' स्तोत्र नो पाठ करवाथी श्रीमद् वल्लभाधिश्वर श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीना सेवकोने 'भगवदीयपणु' अवश्य प्राप्त थशे". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्री हरिदासोक्तं पंचाक्षर मंत्र गर्भ स्तोत्रम् समाप्तम्'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०१)

****

"स्मरणाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""

"जेमना सौभाग्यने लईने सत्पति श्रीकृष्णचंद्रजीना 'तमे घेर जाओ' एवा प्रकारना अयोग्य वचनोने गोकुलना उदार चरित्रवाला

गोपांगनाओए कबुल नहोतां कर्या, ते श्रीकृष्णचंद्रजीना चरणकमलनुं, सेवाना समयमां हुं स्मरण करूं छुं". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०२)

****

"स्मरणाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""

श्रीकृष्णचंद्रजीना स्वरुपसौंदर्यथी जेओना हृदय पराधीन थई गया छे, तेवी हरणीओना टोला ओए नजीकमां रहेला काडियारोना भयनो त्याग करीने जेमनो आनंदपूर्वक सत्कार क्यों ते श्रीकृष्णचंद्रजीना चरणकमल नुं सेवाना समयमां स्मरण करुं छुं". (२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०३)

****

"स्मरणाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""

"जे प्रभुना वेणुनाद नुं श्रवण करतां ज जेमनामां भावनो अंकुर उत्पन्न थयो छे, अने पछी जेमना भावमां वृद्धि थई तेवी देवांगनाओना टोलेटोला पोताना स्वामीओ सहित मोह पाम्या तेवा श्रीकृष्णचंद्रजीना चरणकमलनुं सेवाना समयमां हुं स्मरण करूं छुं". (३). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०४)

****

"स्मरणाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""

"प्रभुना पाद संचारथी जेने कामभाव उत्पन्न थयो छे तेवी आ विचित्र व्रजभूमि जेनी गोदमां रही शांति नथी लेवा देती तेवा श्रीकृष्ण चंद्रजीना चरणकमलनुं सेवाना समय मां हुं स्मरण करूं छुं". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०५)

****

"स्मरणाष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''''''

"प्रभु नी बाल लीला मां करेला चोरीना कर्म थी जेने संतोष उत्पन्न थयो छे, तेवी व्रजांगनाओ समय मलतां, जे बाल-स्वरुप प्रभूने ठपको आपे छे, तेवा श्रीकृष्णचंद्रजीना चरणकमलनु सेवाना समयमां हूं स्मरण करू छुं". (५). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०६)

****

"स्मरणाष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''''''

"गोपांगनाओना समुहने जोवा लायक छे, 'लीला' जेनी तेवा, अने वाछरडाना पुंछडाने खेंचनारा जे प्रभुनुं आनंदपूर्वक दर्शन करतां ज गोपांगनाओए घरनां बधां काम छोडी दीधा तेवा श्रीकृष्णचंद्रजीना चरणकमलनुं सेवाना समय मां स्मरण करू छुं". (६). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०७)

****

"स्मरणाष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''''''

"जे प्रभुना स्पर्श मात्रथी उत्पन्न धयेला भावनी रसालता ना समुह रुपे जेनो देह थयो छे तेवा गोवर्धन पर्वतने मेघवृष्टिनी असर न थई, ते श्रीकृष्णचंद्रजीना चरणकमलनुं हुं स्मरण करू छुं". (७) ((डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०८)

****

"स्मरणाष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''''''

"विषयना सुखसमुह नो जेनाथी विनाश थयो छे तेवा जे प्रभुना अधरपल्लव साथे संलग्न थयेलो वेणुनाद गायोए सांभल्यो अने परमानंदने प्राप्त कर्यो, तेवा प्रभु विशे रहेलो भाव शुं नथी करतो ? (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदासोक्तं श्रीस्मरणाष्टकम् संपूर्णम्'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१०९)

****

"दैन्याष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''

"हे श्रीकृष्ण, हे गोकुल ना पति, श्रीनंदरायजीना पुत्र, श्रीयशोदाजीना गर्भमां उत्पन्न थयेला प्रभु ! रांक एवा मारा पर कृपा करो". (१). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११०)

****

"दैन्याष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''

"हे व्रजने आनंदरुप,! हे व्रजमां रहनारा ! हे व्रजांगनाओना हृदयमां रहेनारा अने हे व्रजमां लीलाओ करनारा ! हंमेशां रांक एवा मारा पर कृपा करो". (२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१११)

****

"दैन्याष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''

"श्रीमद् भागवतजीना भावार्थमां रहेलो रस, ते रस-रुप ! रस छे आत्मा जेनो तेवा हे प्रभु ! नाम-लीला ना विलासने माटे रांक एवा मारा पर कृपा करो". (३). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११२)

****

"दैन्याष्टकम्"

''''''''''''''''''''''''''''''

"हेयशोदाजीना हृदयने आनंद आपनारा! हे यशोदाजीना आंगणामां घूंटने चालतां अने हे वांक डीया केश थी घेरखयेला मुखकमलवाला प्रभु ! रांक एवा मारा पर कृपा करो." (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११३)

****

"दैन्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""

"हे विरहनी आर्तिना व्रतमां स्थिति करेला प्रभु ! हे गुणगान सांभलवानुं पसंद करनारा अने हे मोटी दीनताए ऊपजेली कृपावाला ! रांक एवा मारा पर कृपा करो." (५). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११४)

****

"दैन्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""

"हे आपनामां अति आसक्ति वाला जनो मां आसक्ति वाला! परोक्ष रीते करता भजनथी खुश थता अने परमानंदना समुह प्रभु! रांक एवा मारा पर कृपा करो." (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११५)

****

"दैन्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""

"हे निरोधथी शुद्ध हृदयवाला, हे वहाली गोपीजनोना गीतोथी मुग्ध थयेला अने आत्यंतिक वियोग स्वरुप प्रभु ! रांक एवा मारा पर कृपा करो." (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११६)

****

"दैन्याष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""

"आपना आचार्यजी ना हृदयमां रहेली सेंकडो लीलाओथी युक्त हे प्रभु ! दरेक रीते आपने शरणे आवेला, रांक एवा मारा पर कृपा करो". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदासोक्तं दैन्याष्टकम् संपूर्णम्'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११७)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

''

"सर्वथी उत्तम एवुं श्रीमद्वल्लभाचार्य प्रभुनुं जे चरणकमल, तेनुं ध्यान धरीने मारा नाथनी समक्ष मारुं दु:ख हुं जाहेर करुं छुं." (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११८)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

''

"हे मारा प्रभु ! पहेलां मारामां दोषो होवा छतांए आपे मारा पर कृपा करी हती, तो पछी हवे दोषोनो समुह उत्पन्न थयेलो होवाथीए शुं वधु थयुं छे ?." (२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (११९)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

''

"हे कृपाना भंडार प्रभु ! आप अमारा उपर जे कृपा करो छो, तेमां कारण रुपे तो दोषो जणाय छे, केमके अति दुष्ट होवा छतां पण अजामिल ने आपे आपनो कर्यो हतो." (३). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२०)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

'',

"निर्दोष अने आनंदात्मक स्वरुप वाला प्रभु दोषयुक्त नो स्वीकार केवी रीते करे ? लौकिक मां पण स्वामीजनो सद् वस्तुनो ज स्वीकार करे छे !" (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२१)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"
""""""""""""""""""""""""""""""""

"जो दोषवाला नो स्वीकार करे तो तेथी दोषवालानो संबंध थवाथी प्रभुने दोष लागी जाय. श्रीहरिने पोताना सामर्थ्यथी स्वीकार करी दोषित जीवने पोतानो करी लेवामां 'कादवथी खरडाई गया पछी एने धोई नांखवा करतां कादवथी दूर रहेवुं उत्तम गणाय', कहेवत प्रमाणे 'दोषितनो स्वीकार करी' पोते दोषित थवुं, एना करतां एवा दोषित थी दूत ज रहेवुं हितावह गणाय, एम मानी अमारे खातर ए प्रभु पोताने दोषित करवा शा माटे तैयार थाय ?" (५ - ६) (आ श्लोक मां श्रीहरिरायजी प्रभुने कटाक्ष करे छे.) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२२)
****
"स्वप्रभु विज्ञप्ति"
""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे प्रभु ! आप अमारो स्वीकार करो ए विषयमां मारो आटलो बधो आग्रह करवामां आपना 'नारायण' ए नामने मलतां अजामिलना पुत्रना 'नारायण' नामने आपे लीधुं एज कारण हतुं". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२३)
****
"स्वप्रभु विज्ञप्ति"
""""""""""""""""""""""""""""""""

"संसारमां आसक्तिवाला अने हृदयना ठेकाणा विनाना मारामां एवा प्रकारनु य साधन क्यांथी होय के जेने लीधे करुणाना भंडार प्रभु मारा उपर कृपा करे !". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२४)
****
"स्वप्रभु विज्ञप्ति"
""""""""""""""""""""""""""""""""

"प्रथम मारो स्वीकार करीने अने कृपापूर्वक स्वयं अपना स्वरुपनो अनुभव करावीने, हवे हुं श्रीमदाचार्यचरणोने शरणे आवेल होवा छतां हे नाथ ! आप मारो शा माटे त्याग करो छो ?". (९). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२५)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

''''''''''''''''''''''''''''''''

"आपे मने आपनो क्यों छे, तेवुं चोक्कस मानतो होवा थी आप मने दंड करशो तोपण हुं तो राजी ज छुं, आम छतां काल फोगट पसार थई रह्यो छे ए विचारे, हे दयानिधान प्रभु ! मने चिंता थाय छे." (१०). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२६)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

''''''''''''''''''''''''''''''''

" हे प्रभु ! आवा प्रकारनो उत्तम अवतार पण फरी क्यांथी प्राप्त थाय, श्री आचार्यजी महाप्रभुनो आशरो पण फरी क्यां मले, आ अत्यारे मलेला साधन अने मुश्केलीथी मले तेवी सामग्री पण फरीथी क्यांथी मलवानी ? (११) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२७)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

''''''''''''''''''''''''''''''''

" हे दयालु, हे अमारा जेवा दीन प्रत्ये पण भलमनसाईवाला, हे परात्पर प्रभु ! आपनी सेवामां जेनुं चित् नथी तेवा आ 'दास' ने हंमेशा आपनी सेवामां ओतप्रोत बनी रहे तेवी कृपा करो.". (१२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी).

'इति श्री हरिदास विरचित स्वप्रभुविज्ञप्ति समाप्त:'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२८)

****

"प्रमाणिकाष्टकम"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"व्रजभूमि ना अलंकार रुप, जेणे व्रजभूमिना दोष सदाने माटे दूर कर्या छे, तेवा अने नवीन मेघ समा सुंदर श्रीगोविंद श्रीकृष्णचंद्रजीनो हूं आश्रय करुं छुं." (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१२९)

****

"प्रमाणिकाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"श्रीयशोदाजीनी कीर्तिना धारक, श्रीव्रजांगनाओना मननुं हरण करनारा, देवोना शत्रुओनुं सारी रीते निकंदन करनारा, श्रीकृष्णचंद्रजीने हुं नमन करुं छुं." (२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३०)

****

"प्रमाणिकाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"चंचल घूघरी धारण करनारा, सुवर्ण ना सुंदर झांझरवाला, व्रजभुमिमां खेलनारा अने मांखण चोरनारा प्रभु श्रीकृष्णचंद्रजीने हुं नमन करुं छुं." (३). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३१)

****

"प्रमाणिकाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"शिंगी अने छडी धारण करनारा, गोपबालकोनी साथे बालक्रीडा करता, पीतांबरधारी गोपालकृष्ण ने हुं नमन करुं छुं." (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३२)

****

"प्रमाणिकाष्टकम्"

""

"कपोल प्रदेश उपर आवी जेमना कुंडल शोभी रह्या छे, जेमना मस्तके मयुर-पिच्छवालो मुकुट शोभा आपी रह्यो छे, तेवा, तथा कुमारिकाओने रमाडनारा अने कदंबना वृक्षोमां फरनारा श्रीकृष्णचंद्रजीने हुं नमन करुं छुं." (५). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३३)

****

"प्रमाणिकाष्टकम्"

""

"मंद मध्यम अने तार एम त्रणेय प्रकारे बंसी पर सारी रीते गान करनारा, सारो तान वालो ताल देनारा, श्रीगोपांगनाओने खेलावनार अने रासमां स्थिति करनारा श्रीकृष्णचंद्रजीने हुं नमन करुं छुं" (६). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३४)

****

"प्रमाणिकाष्टकम्"

""

"श्रीयमुनाजीना कांठा उपर वटवृक्ष नीचे कुंज अने निकुंजोमां यथेच्छ स्वेच्छाओ पूरी पाडता अने गायो चरावता श्रीकृष्णचंद्रजीने हुं नमन करुं छुं". (७).
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३५)

****

"प्रमाणिकाष्टकम्"

""

"ईंद्रे जेनुं माप काढवानो प्रयत्न क्यों हतो (!) तेवा गिरिराज पर्वत मां, वनमां अने जलमां विहार करतां, अने जेमणे ब्रह्माजीनो पराभव कर्यो हतो तेवा श्रीराधिकाजी ना स्वामी श्रीकृष्णचंद्रजी ने हुं नमन करुं छुं". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३६)

****

"प्रमाणिकाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""

"आ 'प्रमाणिकाष्टकम्' नो जेओ हंमेशा ज पाठ करे छे, तेमना अहिंज 'कृष्ण सेवा' वडे बधां अशुभ नष्ट थई जाय छे". (९).

"इति श्री हरिदासोक्तं प्रमाणिष्टाकम् सम्पूर्णम्" (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३७)

****

"श्री वल्लभ चरण विज्ञप्ति"

""

* आजे ज्यारे संप्रदाय विपरित दोरमां थी गुजरी रह्यो छे ज्यां श्रीमदाचार्यचरण ना दिव्य सिद्धांतो नो उच्छेद करी सिद्धांत ना नामे अर्थवादने प्रोत्साहन आपवा मां आवी रह्युं छे, त्यारे श्रीहरिराय चरण रचित आ विज्ञप्ति ज कदाच साचों राह चींधी शके ! ! !

****

*"पोताना आचार्य श्रीमहाप्रभुजीना बंने चरणकमल सर्व सुख आपनारा छे तेनुं मारा मस्तक उपर हुं वहन करुं छुं, जेथी मारुं बधुं नक्की सफल ज छे." * (१). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३८)

****

"श्री वल्लभ चरण विज्ञप्ति"

""

"यवनोथी उत्पन्न थयेल भयथी दीन मां दीन एवो हुं दुःखी थाउं छुं. हे पीडितोनी पीडानो नाश करनार प्रभु ! ए दुःखथी अमोने मुक्त करो . (२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१३९)

****

"श्री वल्लभ चरण विज्ञप्ति"

""

"खेद थी हृदयने जेणे भेदी नांख्युं छे, जेमां सुखनो भेद रह्यो ज नथी, पोतानाओनो भेद पण जेणे रहेवा दीधो नथी तेवा समयमां हे प्रभो ! आप ज अमारी गति रुप छो." (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१४०)

****

"श्री वल्लभ चरण विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे करुणासागर ! हे गोकुलेश्वर ! अमारी गति माछलाओ नां समान थई गई छे के स्थिरता पण करी शकाती नथी के जई पण शकातु नथी." (४). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१४१)

****

"श्री वल्लभ चरण विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे नाथ ! धैर्यादि सहित होवाथी पोतानाओ नां भयथी प्राप्त थतुं दुःख सही शकातुं नथी. हे प्रभु ! आप ए दुःख दूर करो.". (५). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१४२)

****

"श्री वल्लभ चरण विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"हेनाथ! आपना स्मरण रुपी उपाय सर्व पापने दूर करनारुं छे. परंतु पोतानाओना भयना कारणे आ स्मरण पण बराबर थई शकतुं नथी, माटे हे प्रभो ! मारी अहीं शी गति ?". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदासोक्तं श्रीवल्लभचरणविज्ञप्ति संपुर्णम्'

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१४३)

****

"श्रीयमुना विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""

"प्रभुमां ह्रदयवाला, प्रभु पोताना ह्रदयमां बिराजे एवी ईच्छावाला, प्रभुमां अत्यंत प्रीतिवाला, श्रीस्वामीनीजीने वहाला,अने प्रभुना स्थायीभावरतिमांथी उद्‌भवेला श्रीयमुनाजीने हुं नमन करुं छुं". (३)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१४४)

****

"श्रीयमुना विज्ञप्ति"

""

"प्रभु ने मलवाना स्थानरुप, प्रभुना सुखनी इच्छावाला, प्रभुना गोपीजनोना सहचरी, अने प्रभुना मानने वधारनारा श्रीयमुनाजीने हुं नमन करुं छुं." (४).   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१४५)

****

"श्रीयमुना विज्ञप्ति"

""

"प्रभुनुं सर्वकार्य करवामां परायण, प्रभुनी लीला माटेना स्थलने शुद्ध करनारां, प्रभुनी क्रीडाना कुंकुम-केशर आदि युक्त, अने प्रभु संबंधी रस माटे आतुर एवां श्रीयमुनाजीने हुं नमन करुं छुं." (५).   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१४६)

****

"श्रीयमुना विज्ञप्ति"

""

"प्रभुना गोपीजनोनां पूज्यदेवी, प्रभु संबंधी व्रतनुं फल आपनारा, प्रभुनी लीला माटे भूतल पर प धारेला अने प्रभुरुपी महासागरने प्राप्त थयेला श्रीयमुनाजीने हुं नमन करुं छुं". (६).   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१४७)

****

"श्रीयमुना विज्ञप्ति"

""

"श्रीकृष्णचंद्रजीना चरणनो स्पर्श करवानी ईच्छावाला, प्रभुना चित्तना आश्रयवाला, प्रभुमां आसक्ति वाला, प्रभुना भक्त अने प्रभुमां प्रीति थाय एवुं करनारा श्रीयमुनाजीने हुं नमन करुं छुं". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१४८)

****

"श्रीयमुना विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"प्रभुना चरणकमलनी पुष्कल रजवाला, प्रभुना भक्तो तरफ सहानुभूति वाला, अने प्रभुविषयक भावथी विरुद्ध एवी स्वभक्तोनी प्रकृतिनो नाश करनारा श्रीयमुनाजीने हुं न मन करुं छुं.". (८). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१४९)

****

"श्रीयमुना विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

आ श्रीयमुनाविज्ञप्ति ना अंतमां श्रीहरिराय महाप्रभु कहे छे "श्रीकृष्णना चतुर्थप्रिया श्रीयमुनाजीने हुं नमन करुं छुं. श्रीमदाचार्यचरणकमलना दास एवा आ हरिदासने श्रीयमुनाजी प्रभु-संबंधी भाव अर्पो !" (९)

"इति श्री हरिदासोक्तम् श्रीयमुनाविज्ञप्तिः समाप्ता"

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१५०)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम्"

""

"हृदयमां :प्रिय श्रीकृष्णचंद्रजी ना स्वरुपनी ज भावना करतां, संतोषथी प्रफुल्ल मुख अने लोचन वाला अने लीलामां आरोपित चित्तवाला आप श्रीसवामिनीजीनो हुं क्यारे चरण-रज सेवक थाऊं ? (१)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१५१)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम्"

""

"आंबाना पांदडामां अने कमलना पांदडामां कस्तुरी वडे एकांते प्रिय श्रीकृष्णचंद्रजीनुं स्वरुप आलेखतां अने प्रियना विरह थी व्याकुल थवाथी आंसु आवी गया छे तेवा नेत्रवालां आप श्रीस्वामिनीजीनो हुं क्यारे चरणरज-सेवक थाउं ?' (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१५२)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम्"

""

"सुंदर पुष्पोथी शय्या वगेरे तैयार करी ह्रदयथी अने आंसुवाला नेत्रोथी सर्वभावे श्रीकृष्णचंद्रजीना मार्गने निहालतां एवा आप श्रीस्वामिनीजीनो हुं क्यारे चरण रज-सेवक थाउं ?' (३). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१५३)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम्"

""

"श्रीव्रजाधीश्वर आपने वश छे, ए जाणवाने माटे अपना देहमां रहेला गुणोथी युक्त एवा अने बीजा सर्वथी अधिक एवा आप श्रीराधिकाजी नो हुं क्यारे चरण-रज सेवक थाउं ?" (४). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१५४)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम्"

""

"सखीओ वडे हंमेशां जेमनी परिचर्या करवामां आवी छे, तेवा शोभतां चरणकमलमां नखना अग्र भाग वडे भूमि खोतरतां जेमनो आत्मा केवल विप्रयोगना भावमां मग्न थयो छे तेवां आप श्रीस्वामिनीजीनो हुं क्यारे चरण रज-सेवक थाऊं ?". (६). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१५५)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""

"प्रतिक्षणे प्रभुनी प्राप्ति माटे सदैव आर्त चित्तवाला, पोताना प्राणनाथ प्रगट थाय एवा प्रकारना व्रतवाला, अने सतत प्रभुना गुणगान नुं रटण करतां आप श्रीस्वामिनीजीनो हुं क्यारे चरणरज-सेवक थाउं ?". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१५६)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम्"

""""""""""""""""""""""""""""""

"गोपीजनवल्लभ प्रभु श्रीकृष्णचंद्जी जेने स्वाधिन छे, तथा जेओ नि:साधन भक्तों उपर कृपा कराववामां कारणरुप रहेलां छे, अने जेमणे पोताना द्वार उपर मारा प्रभुने उभा राखी दीधा छे, तेवा आप श्रीस्वामिनीजीनो हुं क्यारे चरणरज-सेवक थाउं ?''. (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१५७)

****

"श्री स्वामिनी प्रार्थनाष्टकम"

""""""""""""""""""""""""""""""

"हे श्रीस्वामिनीजी ! मारू चित्त श्री मुरारी मा रमी रह्यू छे, अने आपना कृपापात्र श्रीवल्लभाचार्यजी ना चरणमा हु शरणवालो छू , ए जोइ अत्यन्त दीन, तथा खूब पराधिन तेमज हमेशा भजन विषयक सर्व दोषोथी भरपूर छु, छता पण एवा मारा पर कृपा करो अने सदा अापना हृदय मा स्थान आपो." (८)

"इति श्री हरिदासोदितं श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकं सम्पूर्ण"

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१५८)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्त"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे श्रीविट्ठालेश प्रभु ! संसारना तापथी तपेला, सर्वजनोए असाधू छे एवी रीते त्रणय प्रकारे निन्देला, उत्तम साधानो थी अतिविमुख, दु:खो नो अनुभव करनार आ दासनी, निस्साधन जीवोना अधिपति एवा आप उपेक्षा केम करो छो ?". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१५९)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे मुरारी ! आपे मारा दोष तरफ नक्की दुर्लक्ष करवु जोइए, कारणके आप निर्दोषस्वरूप तेमज स्वजनों ऊपर करुणा करवामा जीवन-जल ना निधि-समुद्र छो, हुँ भले दोषोथी दबाएल, विषय-सुखथी विभ्रांत हृदयवालो छु, छता आप समस्त जीवोना उद्धारकर्ता छो, माटे आप संपूर्ण करूणाथी मारा तरफ कृपया दृष्टि करो " (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१६०)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"समस्त देवताओए मलिने जेनो उद्धार न कर्यो ते समग्र विज्ञान थी रहित पशु एवो गजेंद्र आपना द्वारा दयाथी, पहेलाना आपना 'हरि' अवतार थी उद्धार पाम्यो छे, त्यारे मारा जेवाने आपना थी शाथी ए रीते मूक्त नथी करातो ?" (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१६१)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे वृजपति ! हे प्रभु ! ज्यां सुधी आपना चरणकमल मा भक्ति होय छे त्यां सुधी वेद विहित नित्य-नैमित्तक कर्म इत्यादि बधु जो आप निहालो तोज थाय छे, तेथी हुं चोक्कस मानु छु के नक्की फल आपने ज आधीन छे." (4) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१६२)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""

"गौर अने श्याम जेमना श्रीअंग छे, मणिमय अलंकार नी शोभा ने धारण करनार, परस्पर अत्यन्त प्रिय, श्रीवृन्दावन मा मलीने क्रीडा करता, श्याम अने सुवर्णवत पीला वस्त्रने धारण करनार, उदय पामता भाववालु जेमनु स्वरूप छे, ते मारा मालिक श्रीराधा अने श्रीकृष्णचन्द्र बन्ने ना चरणों नी सेवा करु छु". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१६३)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्ति"

""""""""""""""""""""""""

"हजारो गोपीजनोना गण थी सारी रीते आवृत्त थयेला, निरंतर पोतानी रासक्रीड़ा ना उत्पन्न थयेला भावना भावथी भरपूर, मदोन्मत्त केशरूपी भ्रमर ना समूह थी सुन्दर मुखपद्मनी शोभाने धारण करनार षड- ऐश्वर्य संपन्न आप बन्ने श्यामा अने श्याम नो हु दास थाउ." (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१६४)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्तिः"

""""""""""""""""""""""""

"सुन्दर सुन्दर मूर्तिवाला, भक्तोना भावथी इष्ट फलने पूर्ण करनारा, मुर्लीनाद करनार, जगतना समस्त वादोने अटकावनार, बहु नृत्य करनार, अनेक दासजनो ने आनंद आपनार, एवा श्रीकृष्णदेव मा फलनी तृष्णा वगर नु मारु मन थाओ." (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१६५)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्तिः"

""""""""""""""""""""""""

"नविन मेघतुल्य आकारवाला, जेमनी सेवा करवी ए सुखना समुहरुप छे, समस्त मणियोथी विभुषित, खुशबोदार चंदनथी खरड़ायेला जेमना अधार मा मुरलिका फरकी रहेल छे, स्वजनोने मोह करनार जेनो एक अधर छे, तेवा कामदेव करता सुन्दर श्रीवृजना पुरंदर-ईन्द्र एवा श्रीकृष्ण प्रभु नु सदा स्मरण करो.' (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१६६)

****

"स्वप्रभु विज्ञप्तिः"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"पोताना श्रीहस्तमा गिरीराजने धारण करनार, वृजभूमिमा विचरनार, गायो वगेरेना सुखकर्ता, स्वजनों नो शोकमाथी उद्धार करनार, असुरों ना कुलनो संहार करनार, एवा श्रीकृष्णना चरणकमल नु हुं चिंतन करु छु". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१६७)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""

"पिगलेला सुवर्ण ना जेवी अत्यन्त पितवर्णी अने घेरा मेघना जेवी अत्यन्त श्यामवर्णी छबिथी अखिल वृंदावन ने प्रकाशित करता अने सुकोमल नवीन रेशमी श्याम अने पिला वस्र धारण करता अने एकांते कुंजभवन मां बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजीनो आश्रय कर". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१६८)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""

"नवीन कुंपलोनी तैयार करेली शैय्यामा विचित्र ऐवी सूरत-युद्धनी क्रीड़ा करता , उन्मत्त अनंगना संगी, सूंदर कंकण - कटिमेखला -जांज़र ना ध्वनि थी रम्य लागतां, एकांत कुंजभवनमां बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१६९)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"अत्यन्त सुन्दर लीला थी सारी रीते चपल एवा अंगोनी शोभा थी शोभता, सुन्दर एवा ललिताजी वगेरे सखीयो मटकू मार्या विना निकुंज नी जालिओमां थी निहाळता नेत्रो द्वारा हृदयने आकर्षता अने पूर्ण सुखना महासागररूप एवा श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१७०)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"प्रतिपदे एकबीजाने अनुकूल थई रहेला, आग्रहवाला अने व्यग्रता विनाना स्वरूपवाला, तेमज अनेक भिन्न भिन्न प्रकारना सुन्दर अने अद्भुत नवीन सूरत ना विलास मा नी उत्सुकता ना गुप्त प्रकाशवाला एकांत कुंजभवन मां बिराजता श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर." (४)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१७१)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"सतत सुरतनी तृष्णा थी व्याकुल थवाना कारणे उन्मत्त बनवाना स्वभाववाला अने व्यग्रता विनाना स्वरूपवाला, विपुल रोमांचथी शोभी रहेला गौर अने श्याम उज्वल अंगवाला अने परस्पर आश्लेष थी एकदेहरूप थयेला एकांत कुंजभावनमां बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर." (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१७२)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""

"कमर सुधी लटकती वेणीवाळा, तथा मस्तके प्रकाशित मयुर्पिच्छ ना मुकुटवाला, एवा बन्ने, परस्पर ना श्रीहस्त मां एके सुन्दर कनकनी चुडियो अने बीजाए सुन्दर कनकना कडा धारण कर्या छे तेवा, तेमज शोभी रहेल लाल कान्तिवाली साडी अने रेशमी पीताम्बर अनुक्रमे धारण कर्या छे, जेनाथीं रमणीय लागतां, एकांत कुंजभवन मां बिराजतां श्रीराधाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१७३)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""

"प्रियतम प्रभु द्वारा गाढ़ आश्लेष ना कारणे दबायेला, कामातुर एवा श्रीराधिकाजी, जे प्रिय प्रभु साथे परस्पर एकात्म थवानी इच्छा धरावनारा, हार इत्यादिना नीरस आवाज थी क्षुब्ध थयेला, एकांत कुंजभवन मां बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर." (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१७४)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""

"सुन्दर अने नवलकिशोर, लास्य तेमज लावण्य ना भंडार रूप, तथा बधा रसिकजनों मां श्रेष्ठ अने मुग्ध वेश धारण करेला, अत्यन्त मधुरी मूर्तिवाला, अनुक्रमे वीजली अने मेघना जेवी कांतिवाला, एकांत कुंजभवन मां बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१७५)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""

"समग्र वेद शास्त्र पण जेमना स्वरुपने जाणी शक्या नथी, अन्योन्य गाढ आलिंगनमां लीन थयेला, कामदेवनी चेष्टावाला, सुरत ना रसने लीधे तल्लीन एवा, परस्पर

ना अंगमां जेमणे आत्मा अर्पण करी दीधो छे तेवा, एकांत कुंजभवन मां बिराजता श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१७६)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

''

"प्रिय ना श्रीहस्त द्वारा स्पर्श पामेला कोमल श्रीअंगो मां प्रदीप्त थयेला कामदेवने लीधे चपल बनेला, परस्पर आनंदित थयेला, एकांत कुंजभवनमां बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर". (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१७७)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

''

"अत्यन्त पुलकित शोभायमान भुजलत्ताओ थी परस्पर आलिंगन करतां, सामसामे जेमना मुखकमल संक्रांत थयेला छे तेवा, घुघरियो थी खनकता चरणवाला, नविन रतिरण खेलथी श्रमित थयेला, अने तंद्रायुक्त नेत्रोवाला, एकांत कुंजभवन मां बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर." (११) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१७८)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

''',''

"कामदेवना रससागर ना अद्भुत आनंदथी आवृत्त श्रीअंग अने मनवाला, विविध क्रीड़ाओथी जेमणे सखीओने आश्चर्यचकित करी दीधी छे तेवा, अने परस्पर अनेक प्रकार ना अंगस्पर्शथी पुलकित थई हास्य करतां, एकांत निकुंजमां बीराजता श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर". (१२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१७९)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""

"सुरतरस ना अपार सागरमां संपूर्ण पणे निमग्न थयेला, अलौकिक रमण मां समग्र रात्रि जाणे पलक मां बीती गई होय, तेम छता प्रत्येक क्षण अनंगकी प्यास जेमनी वधी रही होय तेवा, एकांत कुंजभवन मां बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर''. (१३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१८०)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""

"सम्पूर्णपणे चुंथाइ गयेली उत्तम वेणी, हार, माला तेमज कर्ण ना आभरण वाला, सुकोमल मधुर हास्योल्लास करतां मुखचंद्रवाला, अत्यन्त रातिरस ना मद थी चपल अने विचित्र क्रीड़ा करतां, एकांत कुंजभवन मां बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर". (१५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१८१)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

""

" अनेक कारणों थी जेमणे परस्पर -श्रीअंगोनो स्पर्श कर्यो छे तेवां, अनेक प्रकारना वार्तालाप द्वारा जेमणे परस्पर नी वाणी श्रवण करी छे तेवा, अपलक जेमणे एकबीजा ना नेत्रो निहाल्या छे तथा अधरामृत नो आस्वाद लीधो छे तेवां, एकांत कुंजभवन मा बिराजतां श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रनो आश्रय कर". (१६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (१८२)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

"","

"सूरत-रस रूपी सागरमा सतत विहार करतां, तुटेला कटिमेखला अने मुक्तमालाओ, मणिमालाओ, सुवर्ण अलंकारो नी फेलाती कान्ति थी प्रफुल्लित थतां अने एकांत कुंजभवनमां बिराजता श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर." (१७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१८३)

****

"श्रीनागरीनागर स्तोत्रम"

''

"नूतन लालित्य युक्त उंमर जेमनी छे, तथा लावण्यमय स्वरूप वाला, नवीन रस थी चलित चित्त वाला अने नविन प्रेम जेमना मा उभराई रह्यो छे तेवां, नविन आल्हादमय क्रीड़ाना कौतुक थी चपल बनेला, एकांत कुंजभवन मा बिराजता श्रीराधिकाजी अने श्रीकृष्णचंद्रजी नो आश्रय कर". (१८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१८४)

****

"भगवाच्छास्त्र निर्णयः"

''

"हे प्रभु ! विविध प्रकार नी लीला कारवा माटे आपे सर्जेलो हुं जीव छू. 'हुं देह छु' एवी मारी देहना संबंध थी बुद्धि थयेली छे. आप तो सर्व ना स्वामी, आनंदमय, साकाररूपवाला, सर्व वस्तुओने सिद्ध करनारा छो. (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१८५)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

''

"भक्तो ना रक्षणहार, अखंड लीलाना कर्ता, अज्ञानरुपी अंधकारनो नाश करनार, तत्त्वरूप, नर समान आकृतिवाला, अनंत जेमना रुप छे, जे आनंदमात्र छे, सर्व दुःख हर्ता छे, एवा आपनो हुं आश्रय करु छुं" (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१८६)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""

"हे प्रभो ! अखंड वेद स्वरुपात्मक अने व्यापक, सर्व अर्थो नु दान करनार, पोतांना मुखारविंद रूप अर्थवाला, संसार रूपी वनने बाळवा माटे धुमयोनि-अग्निस्वरूप, श्रीकृष्ण ना नामथी आत्मा ना अंधकार-आज्ञान ने हुं तरी जईश". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१८७)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""

"हे प्रभो ! गायोने चारनार, अद्‌भुत संगीत गानार, पोताना वेणुनाद थी सर्वने मोहित करनार, अनेक लीलाना रस नुं दान करनार, ए व्रजनायक ने मारा नमस्कार हो". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१८८)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""

"विचित्र ललाट धरावनार, कमल नी माला ने धारण करनार, विशाल वक्षस्थल धरावनार, वृजरमणियो ने रस नुं दान करनार, कंसादि दैत्यों ना काल, व्रज नी गायो नुं पालन करनारा, श्रीनंदराजकुंवर सिवाय अन्य कोइने हुं जाणतो नथी". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१८९)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""

"रसात्मक, अतिमनोहर आकृति धरावनार, विशाल नेत्रवाला, अल्प वय जेमनुं छे तेवां, चौर्यालीलामां चपल, एवा श्रीकृष्ण प्रभु नो हुं जन्मोजन्म दास छुं" (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९०)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""

"जेमणे मारी भोग नी तृष्णा दूर करी छे, स्वरूप दान रूपी भोग थी मने जेमणे वशीभूत करेल छे, लीलाओ माटे भक्तो ना पक्षनो स्वीकार करनार, पोताना भक्तो नी रक्षा करनार, श्रोकृष्ण प्रभुने मारा नमन हो". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९१)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""

"हे मत्स्य भगवान ! हे कूर्मावतार ! हे वराह ! हे नृसिंह ! हे वामन ! हे परशुराम ! हे रामचंद्रजी ! हे संकर्षण एवा बलराम ! हे श्रीकृष्ण ! हे बुद्ध ! हे कल्कि भगवान ! प्रभुना अवतार होवाथी आपनुं अमे स्तवन करीए छिए" (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९२)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""

"हे कृष्ण प्रभु ! हूँ दीन छुं, तेथी दयार्द्र दृष्टीथी मने आपनी सेवा माटे शास्त्रविहित बीजा धर्मो करवामां थी आप मने निवृत्त करो (शास्त्र मा बतावेला अन्य धर्मो हुं पाली न शकु तो चलावी लो). हे कृपालु ! मात्र आपनोज छुं, एवा मारा माटे बीजी कोई गति नथी. माटे मारा ऊपर आप सारी रीते प्रसन्न थाओ". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९३)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""

"वस्तुतः 'निर्गुण ब्रह्म'ने मूढ़ लोको जुदा प्रकारनु निर्गुण जाणे छे, पण 'सगुण' एटले अप्राकृत तत्त्व पोतांना आनंदादि गुणो थी परिपूर्ण छे अने 'निर्गुण' एटले प्राकृत एवा अन्य गुणो थी रहित छे" (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९४)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""

"ते प्रमाणे भगवानने बन्ने रुपे एटले के 'सगुण' तथा 'निर्गुण' रुपे निरूपित करती श्रुति नो आशय एकदम स्पष्ट होवा छतां, तेओ मात्र 'निर्गुण' छे तेवी व्याख्या करवावाळा क्लिष्ट कल्पना करता मायावादीओ मुंझाय छे. (११) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९५)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""

"सर्वभवनसामाथ्र्य वाली माया (कर्तुम-अकर्तुम-अन्यथा कर्तुम) भगवान श्रीहरि नी शक्ति ज छे. श्रीहरिने सर्वरूप थवामां एनोज उपयोग करवो पड़े छे." (१२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९६)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""

"विद्या अने अविद्या पण भगवान श्रीहरि नी शक्तिओ छे अने ते बन्ने नुं निर्माण माया शक्तिए करेलू छे. आ बन्ने शक्तिओ जगत मां कारण रूप श्रीहरि नी इच्छा थी बंध अने मोक्ष करनारी मानवामां आवे छे." (१३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९७)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"

""

"पोतानी गुणमयी मायाथी सत्य 'प्रपंच' - एटले जगत नुं सर्जन भगवान श्रीहरिए कर्यु छे. तेमां विहार माटे पोतांना अंश रूप जीवोने भगवाने पोतानी इच्छा थी सर्ज्या छे'. (१४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९८)

****

"भगवच्छास्त्र निर्णय"
""

"नित्य, देहधारी एवा ए जीवोने सदानंद प्रभुनी प्राप्ति थवी, तेनेज मुक्ति जाणवी. प्रतिमा तुल्य आ जगत-स्वरूप भगवान श्रीहरि पोतेज छे. (१५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (१९९)
****
"भगवच्छास्त्र निर्णय"
""

"भिन्न भिन्न रुपे रह्या होवा छतां भगवान द्रष्टा होवाथी आपना रसात्मकपणा मां खामी आवती नथी. जेम सिंधालुण ना कटका मां लाल- श्वेत पणु वगेरे गुणो सहज छे, तेम जाणवुं'. (१६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२००)
****
"भगवच्छास्त्र निर्णय"
""

"ते मुजब श्रीहरि ना स्वरूप मां अनेक स्वाभाविक रूपो छे, परंतु ज्यारे तेमनु प्राकट्य थाय छे त्यांरे ते ते रूपो मां आनंदाकार प्रभु भासे छे'. (१७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२०१)
****
"भगवच्छास्त्र निर्णय"
""

"प्रभुना स्वरूपो प्रतिक - मूर्तिओ मां ब्छे, एम निश्चय करी जाणवो. आम श्रुतिसिद्ध ब्रह्मवाद विद्यमान होवा छतां कुबुद्धि वाळाओ अज्ञाननो आश्रय क़रीने जुदी रीते शास्त्रो नो अर्थ करे छे. मात्र सन्मार्ग तरफ तेओ नो द्वेष होवाथी आ प्रमाणे निरुपण करे छे". (१८ - १९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२०२)
****
"भगवच्छास्त्र निर्णय"
""

"उपरोक्त भगवत शास्त्र मां वर्णवेली बाबतो ने आस्तिक पुरुषे समजवानो प्रयत्न करवो जोइए, जेनु निरुपण आ स्तोत्र मां करवामां आव्यू छे, जेनो उपसंहार करवामां आवे छे.". (२०).

इति श्रीहरिदासोदितो भगवाच्छास्त्र निर्णय:संपूर्ण:

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२०३)

****

"सिद्धान्त-संक्षेप-निरुपणम"

""

"हमेशां निजस्वामी - श्रीकृष्णचंद्रजीना सुन्दर चरणकमलोमा चित्त ने स्थापवु, मात्र भगवद्विमुख ना संगमां न जवा देवुं, अने सत्संग माटे निरन्तर चित्त ने पोषण आपवु". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२०४)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरुपणम"

""

"आत्मा आदि नु सर्वस्व समर्पण करीने सर्व रीते भगवान ने शरणे गयेला वैष्णवोए प्रभुने देहादि नो विनियोग करी सदा श्रीकृष्ण प्रभु नी सेवा करवी जोइए" (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२०५)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपंणम"

""

"हमेंशा सत्पुरुषोनो संग करवो, कदापि दुष्ट पूरुषो नो संग नही करवो जोईए. प्रभु सिवाय अन्य नो आश्रय करवामां आवे तो ए पोतांना स्वामी श्रीकृष्णचंद्रजी नी प्रसन्नता नो नाश करे छे". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२०६)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणम"

""

"जो श्रीमदाचार्यजी ना चरणकमलों मा दृढ निष्ठां राखवामा आवे, अने तेमणे निरूपित करेला विषय मां विश्वास रखाय तो फल नी सिद्धिमां संशय नथी ज". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२०७)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरुपणम"

''

"श्रीकृष्ण प्रभुजी नी सेवा करनाराओ ने प्रायः फल नी प्राप्ति थई गयेली होय छे, कारणके शरीर लौकिक होवा छतां भागवद सेवा रूपी प्रथम कक्षा नुं कार्य ए करी रहयु छे." (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२०८)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरिपणम"

''

"श्रीहरि भगवान नु सेवन करवुं, श्रीहरिने ओलखवा, निरंतर श्रीहरिनुं ध्यान करवुं, श्रीहरिनुं श्रवण करवुं, श्रीहरिनुं गान करवुं. भक्तो जो आम करतां रहे तो श्रीहरिने ज प्राप्त थाय !" (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२०९)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणम"

''

"निजाचार्य श्रीमहाप्रभुजीए प्रस्तुत - प्रवर्तित करेल मार्ग अनुसार श्रीहरि मां सदा चित्तने जोडवुं. तो एज श्रीमहाप्रभुजी पोतांना सेवको ना हृदय मा रहेल मनोरथो ने अवश्य पूर्ण करशे." (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२१०)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणम" (२)

''

"भले ते सर्व साधन थी हीन होय, पण जो पभुना नाम मात्र नुं उच्चारण सतत करतो रहे, तो ए एकलो पण भगवदीय श्रीराधाप्रिय श्रीकृष्णचंद्रजी ना महानंद ने प्राप्त करे छे". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक". (२११)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणम" (२)

""

"पांच जन्मों सुधी प्रभु ना बीजा अवतारोनी सेवा करवाथी ए सेवक ने श्री हयग्रीव भगवान मा प्रेम थाय छे. (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२१२)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणम" (२)

""

"दश जन्म सुधी ए हयग्रीव भगवान मां निश्चल मन राखी सेवा करवाथी प्रह्लाद नी रक्षा करनार श्रीनृसिंह भगवान मां प्रेम थाय छे. (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२१३)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणम" (२)

""

"हजारो जन्म पर्यन्त ए श्रीनृसिंह भगवान मां निश्चल मन राखी सेवा करवाथी ए मनुष्य नुं मन नारायण-पारायण थाय, आज फल छे". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२१४)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरुपणम" (२)

""

"करोडो जन्मों सुधी श्रीनारायणभगवान मां निश्चल मन राखे तो श्रीरामचंद्रजीमां शाश्वत भक्ति ने पामे छे. (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२१५)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरुवणम" (२)

""

"जो सीतापति श्रीरामचंद्रजीमां अनंत जन्मों सुधी लीन रहे तो एवो भक्त श्रीवृंदावन ना मध्य मां विराजमान श्रीकृष्ण भगवान नी भक्ति पामे छे (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२१६)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरुपणम" (२)

''

"कोइपण प्रकार नी चिंता करवी नहीं. प्रभु बधु करशे ज, एवो विश्वास राखवो अने सर्वदा सर्व भाव थी श्रीपुरुषोत्तम नी सेवा करवी" (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२१७)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरुपणम" (२)

''

"ज्यांसुधी भोग अने मोक्ष नी पिशाचणी तुल्य, चिंता हृदयमा वर्ते छे, त्यां सुधी भक्तिमार्ग रूपी सुखसागर मां आबादी केवी रीते थाय" ? (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२१८)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणम" (२)

''

"मारा घर मा धन नथी, कोण मने आपशे ?, केम बधु थशे ?, केवी रीते हुं श्रीकृष्ण प्रभु नी सेवा करी शकु?, आवी बधी चिंता नो त्याग करवो जोईए !". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (२१९)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (२)

''

"पांच प्रकार ना कांटा समान अवरोधो रहित मनुष्यो भक्तिमार्ग ना अधिकारी छे. अन्य देव नी साथे श्रीकृष्ण प्रभूने समान गणवा ते प्रथम 'शल्य' (अवरोध) छे". (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२०)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (२)

""

"श्रीकृष्ण प्रभुना भक्तोने अन्य देव-देवीना भक्तोनी समान गणावा, तथा श्रीकृष्ण प्रभुना व्रतमां अन्य ना व्रत तुल्य नजर राखवी ते बीजु अने त्रिजु शल्य (कांटा तुल्य अवरोध) छे. (११)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२१)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (२)

""

"श्रीकृष्ण प्रभुना तीर्थो (श्रीयमुनाजी, श्रीगिरिराजजी, श्रीगोकुल आदि) समान बीजा तीर्थो समाजवा ए चोथु शल्य (कांटा वत अवरोध) छे". (१२).   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२२)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (२)

""

"श्रीकृष्ण प्रभुना शास्त्रो (गीता , श्रीभागवतादि) साथे बीजा शास्त्रो नी तुलना करवी ए पांचमु शल्य (कांटा समान अवरोध) छे. आ पांचेय शल्यो ने काढीने सदा भक्ति परायण थवुं. भक्तिमार्ग सिवाय अन्य प्रवार्ताकोने आसुरावेशी जाणवा". (१३)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२३)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (२)

""

"(अंतःकरणप्रबोध ग्रन्थ अनुसार श्रीहरिरायजी आज्ञा करेछे) सर्व जीवसमुह समर्पण कर्या पूर्वे शुं उत्तम हतो ? (अर्थात न हतो). भगवान श्रीकृष्ण सत्यसंकल्पवाळा छे, तेथी जीवनी अन्यथा गति न ज करे !". (१४)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२४)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपण" (२)

""

"आ सदभागी जीव भक्तिपूर्वक बधु पोतानु सर्वस्व प्रभूने समर्पण करीने कृपामार्ग मा रहेल छे, माटे गुरुनी आज्ञानु पालन करी प्रभुनी सेवा करवी अने श्रीकृष्णचन्द्र प्रभुना दर्शन करवा".(१५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२५)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (२)

""

"प्रमाणमार्ग - मर्यादामार्ग थी प्रेममार्ग जुदो छे. माटेज आ बन्ने पुष्टिमार्ग अने मर्यादामार्ग अंत सुधी भिन्न ज छे, कारणके मर्यादामार्गीय जीव मोक्षमां प्रवेश करनार छे, (त्यांरे पुष्टिमार्गीय जीवने मोक्ष मीठा ना जल सामान छे) (१६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (२२६)

****

"सिद्धान्त संक्षेप नीरूपणं" (३)

""

"भगवान मां 'भक्तिभाव' रसरूप पणाथी बे प्रकार नो बतावववामां आव्यो छे, तेथी तेना बे भेद कह्या छे - मर्यादामार्गीय अने पुष्टिमार्गीय". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२७)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

""

"प्रभु पति एटलेके स्वामी अने पोते सेवक ए भाव थी सेववा ए 'मर्यादा भक्ति', अने प्रभु -पति अने पोते तेमनी प्रिया ए भावथी सेववा ते 'पुष्टिभक्ति' छे, कारणके भाव (स्नेह) ए ज भक्ति छे. आ प्रमाणे भक्तिना लक्षण नुं निरुपण करवा मां आव्यू छे." (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२८)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

""

"नारद पंचरात्र मा कह्यु छे के 'माहात्म्यज्ञान पूर्वक सुदृढ़ अने सर्वतोघिक स्नेह ते भक्ति कहेवाय छे, एनाथी मुक्ति थाय छे अन्यथा नही'. जे भेद प्राप्त थाय छे ते सोपाधिक अने नीरूपाधिकपना थी छे तेम जाणवु". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२२९)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरिपणं" (३)

""

"जेम लक्ष्मीजी तथा व्रजभक्तोए करेल भजन भावात्मक होवाथी भिन्न भिन्न प्रकारनु छे, तेम वरण ना तारतम्य थी भक्तिमार्ग मां सर्वत्र भिन्न पणु जाणवू". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२३०)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

""

"ए भक्तिरूप ज प्रभु ना बे चरण छे अने ए ज भक्ति नुं दान करनारा छे. ए चरणकमलों मां पांच पांच नख छे, कारण के त्यां पांच स्वरूप वाळो आनंद रहेलो छे". (५) (पांच आनंद नो खुलासो आगळ आवशे) (डॉ .जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२३१)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

""

"प्रभुना बन्ने चरणकमलोनुं भजन करवुं जोइए कारणके ए चरणांबुज ना नख पण चंद्र स्वरुप छे. तेमां अनुराग - प्रेमयुक्त आनंद समाहित छे, जेना कारणे नखो मां लालाश रहेली छे". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (२३२)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

'',,''''''''''''''''''''''''''''''

"प्रभुना नखचंद्र नो सदाय उदय छे एम जणाववा माटे नखो नी समानता चंद्र साथे बताववा मां आवी छे. पांच आंगळिओ भक्ति सहित पांच पुरुषार्थो धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष रुप छे. ए रीते प्रभुना चरणकमल मा सर्वे पुरूषार्थो नी आनुषांगिक सिद्धि छे एम दर्शाव्यु छे". (७ - ८)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (२३३)

****

"सिद्धसन्त संक्षेप निरूपण" (३)

''

"प्रभुनी आंगळियोनी संलग्नता एकबीजी साथे छे अने आंगळिओ नो आगलो भाग विशाल छे, ए भक्त ना आरोहण माटे जाणे वहाण ज होय एम छे". (९)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२३४)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

''

"पांच पूरुषार्थो ने ओळंग्या पछी प्रभु प्रति आरोहण करी शकाय छे. आ बाबत समझाववा माटे पांच आंगलिओ उगेली छे तेम जाणाव्यू छे ". (१०)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२३५)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

''

"प्रभुनी आंगलीयो भक्तोने आपना चरणकमल मां आरोहण करवा माटे निसरणी समान छे, तेम सदा भक्तिना आश्रयवाला गुरुदेव, जेओ प्रभुना गुणगान मां परायण छे, तेओ भक्तिमार्गना भूषण रूप प्रेमसूत्रो थी परोवायेला छे, सदा प्रसन्न छे अने महद भागवद भक्तिने समजावनार छे". (११-१२)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२३६)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

''

"प्रभुनी "नृत्यादि लीला मा प्रभुना भूषण रुप गुरु जोडाय छे, अने वियोग समये मौन रहे छे. श्रीकृष्णने अधीन रही भक्तिथी बंधायेल गुरु भक्तिमार्ग नी मर्यादाओ नु उत्तम रीते दर्शन कारावनार /समझावनार छे, तेमज प्रभु प्रत्ये गति अने ज्ञान उत्पन्न कारावनार गुरु नुं एवु स्वरूप छे". (१३ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२३७)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरुवणं (३)

""

"भक्ति मां गुरु नु अवलंबन होय छे. आवा गुणवाला गुरु होवाथी प्रभुना बे चरण मां नूपुर रूप आभूषण धारण करेला छे" (१५ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२३८)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

""

"भगवान श्रीकृष्ण नी भक्ति नुं अवलंबन (मार्गदर्शक) गुरुदेव छे, तेनुं प्रतिक (ते समझाववा माटे) प्रभुना नूपुर पर मूक हंस होय छे". (१५ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२३९)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

''''’’’’''

"प्रभु प्रत्ये भक्तो ना हृदयमा रतिभाव ना उदगम ने दर्शाववा भगवान ना कटीभाग नुं निरुपण करवा मा आव्यू छे. माधुर्यभाव थी रतिभाव उत्पन्न थाय छे ते समझाववा भगवान ना वक्षस्थलमां लक्ष्मीजी नु निरुपण करवामा आव्यु छे". (१६ १/२, १७ १/२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४०)

****

"सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं" (३)

"""

"तेथी पण उत्तम सिद्धि माटे अधरामृत नी प्राप्ति ने बाह्य अने आंतर रमण ना भेद थी परम फल रूप बतावी छे. लीलारुप रमण अने गुणगान बन्ने पोषक छे, ते सूचववा मुखारविंद नु निरुपण करवा मां आव्यु छे. ए रीते श्रीहरिनुं रूप त्रण प्रकारे (कटी, वक्षस्थल, मुखार्विन्द) भक्ति द्वारा हृदयमा धारण करवा नी आज्ञा श्रीहरिरायजी करता उपसंहार मां कहे छे के श्रीनिजाचार्यजी ना चरणकमल ना प्रसाद थी जे स्फुर्यु ते निरुपण कर्यु छे. एनाथी कुलना अधिपति श्रीनाथजी प्रसन्न थाओ" (१८ -२१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदासोदितं सिद्धान्त संक्षेप निरूपणं (१-२-३) सम्पूर्णम'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४१)

****

"स्वमार्ग सर्वस्वं"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"प्रभुना ऐश्वर्य नो विचार करवामां आवे तो तेओ कोईने आधीन न ज थाय", एवा श्रीप्रभुचरण ना वचन अने "भक्तो ने माटे दैन्य ज एक साधन छे", एवा श्रीआचार्यचरण ना वचनामृत थी "दीनता राखवी" मात्र ए ज श्रीहरिना संतोष नुं, तेमने प्रसन्न करवानु कारणरूप थाय छे'. (१ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४२)

****

"स्वमार्ग सर्वस्वं"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"दीनता नित्य प्रभुसेवन थी, सत्संग थी अने भगवद कथा श्रवण थी थाय छे. तेमज श्रीहरिनी प्राप्ति मात्र निःसाधनपणा थी थाय छे. ए कारण थी साधनो नु निष्फलपणु जणाववा माटे दीनता नी आवश्यकता बतावी छे". (२-३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४३)

****

"स्वमार्ग सर्वस्वं"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"सर्व प्रकार ना साधनो प्रभु ने प्राप्त करावी शकता नथी, ज्यारे आ रीते निश्चय थतां प्रभुने केम पामी शकाय एवी हृदयमा चिंता उत्पन्न थाय अने साधनो करवा छतां प्रभु प्रकट थया नथी तेवो विचार करवाथी भक्त ना चित्त मां दीनता उदय पामे छे. एज क्षणे कृपालु, पूर्णानंद, पोताना भक्तना दुःख ने सहन न करी शकनार प्रभु प्रकट थाय छे." (४ - ५ १/२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४४)
****
"स्वमार्ग सर्वस्व"
""""""""""""""""""""""""""""""""

"निःसाधनपणा नी सिद्धि माटे आ मार्ग मा मुख्य समर्पण - आत्मादि नुं निवेदन काराववा मा आवे छे. (तात्पर्य ए छे के पोतानी पासे कांई होय तो साधनपणा नु अभिमान आवे, पण कांई छे ज नहीं एवु भान थतां निस्साधनपणु सिद्ध थाय). तेम सर्व रीते 'हुं प्रभुनो दास छुं', जेवो भाव सिद्ध थाय त्यां साधन नो संभव रहे ज नहीं. ते माटे ज आ मार्ग मा विशेष करी 'आश्रय' पण कहेवामां आव्यो छे." (६-७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४५)
****
"स्वमार्ग सर्वस्वं"
""""""""""""""""""""""""""""""""

"ते माटेज श्रीमहाप्रभुजीए 'कृष्णाश्रय स्तोत्र' मा 'मलेच्छाक्रान्तेषु देशेषु' वगेरे पदों थी साधनो नु वारण कह्यु छे (अर्थात कलिकाल मां बधा साधनो नष्टप्रायः थई गया छे एम कह्यु छे). तेथी आवा नि:साधन जीवो ना उद्धार मां मात्र प्रभु नुं सामर्थ्य ज कारणरूप छे." (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (२४६)
****
"स्वमार्ग सर्वस्वं"
""""""""""""""""""""""""""""""""

"अतः जीव नो उद्धार करनार श्रीमदाचार्यचारण नो आश्रित भक्तियुक्त जन साधनो नी निष्फलता अने पोतानी पण असमर्थता, पोतांना दोष अने प्रभुनुं सामर्थ्य जाणीने, चातक नी माफक अन्यनी आशा छोड़ीने एक भगवान पर ज भरोसो राखीने रहे तो शरणमार्ग मा रहेलो भक्त सर्व रीते दीनता प्राप्त करे छे, परंतु फलात्मक साधन तो प्रभु आपे त्यारेज प्राप्त करी शकाय छे." (९-१०-११) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४७)
****
"स्वमार्ग सर्वस्वं"

""""""""""""""""""""""""""""""

"भाग्यवान भगवादियोए आ प्रमाणे पोतांना मार्ग नुं सर्व रहस्य जाणवुं जोइए अने ए भगवन्मार्ग मां उपयोगी पोतांना धर्मो मां स्थिरता करवी जोइए एवो अमारो निश्चय छे." (१२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदास विरचितं सवंसर्ग सर्वस्वं सम्पूर्णम'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४८)

****

"गर्वापहाराष्टकम"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे मूढ़ बुद्धिवाला ! स्थुल एवा शारीर ने, संतानोना समूह ने, स्त्रीने अने फरी थी कुमार्ग मां पड़ेला धन ने जोई ने मन थी शुं तुं संतुष्ट छे ? तारु पुण्य समाप्त थतां तारु बधु फोगाट जशे !" (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२४९)

****

"गर्वापहाराष्टकम"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे अंध ! प्रभुने भज, एमनी सेवा मा धन नो विनियोग कर, साधुजनों नी सेवा कर, विद्वान ब्राह्मणो नो आदर कर, हमेंशा दीन मनुष्यो पर दयानी नजर थी देख, आ तारी दशा काई रावण थी चड़ियाती नथी !" (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२५०)

****

"गर्वापहाराष्टक"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"धन नो संग्रह करीने, रस ने मेळवीने, लोकने पोताना कबजा मा करीने, मोहने पकड़ीं ने, अने आ देह ने फोगट पुष्ट करीने, हे मूढ़ ! साधू पूरुषो नो सत्कार तें शा माटे नथी कर्यो ?" (३)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२५१)

****

"गर्वापहाराष्टकम"
""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"भगवान श्रीकृष्ण ना भक्त - एवा भगवदिय जनो प्रत्ये तू नम्र नथी अने अति कठोर धनीको आगळ नमे छे, जेओ सदा नमेला होय छे तेवां दीन लोको प्रत्ये दया नथी, मात्र कुटुंब ना पोषण माज जेनी मति स्थिर थयेली छे, तेवां हे मानव, ज़रा बुद्धिपूर्वक विचार तो कर !' (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (२५२)
****

"गर्वापहाराष्टकम"
""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे मानव ! देह ने त्यजीने कालधर्म ने प्राप्त थनारा आ घोड़ा, हाथी, ऊंट, रथो तेमज अन्य वाहनो तारा नथी, हकीकत मा तो आ बाधा तारा अधःपतन ना साधन छे, एम समझ ." (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (२५३)
****

"गर्वपहाराष्टकं"
""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे जीव ! भगवान श्रीकृष्ण नी माया ने जाणी ने अने हृदयने माया ना प्रभाव थी दूर करी ने प्रभूने माटे ज तारु बधु लौकिक अने वैदिक कर्म तू कर". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२५४)
****

"गर्वापहाराष्टकम"
""

"हे मनुष्य ! आयुष्य चाल्यु जाय छे अने देह पण टकतो नथी तेम पुत्रादि पण शुं नथी जवाना ? समग्र सम्पत्तिओ पण मृत देह नो त्याग करी ने चाली जाय छे. आ हकीकत नो विचार करी ने , विष्योमांथी आसक्ति छोडीने, करुणासागर भगवान श्रीहरि नी श्रेष्ठ भक्ति कर .". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२५५)
****

"गर्वापहाराष्टकं"
""""""""""""""""""""""""""""""""""

"हे दुर्मति मानव ! महापुरुषो नो आश्रय करीने, संसार नी आसक्ति छोडीने, अने श्रीहरिना चरणकमल धारण करीने बेस. सम्पत्तिओ ने जोइनें तुं मन ने शा माटे चंचल करे छे ?. चपल एवी ए सम्पत्तिओ सुख आपवाने माटे समर्थ नथी." (८) . (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"इति श्री हरिदास विरचितं गर्वापहाराष्टकं सम्पूर्णम"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२५६)

****

"प्रार्थनाष्टकम"

''''''''''''''''''''''''''''''''

"हे स्वामी ! मारा अविनय ने दूर करो; आ दास ना दोष ने आप आपना ह्रदय मा न लो. हे करुणा ना भंडार ! मने आप आपनी सेवा मा तत्पर जल्दी बनावी दो". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२५७)

****

"प्रार्थनाष्टकम"

''''''''''''''''''''''''''''''''

"दुर्जनोए उत्पन्न करेला उद्वेगजनक कार्योथी हुं दरेक रीते दुःखी थई रहेल छु. अमारा प्रतिबंधों ने चारे बाजुथी हरी लेवामां अमारु शरण आप ज छो. (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२५८)

****

"प्रार्थनाष्टकम"

''''''''''''''''''''''''''''''

"हे प्रभु ! आप अमारा कया दोषो ने कारणे अमारा तरफ बेदारकार थया छो ? कोण जाणे ! दुर्जनो थी पीड़ायेला अमे आपना दासो क्यां जईशुं ?". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२५९)

****

"प्रार्थनाष्टकम"

''''''''''''''''''''''''''''''

"अमे दोषो थी भरेला होवा छतां पण, हे प्रभु ! आपे अमोने पोताना कर्या छे; आथी अमारा दोषो विशे आप आपना चित्तमा विचार करशो नही ". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६०)

****

"प्रार्थनाष्टकम"

""""""""""""""""""""""""""""""

"हे दयानिधान प्रभु ! आपना वड़े जो अमारु विघ्न दूर कारावावा मां न आवे तो दुःखी थयेला अमोने आपनुं दर्शन न थाय तो अमे केवी रीते टकी शकिए ? (५)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६१)

****

"प्रार्थनाष्टकम"

""""""""""""""""""""""""""""""

"दुष्टो ए अमारा ऊपर जुल्मो करेला होवा छतां, आपना दर्शन थी प्राप्त थयेल आनंद ना कारणे ते अमे सहन करी लीधेला, परंतु हवे (आपना दर्शन ना अभावे) दुर्बल एवा अमे दुष्टो तरफनी पीड़ा ने केवीरीते सहन करी शकीशु ?" (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६२)

****

"प्रार्थनाष्टकम"

""""""""""""""""""""""""""""""

"हे सर्वज्ञ, हे सर्व सामर्थ्य वान प्रभु ! दुष्ट जीवोए उपजावेल, आ दास ना भारे दुखने आप शा माटे निभावी लो छो ?" (७)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६३)

****

"प्रार्थनाष्टकम"

""""""""""""""""""""""""""""""

"हे नाथ, हे वृजना स्वामी ! अनन्याश्रयवाळा मनुष्यो ना आश्रय रूप हे श्रीहरि ! आपनां दर्शन थवामां जे कांई विघ्न होय तेने आप कृपया जल्दी दूर करो".   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदासोक्तं प्रार्थनाष्टकम सम्पूर्णम'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६४)

****

"श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं"

""

"नवीन आषाढ़ी मेघ ना यूथ जेवा मनोहर, खिलेला कमल ना जेवा नेत्रवाळा अने बंसी ना निनादथी जेमणे गोकुल ने आनंदित कर्यु च तेवां श्रीगोपीजनवल्लभ श्रीकृष्णचंद्रजीने नमन हो'' (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६५)

****

"श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं"

""

"मुकुट अने बाजुबन्ध थी शणगारेला, कंठमां रहेली मालामां ना मणि थी शोभा पामेला, प्रकाशता अने आमतेम हालतां सुवर्ण-कुंडलोंवाळा श्रीगोपीजनवल्लभ श्रीकृष्णचंद्रजी ने नमन हो". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (२६६)

****

"श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं"

""

"देवांगनाओ ना टोळाओ द्वारा जेमनी सेवा थई रही छे तेवा, हास्य नी कांति थी सुंदर मुखकमलवाळा, त्रणेय लोकने मोह पमाडनार सुंदर श्रीगोपीजनवल्लभः श्रीकृष्णचंद्रसजी ने नमन हो". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६७)

****

"श्रीगोपिजनवल्लभाष्टकम"

""",,""

"रत्न वगेरे ना मूल स्थानरूप महासागरनो आश्रय करी रहेला, कल्पद्रुम नी छाया मां आश्रय वाळा अने सुवर्ण जेवी प्रकाशती गोपांगनाओना मंडलना। मध्य भाग मां रहेला श्रीगोपीजनवल्ल्भ श्रीकृष्णचंद्रजी ने नमन हो" (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६८)

****

"श्रीगोपीजनवल्लभाष्टक"

""

"श्रीवत्सनी रोमावलीथी शोभा पामेला, वक्षःस्थल पर कौस्तुभ मणि थी शनगारेला अने कमल ना पराग जेवा पीताम्बरवाळा श्रीगोपीजनवल्लभ श्रीकृष्णचबद्रजीने नमन हो." (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२६९)

****

"श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकम"

""

"दिव्य वींटी वाळी आंगळीओ थी शोभा पामेला, स्वच्छ मोर- पिच्छनी शोभाथी शोभिता अने वनमाला थी शणगारेला देहवाळा श्रीगोपीजनवल्लभ श्रीकृष्णचंद्रजी ने नमन हो". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (२७०)

****

"श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं''

""

"मुनीन्द्रो ना समूहोथी स्तुति करायेला, झरता दूधवाळा गायो ना पुष्कळ घणो थी वींटळाएला अने धर्म अर्थ काम तथा मोक्ष ने सिद्ध करावनारा श्रीगोपीजनवल्लभ श्रीकृष्णचबद्रजी ने नमन हो". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (२७१)

****

"श्रीगोपीजनवल्लभाष्टकं"

""

"पापरूपी अंधकार ना समूह सामे सूर्य जेवा, भक्त चिन्तामणिनी सिद्धि कारावनारा अने समग्र दुःख रूपी रोगों ना औषध रूप श्रीगोपीजनावल्लभ श्री कृष्णचंद्रजीने नमन हो" (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिदासोदितं श्रीगोपिजनवल्लभाष्टकं समाप्तम"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२७२)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम"

""

"ह्रदय मां प्रिय श्रीकृष्णचंद्रजीना स्वरूप नी ज भावना करतां, संतोष थी प्रफुल्ल मुख अने लोचनवाळा अने लीला मां आरोपित चित्तवाळा आप श्रीस्वामिनिजीनो हुं क्यारे चरणरज - सेवक थाउ ?" (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२७३)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकं"

""

"आम्बा ना पानमां तेमज कमल नां पांदळा मां कस्तूरी वड़े एकांत मां पोताना प्रिय श्रीकृष्णचंद्रजी नुं स्वरूप आलेखतां अने प्रियतमना विरह ना कारणे ह्रदय व्याकुळ थवाथी जेमना नेत्रोमां अश्रु आवी गया छे तेवा आप श्रीस्वामिनिजीनो हुं क्यारे चरणरज - सेवक थाऊं ?" (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२७४)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकं "

""

"सुन्दर पुष्पोथी शय्या वगेरे तैयार करी ह्रदय थी अने अश्रुयुक्त नेत्रोथी सर्वभावे श्रीकृष्णचंद्रजीना मार्गने निहाळता एवा आप श्रीस्वामिनिजीनो हुं क्यारे चरणरज - सेवक थाउँ ?". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२७५)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम"

""

"श्रीव्रजाधीश्वर आपने वश छे, ए जाणवाने माटे आपना देह मां रहेला गुणो थी युक्त एवा अने बीजा सर्व थी अधिक एवां आप श्रीराधिकाजी जी नो हुं क्यारे चरणरज - सेवक थाऊँ ?" (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२७६)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम"

""

"सखीओ द्वारा हमेंशा जेमनी परिचर्या करवा मां आवी छे तेवां शोभातां चरणकमल ना नखना अग्र (अंगुष्ट) वडे पृथ्वीने खणता जेमनो आत्मा केवळ विप्रयोग ना भाव मां मग्न थयो छे तेवां आप श्रीस्वामिनिजीनो हु चरणरज - सेवक क्यारे थाऊं ?". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२७७)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम"

""

"प्रतिक्षणे प्रभुनी प्राप्ति माटे आर्त चित्तवाळा, पोताना प्राणनाथ प्रगट थाय एवा प्रकार ना व्रतवाळा अने सतत प्रभुना गुणगान नुं रटण करतां आप श्रीस्वामिनिजी नो हु क्यारे चरणरज - सेवक थाऊं ?" (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२७८)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकं"

""

"गोपीजनवल्लभ प्रभु श्रीकृष्णचंद्रजी जेने स्वाधीन छे, वळी जेओ निःसाधन भक्तो उपर कृपा करवामां कारण रुप रहेला छे, अने जेमणे पोताना द्वार पर मारा प्रभुने ऊभा राखी दीधा छे तेवां आप श्रीस्वामिनीजी नो हुं क्यारे चरणरज थाउं ?". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२७९)

****

"श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकम"

"""

"हे श्रीस्वामिनीजी ! मारुं चित्त श्रीमुरारि मां रहेलु छे अने आपना कृपापात्र श्रीवल्लभाचर्यजी ना चरण मा हुं (हरिराय) शरण वाळो छुं, तेमज अत्यन्त दीन, तथा पराधीन अने हमेशा सर्व दोषो थी भरेलो छु, छतां पण

मारा पर आपने करवा करवा अने ए कृपा ने आपना ह्रदय मा सदा स्थान आपवा विनन्ति करु छुं'' (८)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदासोदितं श्रीस्वामिनी प्रार्थनाष्टकं सम्पूर्णम'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८०)

****

"चतुःश्लोकी"

''''''''''''''''''''''''''''''''''''

"आपणा आचार्य श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुजी मां तेमज तेमना प्रिय आत्मज श्रीविट्ठलेश्वर महोदय मां सतत चित्त नुं स्थापन करवुं. तेमना समान अन्य कोई छे एवुं बुद्धिपूर्वक विचारी कदीपण बीजाओ मां चित्तनुं स्थापन करवुं नहीं". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८१)

****

"चतुःश्लोकी"

''''''''''''''''''''''''''''''''''''

"पोताना आ पुष्टिभक्तिमार्ग मां रही पोताना पूर्ण भावथी श्रीकृष्णचंद्रजीनी सेवा ज करवी, अन्य कोइपण देवनो आश्रय छोड़ी देवो तेमज प्रभूने धर्या विनाना पदार्थ नो आहार न करवो". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८२)

****

"चतुःश्लोकी"

''''''''''''''''''''''''''''''''''''

"आपणा आ भक्तिमार्ग मां रहेला सत्पुरुषों नो नित्य सत्संग करवो, मन थी पण असत्पुरुषो नी सोबत न करवी केमके असत्पुरुषनी सोबत बलात्कारे बाधा करनारी होय छे". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८३)

****

"चतुःश्लोकी"

''''''''''''''''''''''''''''''''''''

"आपणा देहादिक दुनियाना अन्य पदार्थोना संबंधमां आवतां जे ऊलटा प्रकार नो भाव उत्पन्न थाय छे, अने तेना लीधे जे बाधा उत्पन्न थाय ते बन्ने न थाय तेने माटे हमेशां आत्मनिवेदन नुं अनुसन्धान कर्या करवुं". (४)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"इति श्रीहरिदासोक्ता चतुःश्लोकी समाप्ता"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८४)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" - १

""

"निजाचार्य श्रीमहाप्रभुजीना चरणकमल मां हमेशां मनने स्थापवुं. तेनाथी ज तदीय भगवादीय नुं सर्व कार्य सिद्ध थशे". (१)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८५)

****

" भगवदीय परिशिक्षणम" -१

,,''''''''''''''',,''',,'''''''''''',,

"हमेंशा सत्पुरुषों नो संग करवो, कोई दिवस असत्पुरुषो नो संग न करवो, कारणके सत्संग करवाथी श्रीहरिमां बुद्धि थाय छे अने असत्संग करवाथी। घर वगेरे मां बुद्धि थाय छे ". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८६)

****

" "भगवदीय परिशिक्षणं"- १

""

"भले पोतानी बुद्धि धरावनार होय, तो पण असत्पुरुषोने ओलखी लेवा जोइए. भगवान नो आश्रय करनारा, संसारमां उदासीन होय तेवां, श्रीहरिमां प्रेम राखनारा ने सत्पुरुष जाणवा". (३)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८७)

****

"भगवदीय परिशिक्षणम" - १

""

"फलरुप जाणी ने मन - काया - वचन थी सदा श्रीकृष्ण नी सेवा करवी. एज स्वमार्गीय सर्वोत्तम धर्म छे." (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८८)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -१

""

"हमेशां सत्पुरूषो (तादृशी वैष्णवो) साथे निवेदन मन्त्र नुं स्मरण करतां रहेवु ; तेथी श्रीकृष्ण क्षण मात्र मां एवा हृदय मां प्रवेश करे " (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२८९)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -१

""

बहिर्मुखता नी निवृत्त माटे श्रीभागवत ना भावार्थ नुं श्रवण, कीर्तन, तेमज स्मरण सदा कर्या करवुं". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९०)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" - २

""

"जीव पोताना सामर्थ्य थी प्रभुनी कृतिने जाणी शकतो नथी, प्रभु तो पोताना भक्तो नुं पोतेज हित करे छे" (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९१)

****

"भगवदीय परिशिक्षणम" -२

""

"मूढ़ लोकोने पोतानी बुद्धिथी दुःख भासे छे, कारणके तेओ लौकिकमा आसक्तिवाळा होय छे, अलौकिक हित करवावाळा प्रभु ज बधु नक्की करे छे" (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९२)

****

"भगवदीय परिशिक्षणम" -२

''

"जेमनी नजर अलौकिक सुख मां छे अथवा शास्त्रीय नजर पण तेवीज छे, तेवा जीवो ने स्वामी - प्रभुनी कृति मां लेश मात्र पण दुःख भासतु नथी". (३)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९३)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -२

''

"भगवान श्रीहरि जीव ना हित माटे पिता नी माफक शिक्षा करे छे, परंतु जीव पोताना अज्ञान ना कारणे प्रभुनी कृति ने उत्तम मानतो नथी." (४)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९४)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -२

''

"तो पण करूणानिधि श्रीप्रभु सहज स्नेहथी (स्वकीय जीवनुं हित करवा मां) उदासीनता राखता नथी, परंतु ए जीव समझतो होतो नथी. तेम छतां प्रभु पोताना भक्त माटे पोताने योग्य लागे तेवीरीत नुं कार्य करे छे". (५)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९५)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -२

''

"भगवान श्रीकृष्ण जेनो अंगीकार करे छे ते कदापि दोष युक्त होय तो पण पोताना ए जीव नो कोईपण स्थले त्याग करता नथी, कारणके आपे ए जीव नो सदा माटे स्वीकार कर्यो छे, अने आप कृपा थी भरपूर छे". (६)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९६)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -२

""

"एवा (पुष्टि पुरुषोत्तम) प्रभूने छोडीने जे मनुष्यो बीजाने प्रभु पणा थी माने छे (अन्य नो आश्रय करे छे) तेओ महा मूढ़ छे अने तेओ खुबज अज्ञान नो आश्रय करनारा छे" (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९७)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -२

""

"अतः नंदरायजी ना आंगणांमा विहार करनार, श्रीयशोदाजी ना खोळा मा लालित, गोप बालकोथी वींटळायेला सदानंद भगवान श्रीकृष्ण नी सेवा करावी" (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९८)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -२

""

"वृजांगनाओ ना भाव नी सारी रीते सिद्धि करवा माटे सर्व लीला ओ ना विलास थी युक्त सर्वोद्धार करवामां प्रीति वाळा श्रीकृष्ण प्रभु वृजभक्तो माटे ज प्रकट थया छे". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (२९९)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -२

""

"जेमना द्वारा भक्तिमार्गीय ज्ञान नो उदय थयो छ एवा पोताना मुखार्विन्द स्वरूप श्रीमहाप्रभुजी ने प्रकट कर्या छे, ते श्रीमहाप्रभुजी नो दासभाव ज सर्व सिद्धि करनार छे". (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३००)

****

"भगवदीय परिशिक्षणं" -२

""

"ए श्रीमहाप्रभुजी ना पुत्र श्रीप्रभुचरण-श्रीगुसाइंजीना चरणकमल नी रज नुं मात्र अवलंबन करनारा, आ सिवाय बधा मां जेमनी बुद्धि दूर थई गयी छे तेवां, सत्संगने खोजनारा, श्रीकृष्णचंद्रजीना परम उत्कर्षने

समझावनारा, दुष्टना संसर्गथी डरनारा, श्रीहरिना सेवकोमां विनय-भाववाळा, निश्चिन्त मनवाळा हे वैष्णवजनों ! श्रीहरि - भगवान श्रीकृष्ण नुं निरंतर भजन करो. आम करवा थी सर्व प्रकारना फलनी प्राप्ति थशे तेमां संशय नथी". (११-१२-१३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'इति श्रीहरिदास विरचितं भगवदिय परिशिक्षणं सम्पूर्णम'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०१)

****

"तदीयानां शिक्षणं"

''''''''''''''''''''''''''''''''

"पोतांना आचार्य श्रीमहाप्रभुजीए बतावेला भक्तिमार्गथी कृपानिधि भगवान श्रीकृष्ण मां चित्त स्थापवुं, तेथी सर्व भगवादियो नुं आलोक अने परलोक संबंधी कार्य सिद्ध थशे". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०२)

****

"तदियानां शिक्षणं"

''''''''''''''''''''''''''''''''

"भाग्यने लीधे भगवत्सम्बन्धवाळु जे जोवामां आवे, जे कांई सांभळवामां आवे, अथवा तो जे हृदय मां स्फुरे, तेनो प्रयत्नपूर्वक विचार करतां रहेवु जोइए". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०३)

****

"तदियानां शिक्षणं

''''''''''''''''''''''''''''''''''

"जो कामदेव करतां पण सुन्दर श्रीकृष्णचंद्रजी मां मन हमेशा प्रीतियुक्त होय तो ए प्रभुना मुखार्विन्द रूप श्रीमहाप्रभुजी ना दासों ने फल प्राप्ति मां बाकी शु रहे ?" (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०४)

****

"तदियानां शिक्षणं"

''''''''''''''''''''''''''''''''''''

"पोताना आचार्यचरण श्रीमहाप्रभुजी मां स्नेहथी भिंजायेला चित्तवाळा जे भगवदिय होय तेनो ज सदा संग करवो जोइए ; क्यांय पण बीजाओ नो संग करवो जोइए नहीं". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"इति श्रीहरिदासोक्ता तदियानां शिक्षणं समाप्ता"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०५)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरूपणं"

""

भगवाने लीला करवा माटे नक्की आ जगतने प्रकट कर्यु छे, अने श्रीहरिना पोताना अंशरूप जीवो मां बंध अने मोक्ष थी एम लीला बे प्रकारे छे. (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०६)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरूपणं"

,,""""""""""",,""""""""""""""""""""""""""",,""""""""

"बंध माटे भगवाने विषयो (शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गंध) उत्पन्न कर्या छे, मोक्ष माटे श्रुति - वेद ने प्रकट कर्या छे, कारणके सर्व रीते विषयो भोग ना साधक छे" (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०७)

****

"वाक्चक्षुरमुख्यत्व निरूपणं"

" ""

"भगवाने इंद्रियोने पण पोतपोताना। देव सहित उत्पन्न करी छे ; ए इन्द्रियो विषयो मां सपडाता जीवने निश्चित बंध थाय छे". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०८)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरुवणं"

""

जीव ने बंधपणु सिद्ध थाय ते हेतु थी इंद्रियोने (भगवाने) विमुख ज सर्जेली छे, जेथी प्रथम ए इंद्रियोनो एना विषयो मा प्रवेश थाय छे " (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३०९)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरूपणं"

""

"परमात्माए इंद्रियोने बहारनी बाजू जोनारी करी छे एम श्रुति कहे छे. ए बहिर्मुखता मांथी निकळवानो उपाय ज्ञान अने भक्ति छे". ((५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१०)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरूपणं"

""

"ज्ञान नो हेतु मोक्ष छे एम श्रुति मां ज्ञानमार्ग नुं निरुपण करवा मा आव्यू छे, परंतु ज्ञानने पण जेओ (मायावादीओ) मिथ्या माने छे तेमने ज्ञानमां पण विफलपणु छे". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३११)

****

"वाक्चक्षुरमुख्यत्व निरूपणं"

""

"अक्षरब्रह्म नुं ध्यान करवु, ए पण वस्तुतः साकार छे, परंतु आश्रय करवा योग्य पुरुषोत्तम ना भक्तियोग ना अभावथी ए दिवा नी माफक प्रकट थतुं नथी". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१२)

****

"वाक्चक्षर्मु◌ुख्यत्व निरूपणं"

""

"प्रभु भक्ति विना अक्षरब्रह्म मां श्री हरिनो आविर्भाव नथी ज थतो, तेथी अक्षरब्रह्म मां प्रभुनी भावना करवा नी चित्त ने आवश्यकता छे. (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१३)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरुपणं"

""

"वैराग्य अने शम आदि थी विषयोनो त्याग करीने जेम विषयो मां न आकर्षे तेम ए इंद्रियोने शुद्‌ध करी प्रभु तरफ लइ जवी जोइए". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१४)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरुपणं"

""

"ए इन्द्रियो, जेम घास वगर नी भूमि मां रहेला अग्नि नी माफक पोतानी मेळे शांत थई जाय छे, तेम भगवत्सम्बन्धी आनंद नी प्राप्ति विना व्यर्थ जाय छे." (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१५)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरुपणं"

""

"भक्तिमार्ग मां तो मात्र साकार श्रीहरिनुं ज भजन करवामां आवे छे, तेथी त्यां प्रभुना साकार स्वरूप मां सर्व इन्द्रियो नुं सार्थकपणु थाय छे ए मां संशय नथी". (११) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१६)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्य निरुपणं"

""",,""""""

"त्यांरे आनंदनी संपूर्ण पूर्ति थवाथी प्रत्येक इन्द्रियो सफल थाय छे. (परंतु) ए (ज्ञानमार्ग अने भक्तिमार्ग) बन्ने मार्ग ना अभाव मां (इंद्रियो) विषयमां प्रवेश करे छे". (१२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१७)

****

"वाकचक्षुर्मुख्य निरुपणं"

""

"सर्व इन्द्रियो मां मन आदि छे, कारणके इंद्रियोमा मन नी मुख्यता छे. मन जे बोलावे छे ते वचन (इंद्रिय) बोले छे". (१३). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१८)

****

"वाकचक्षुर्मुख्यता निरूपणं"

""

"वचन जे कहे छे ते कर्म इन्द्रियो करे छे", आम वेद मां कहेवामा आव्यू छे ; बीजी श्रुतियो पण कहे छे " बधु मन ने वश छे" (१४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३१९)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यता निरुपणं"

""

"सर्व इन्द्रियो नुं प्रेरक होवाथी 'चित्त' नी मुख्यता छे, तेवीज रीते 'मन' नी प्रथम उत्पत्ति होवाथी ते पण श्रीकृष्ण नी सेवा नु एक साधन होवाथी तेनी मुख्यता छे". (१५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२०)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यता निरुपणं"

""

"आम छतां ए मन करतां पण वधु बलवाळी रसना इंद्रिय छे, अने (तेथी पण वधु) सर्व प्रकारे विक्षिप्त करवावाळी इंद्रिय चक्षु पण बलवाळी छे". (१६). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२१)

****

"वाक्चक्षुर्रमुख्यता निरुपणं"

""

"ए जीभ पोताना कार्य ने कर्याज करे छे, अने एने करेला कार्यने आँख निरंत्तर जोया ज करे छे. अन्तःकरणस्थ मन छे, परंतु जीभ अने आँख तो पोतपोताना कार्य कर्या ज् करे छे" (१७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२२)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यता निरुपणं"

''

"अहीं सारीरीते शास्रो मां कहेवाल मार्ग थी विचारता - 'रसने छोडीने' (प्राणियो ना विषयो तो निवृत्त थाय छे, परंतु ए विषयो मां रस एटले के वासना दूर थती नथी - गीता २/५९), ए भगवद वाक्य अनुसार विषयो मां रस मुख्य छे". (१८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२३)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरुपणं"

''

"निराहार (भोजन न लेनार) मनुष्य ना सर्व विषयो निवृत्त थई जाय छे, पण 'रसना' इंद्रियनी निवृत्ति थती नथी. तेथीज (भागवत मा) श्रीहरि कहे छे 'जीते सर्वं जीते रसे' - 'रसना' इंद्रिय जितातां बधूं जितायी जाय छे". (१९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२४)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरुपणं"

''

"(आम रसना अने वाणी नी एकरूपता छे) तेथी वाणी तथा आँख सर्वरीते बळवान छे, माटे दूर रहेली वस्तुओं मा पण तेओ मन ने खेंची जाय छे. (२०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२५)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरूपणं"

''

"काम थी उत्पन्न थतां भावमां 'चक्षुराग' (आँख द्वारा प्रगट थतो स्नेह) सौ प्रथम कहेवामां आवे छे. आँख नो भाव वाणी द्वारा बहार प्रकट थाय छे, जेना कारणे मन पोतांना मानेला विषय ने पार पामी शकतु नथी (पोतानु धारेलू करी शकतु नथी)". (२१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२६)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरूपणं"

’’''''''''''''''’’''''''''''''''''''''''''''''''''''''''’’''''''''''

"आथी 'वेणुगीत' मां पक्षी रूप भगवादीयो विशे गोपीजनोए जेम कहेलूं छे (के 'बीजी वाणी ने छोडीने तथा वींचेला नेत्रवाळां पक्षीरूप भगवादीयो वेणुगीत नुं श्रवण करे छे), तेम अहीं मौन अने नेत्रनु वींचवू मानवा मां आव्यू छे". (२२)

(आ स्तोत्रमां श्री हरिरायजीए वाणी अने नेत्रो ए बे इन्द्रियो जे मुख्यतः मन ने विषयो मा दोरी जवा माटे कारणभूत छे, तेनी भूमिका समजावी छे. छेल्ले 'वेणुगीत' ना कथन द्वारा ज्यां पक्षीरूप मुनिओ वेणुगीत ना श्रवण माटे मौन धारण करे छे, अने आँखों विंची राखे छे, तेम करवा नुं सूचवे छे) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२७)

****

"वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरूपणं"

" ''

"आम आ बन्ने (वाणी अने आँख) जेंने वश छे तेवां हृदयवाळा होय, तेओ ने निरोधवाळा जाणवा, अर्थात जेमना कब्जा मां ए बन्ने इन्द्रियो छे तेमने उत्तम भगवादियो समजवा" (२३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"इति श्रीहरिदासोक्तं वाक्चक्षुर्मुख्यत्व निरुपणं सम्पूर्णम"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२८)

****

"दास्याष्टकं"

''''''''''''''''''''''''''''

"जेओ श्रीवल्लभाधीशनां चरणों नुं ध्यान धरे छे, जेओ एमना गुणगान अने सेवनमां तत्पर छे, जेओ एमनी सानिध्य मां रहेनारा छे, वळी जेओ हमेशा श्रीमहाप्रभुजीमां रहेल भावनी भावनावाळा मनना आनंद थी युक्त छे, ते भगवादीयो नुं दास्य मने सदा प्राप्त थाओ. तेना विना जीवन नुं बीजु शुं फल होइ शके !". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३२९)

****

"दास्याष्टकं

''''''''''''''''''''''''''

"जेओ श्रीकृष्ण प्रभु ना मुखारविंदावतार श्रीमहाप्रभुजी नी कृपा थी युक्त छे, प्रतिदिन ए श्रीमहाप्रभुजी ना मार्ग नो विचार करवामा तत्पर छे, अने जेओ लौकिकं वैदिक सघळु एमणे करेलु ज मानी रह्या छे, अने जेओना चित्तमां बीजु उपास्य देवत्व आवतु ज नथी, जेओनु प्रभुए स्वकियापणा थी वरण कर्यु छे, तेवा भगवादीयोज भूतल पर मारा रक्षक छे'. (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३०)

****

"दास्याष्टकं"

""""""""""""""""""""""""

"जेओ श्री वल्लभधीशनी कृतिमां तथा कथन मां विश्वासवाळा छे, जेओ एमना मुखार्विन्द नां दर्शननी इच्छा थी सदा हृदयमा तप्या करे छे अने संसारना सुखमां विरक्त छे, तेवा भगवादीयोनुं दास्य प्रतिजन्म मने फलीभूत थाओ ; बीजा सिद्ध थतां फलो नी अपेक्षा नथी". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३१)

****

"दास्याष्टकं"

""""""""""""""""""""""""

"जेओ श्रीवल्लभाधीश ना चरणकमल ना सेवन माटे दिनतावाळा छे, पोताना देहादिक नी उपेक्षा करनारा छे, ए श्रीमहाप्रभुजी मां परायण बुद्धिवाळा, जेओ आपश्रीनी आज्ञानुसार सर्वकांई करे छे अने जेमनी बुद्धि श्रीमहाप्रभुजी ने प्रसन्न करवा मां अधिक आदरवाळी छे तेवा सत्पुरुषोना चरणो मा रहेवु तेज मारा माटे परम फल रुप छे''. (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३२)

****

"दास्याष्टकं"

""""""""""""""""""""""""

"जेओ श्रीमहाप्रभुजी ना प्रिय नन्दन (श्रीगुसाइंजी) ना चरणों मां आसक्त छे, जेओ श्रीस्वामिनीजी नुं दास्य एमना हृदयना अभिप्राय ने जाणीने शुध्द भाव थी करे छे अने जेओ एम बुद्धिपूर्वक माने छे के "जीववानु बधु फल आ ज छे", ते भगवादीयो ना चरणकमल मां सेवाना फलरुप रति अर्थात प्रेम मने थाओ". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३३)

****

"दास्याष्टकं"

""""""""""""""""""""""

"जेओ श्री महाप्रभुजी नी समजाववानी चतुराई ना विचारथी सदा संतुष्ट चित्तवाळा छे, अने जेओ श्रीमहाप्रभुजी द्वारा निर्दिष्ट केवल मानसी सेवा ने मुख्य माने छे, जेओ आपश्रीना पर ना अतूट विश्वासने कारणे पोतानो बधो दोष निवृत्त थयेल माने छे, तेवां भगवदीयोना बन्ने चरणकमल नी हुं रज थाउ". (६)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३४)

****

"दास्याष्टकं"

""""""""""""""""""""""""""

"जेओ गोपीपति श्रीकृष्ण प्रभु ना भजन मां श्रीवल्लभाधिश ना आश्रयवाला छे, जे दास्यनी परंपरा ने पाम्या छे - श्रेष्ठ दीनता ने प्राप्त थया छे, जेओ, "बधुए प्रभुनुं छे" एम हृदयथी माने छे, तेवाओ नी दास पदवीने में सदाय जन्मोमां प्राप्त करी छे". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३५)

****

"दास्याष्टकं"

""""""""""""""""""""""

"जेओ तापात्मक, सुन्दर, साकार सरस, रासात्मकपणाथी पृथ्वी पर प्रकट थयेला अने प्रसिद्ध एवा श्रीमहाप्रभुजी ना स्वरूप नुं रात - दिवस चिंतन करे छे अने आदरपूर्वक हमेशा (तेमना गुणानुवाद) गाय छे, दिनता पूर्वक प्रतिजन्म तेवा भगवदियो नुं दास्य मने फलरुप थाओ". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"इति श्रीहरिदासोक्तं दास्याष्टकं संपूर्णम"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३६)

****

"भक्तानां स्वरुपभेद निरुपणं"

""

"वैष्णव, भगवदीय, तदिय, अने तादृश भक्तोने पुरूषार्थो ना भेद द्वारा गुणो थी अलग अलग जाणवा". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३७)

****

"भक्तानां स्वरूपभेद निरुपणं"

""

"जेओ दीक्षा पाम्या होय, दीक्षा विनाना होवा छतां व्रतो वेश वगेरे धारण करतां होय अने बधे मान्य होय तो एवाओ ने वैष्णव तरीके कहेवामां आव्या छे". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३८)

****

"भक्तानां स्वरुपभेद निरुपणं"

""

"जेओ दीक्षा पामेला होय, भगवान ना धर्मोनुं ज्ञान धरावतां होय, सेवा माटे तत्पर होय, अने भगवत्प्रेम मां परायण होय तेवाओने 'भगवदीय' कहेवामां आव्या छे". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३३९)

****

"भक्तानां स्वरुपभेद निरुपणं"

""

"प्रभुना धर्मोथी संयुक्त, मात्र भक्ति विशे ज तत्पर, श्रीकृष्ण अने श्रीस्वामिनीजी नी सेवा मां तत्पर एवा मुख्य भक्तो ने 'तदीय' कहेवामां आवे छे". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४०)

****

"भक्तानां स्वरुपभेद निरुपणं"

""

"भगवान नो भाव के स्वरूप जेवा छे तेने समजीने जे उत्सुक मनवाळो जाते आसक्तिपूर्वक प्रभुनी सेवा करे छे तेने 'तादृश' कहेवामां आवे छे". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४१)

****

"भक्तानां स्वरूपभेद निरुपणं"

''

"प्रभुना अंशरुप होवाना कारणे प्रभुना रस मां आसक्तिवाळा एकमात्र रसनुं ज पोषण करनारा भक्तो छे अने ए 'बाह्य' तेमज 'आंतर' ए रीते बे प्रकारना छे". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४२)

****

"भक्तानां स्वरुपभेद निरुपणं"

''

"धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अने पांचमी भक्ति एम पुरुषार्थो ना प्रकार छे, जेना द्वारा फल प्राप्ति पण भिन्न भिन्न होवानु कह्यु छे". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"इति श्रीहरिराय विरचितं भक्तानां स्वरुपभेद निरुपणं संपूर्णम"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४३)

****

"श्री गुरुदेवाष्टकं"

''

"कृपामार्ग ना संपूर्ण रहस्यना जाणकार, करुणा रस थी भरपूर, सर्वोतम, तथा फलनुं दान करनार एवा श्रीगुरुदेवने नमस्कार" (१). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४४)

****

"श्री गुरुदेवाष्टकं"

''

"दैवीजीवो नो उद्धार करनार, आनंदमय जेमनुं श्रीअंग छे तेवां हे स्वामी ! आप सदा मारे ध्यान करवा योग्य छो अने रसिक-भगवद्रसज्ञ पूरुषो मा एक शिरोमणि छो". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४५)

****

"श्रीगुरुदेवाष्टकं"

''

"(भक्तिमार्गना) प्रतिबंधोने दूर करनार, अनुग्रह मार्गना ज्ञान नो प्रकाश करनार, सर्व सिद्धान्त ने कहेनार, दीन जनोना दुःख ने न सही शकनार, समर्थ, सर्व दोषो नो नाश करनार, सर्वोपरि सुखनुं दान करनार,

बुद्धिना प्रेरक अने भावस्वरूप जे छे ते श्रीगुरुदेवने हुं नमन करुं छुं." (३ - ४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४६)

****

"श्रीगुरुदेवाष्टकं"

„''''''''''''„''''''''''''''''''''''

"स्वरूपनां ज्ञान थी शून्य-रहित एवा स्वकीय जनना समग्र पापोने जे कृपाथी हरी रह्या छे अने सर्व कार्यमां समर्थ-स्वरूप, एवा हे पोतांना भक्तोना नाथ ! आपने नमन हो". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४७)

****

"श्रीगुरुदेवाष्टकं"

'' ''''''''''''''''''''''''''''''''''''

"भगवद-रस मां निमग्न, दुखन ने भोगवनार, सर्व दान आपवा मां विलक्षण, जेमाना सर्वे श्रीअंग सुन्दर होवाथी कामदेवने पण मोह पमाडनार एवा हे विभो ! आपने नमन हो" (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४८)

****

"श्रीगुरुदेवाष्टकं"

''''''''''''''''''''''''''

"भक्ति जेमने वहाली छे, भावथी मेळवी शकाय तेवां रसने जाणनारा, रसनूं दान करनार, अत्यन्त मधुरता ना समूह रूप , दुर्लभ भावने जाणनारा, आप श्रीगुरुदेवने नमन हो". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३४९)

****

"श्रीगुरुदेवाष्टकं"

''''''''''''''''''''''''''''''''''

"प्रभु सिवाय जेमां अन्य कांई नथी तेवां शुध्द धर्म नुं दान करनार, व्यभिचार नो विनाश करनार, शरणागत जीवो ना सारी रीते राक्षणहार, कालादि ना भय नो नाश करनार, श्रीविट्ठलनाथजी ना स्वरूपनी प्राप्ति करावनार अने पोतांना दासोने एक अवलम्बन रुप आप श्रीगुरुदेवने नमन हो".(८ १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"इति श्रीनिजदास विरचितं गुरुदेवाष्टकं समाप्तम"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५०)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"बीजा बधा मार्गो थी जुदा प्रकारनुं जेनुं लक्षण छे तेवो आपणो पुष्टिमार्ग-शुद्धाद्वैत भक्तिमार्ग छे, एम सर्वथा समजवुं. आ मार्ग ना स्वरुपनुं ज्ञान आपणा पोताना सामर्थ्यथी मेळववुं सर्वथा मुश्केल छे". (१)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५१)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"(जीव पोताना सामार्थ्यथी मार्ग-ज्ञान मेळवी शके तेम नथी) तेवी चिंता ना कारणे परमकृपायुक्त प्रभु श्रीकृष्णचन्द्रजीए आ भूतल पर, सर्व सामर्थ्य धारण करनार, पोताना मुखार्विन्द ना अवतार रुप महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्यजी नुं विधिपूर्वक प्राकट्य कर्यु छे". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५२)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"रसो वै सः" ए श्रुति वचन मुजब, प्रभु श्रीकृष्णचंद्रजी रसात्मक - भावात्मक छे, ते ज प्रमाणे, श्रीमहाप्रभुजीना अनुयायी वैष्णवोए श्रीकृषण प्रभु ना मुखार्विन्द स्वरूप (श्रीमदाचार्यचरण ने) पण भावात्मक समजवा. (कारणके) आपश्रीना भक्तो ने आचार्यश्रीना एवा भावात्मक स्वरुप नो अनुभव थयेलो ज छे'. (३)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५३)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""

"श्रीमहाप्रभुजीए आ समग्र भावात्मक मक्तिमार्ग ने प्रकट कर्यो छे. आ मार्गमां 'ब्रह्मसंबंध' एटले स्मृति मां जेंने 'परमात्मा', श्रीमद्‌भागवत मां जेने 'भगवान' अने श्रुति-वेद मा जेंने 'ब्रह्म' कहेवामां आवे छे, ते परम कृपालु श्रीकृष्णचंद्रजी साथे जीव नो संबंध, ए मुख्य छे, अने ए भावात्मक ज छे". (४)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५४)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""

"विवाह थतां जेम नारीने पुरुष पोतानो पति छे एवो भाव थाय छे, ते ज प्रमाणे अहीं ब्रह्मसंबंधने लीधे 'श्रीकृष्चंद्रजी मारा स्वामी छे' - (हुं एमनो दास छुं) एवो भाव जागे छे". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५५)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""

"जे प्रमाणे विवाह थया पछी पुरुष स्त्रीने पत्नी तरीके स्वीकारतां एमां रहेल एक पण दोष मनमा लावतो नथी, ते प्रमाणे ब्रह्मसंबंध थया पछी ए जीव ने पोताना दास तरीके स्वीकारतां एमां रहेलां दोषो प्रभु मनमा लावतां नथी." (६). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५६)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""

"चाण्डाली राणी बनी होय अने राजाए तेने मानीति पण करी होय छतां क्यारेक तेनु अपमान करे तो तेना राणपणा मां क्षति थती नथी" (ते श्लोक थी श्रीमहाप्रभुजीए खुलासो कर्यो छे) तेम (जो पूर्व स्थिति मा जीवमां कोई दोष होय तो) प्रभु साथे ना सम्बन्ध मा ते पूर्वदोष प्रतिबन्ध करनार थतो नथी'. (७)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५७)

****

"मार्गस्वरुप निर्णयं"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"एक स्त्रीने जे प्रमाणे अन्य कोई साथे संबंध बांधता, पतिना उच्छिष्ठ सिवाय बीजुं खाता, पोताना स्वामीने पोतानुं खाधेलूं आपीने अने पोताना देह नो अन्य पुरुष साथे अयोग्य योग थतां महान दोष लागे छे, तेज प्रमाणे (ब्रह्मसंबंध थया बाद वैष्णवने) अन्य कोई देव साथे संबंध राखतां, प्रभु-प्रसादी सिवाय बीजी वस्तु लेतां, प्रभूने पोतानुं अर्धु खाधेलूं-भोगवेलु समर्पित करतां अने स्वदेहथी अन्य देवनी आराधना करता महान दोष उत्पन्न थाय छे एम् भगवादियोए समजवुं". (८ १/२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५८)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"जे प्रमाणे वच्चे रहेली (दूती) ओ द्वारा स्त्री पोताना उत्तम आत्मा नुं पोताना पतिने समर्पण करे छे, ते ज प्रमाणे भगवत-सम्बन्धी जनो द्वारा बधी वस्तुओनु प्रभूने समर्पण करवुं" (९ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३५९)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

"""

"पोताना प्रभुमां जे अनन्यपणु (होवुं जोइए) ते अनन्यपणानुं अनुसंधान जो न रहे तो ए (आत्म समर्पण आदिमां) प्रतिबंधक थई पड़े छे." (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६०)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"ज़े प्रमाणे सगावहालाओनी मदद थी स्त्री पोताना पतिव्रतपणानुं रक्षण करे छे, ते ज प्रणाणे जीवे तादृशी जनोनी साथे रहीने ब्रह्मसंबंध नो विचार करवो जोइए". (११) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६१)

****

"मार्गस्वरूप निर्णयः"

''

"आथी एवा स्थाने रहेवुं के ज्यां एवा तादृशी भगवादियो ना संगनी संभावना हौय, (परंतु) एवा भगवदीयो कलिकालमां मळवा दुर्लभ छे. (तेथी तेओनी (वंचक अने भागवदीय मां भेद समजी) बराबर परीक्षा कर्या पछी तेमनो सहवास करवो." (१२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६२)

****

"मार्गस्वरूप निर्णय"

''

"(भक्तिवर्धिनी ग्रन्थ मां) 'आ प्रमाणे चित्त दूषित io ioन थाय....... ए रीते हरि भगवान ना स्थान मां रहेवुं' एवा स्पष्ट वचन छे, कारणके दरेक रीते भावनुं सारी रीते रक्षण करवानुं छे अने तेने वधारता जवानुं छे''. (१३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६३)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

"(भक्तिवर्धिनी मा बीजभाव दृढ करवा ना उपाय मुजब) रुचिरूप बीज भाव दुन्यवी धांधलो नी जेमां असर नथी तेवां वचनो थी भजन ना क्रम थी (उत्तरोत्त) प्रेम, आसक्ति अने व्यसन नी दशा प्राप्त करे छे". (१४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६४)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

''''''''''''''''''''''''''''''''''''''

"ए बीजभावने दृढ करवा माटे सेवाने साधन कहेवामा आवेल छे. आ सेवा पण वळी भावरूप ज छे. आ सेवाना फलरूपे प्राप्त थतां प्रभु पण भावात्मक छे. ए प्रभुनी लीला ने पण रसिकजनोए एवा ज प्रकारनी भावरूप जाणवी". (१५ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६५)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"ते माटे आपणा आचार्यचरण श्रीमहाप्रभुजीए जे कांई प्रकाशित कर्यु छे तेने अहीं दरेक रीते विद्वानोए भावरूप ज जाणवु, कारणके जेनुं मूळ हौय तेवुं ज ए मूळ मां थी उत्पन्न थयेलूं कार्य पण थाय". (१७). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६६)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

,,""""""""""",,""""""""""""""""""""

"आपणा आचार्यचरण, एमणे विस्तारेलो मार्ग, ए मार्गथी मेळवाता श्रीपुरुषोत्तम, ए बधु य अति उत्कट तापात्मक भावथी भरेलूं छे, एम् उत्तम अधिकारिओ ए जाणवू". (१८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६७)

****

"मार्गस्वरुप निर्णय"

" """"""""""""""""""""""""""""""""""""""

" जेमने पोताना आचार्य श्रीमहाप्रभुजी नुं शरण प्राप्त थयु छः, जेमनुं भगवन्मार्ग मां वरण थयूं छे, तेवां विचक्षण भगवादियोए (अगाउ जे कह्यो ते) आटलो सिद्धान्त जाणी लेवानी जरूर छे.". (१९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६८)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

""

(गत स्तोत्र मा "मार्ग स्वरूप" नो निर्णय करी श्रीहरिरायजी) "हवे श्रीमद वल्लभाचार्यचरण नी कृपा थी एमना निजजनोने आनंद थाय ते हेतुथी ज श्रीवल्लभाचार्यचरण ना मार्ग मां जेने निष्ठा छे तेवा जीवो ना कर्तव्यनुं सर्व रीते (आ स्तोत्रमां) निरुपण करे छे" (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३६९)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

""

"सदानंद स्वरूप, मात्र भक्तनुं ज हृदय जेने आश्रयस्थान छे तेवा, वळी भक्तो ना भाव स्वरूप, भावात्मक सकळ लीलाओथी जोड़ायेला, एवा श्रीकृष्णचंद्रजी नुं हमेशां सेवन करवुं". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७०)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

""

"लोकमां अनुराग त्रण प्रकारे उत्पन्न थाय छे - १. श्रवण, २. दर्शन, ३. ध्यान थी. (आ अनुराग गोपीजनोने सदाय सहज छे)". (२ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७१)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

""

"श्रीगोपीजनो नो जे सहज अनुराग हतो ते अनुराग ना कारणे ज, अजन्मा भगवान भूतल पर सुखनुं दान करवा माटे नन्द ना भवनमां प्रकट थया. ए प्रभुना यथार्थ स्वरूपनुं वर्णन करवा माटे वेद पण समर्थ नथी, केमके मन सहित वाणी ए स्वरुपने पहोंची शकती नथी एम (स्वयं वेद मांज) कह्यु छे. तेथी अही जे निरुपण कर्यु छे, ते मात्र श्रीमदाचार्यचरण नी कृपाथी ज (करवामां आव्यू छे). (३ -५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७२)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

""

"गोपीजनो नो भाव ज यशोदाजी ना खोळामां खेली रहेलो छे. श्रीयशोदाजी पण ए गोपीजनोना भाव स्वरूप ज छे, एम् समजो. श्रीनन्दरायजी, एमना सगावहाला, ए व्रजभूमि, ए नंदालय, ए वन, ए नंदमहोत्सव तेमज त्यां रहेलु समग्र ते गोपीजनोना भाव स्वरूप ज छे". (७ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७३)
****
"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"
""

"ए भाव अति गुप्त छे, बहार रही शकतो ज नथी ; एनो पूर्व रूप साथे कोई प्रकारे संबंध नथी एटले ज अहीं भावनुं पृथकपणे निरुपण करवा मां आव्यू छे. उत्पत्ति केवळ भावात्मक स्वरूपनी ज छे. ए माटे ज ए भावोत्पत्ति स्पष्टपणे कहेवा मां नथी आवी." (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७४)
****
"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"
""

"एटला माटे सर्व सामग्री - परिकर थी युक्त एवा, आ गोपीजनोना भावरूप श्रीकृष्णचंद्रजी ए प्रकट थईने व्रजभूमिमां पोतांना अलौकिक आनंदरूपनी लीला करी छे". (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७५)
****
"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"
""

"पूतना ने मारी नांखी, तेमज बीजा असुरादिकने मार्या, वगेरे जे अवतार लीला ते श्रीकृष्णचंद्रजीए पोतेज प्रकट थई ने करी". (११) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७६)
****
"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"
""

"दशमस्कन्ध ना उत्तम 'तामस फलप्रकारण' मा -कोई पूतना बनी अने कृष्णरूप बनेली बीजी गोपीने स्तनपान करावववा लागी -ए वगेरे ग्रन्थ सन्दर्भ मा ए समग्र 'अवतार चरित' ज कहेवा मा आव्यू छे" (अर्थात अहीं जे गोपीजनोए विरहदशा मा तन्मय बनी कृष्णलीला करी बतावी ते भावात्मक ज् छे). (१२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७७)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

""

"एटला माटे जेटली लीलाओ छे ते बधी ज भावरूप हती एम मानवु ज् योग्य छे. वेद मा एवा केटलाये प्रसंग छे के प्रभु गुणरहित होवा छतां गुणो द्वारा श्रुतिए एमने वर्णव्या छे, तेज प्रमाणे अही भागवतजी मां पण अवतार चरित द्वारा भावरूप निरुपण करवा मां आव्यू छे, परंतु अवतारी कृष्ण अने भावरूप कृष्ण वच्चे भेद छे. (१३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७८)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

""

"ए वात (गईकाल नो मेसेज) पण श्रीमदाचार्य चरण नी कृपाथी ज जाणी शकाय एम छे, माटे ए भाव स्वरूप नी ज सेवा करवी. जे भावात्मक श्रीकृष्णचंद्रजी नी सेवा छे ते मानसी नुं स्वरूप छे. (१५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३७९)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

""

"ए भावात्मक प्रभु तो दुर्लभ छे ; एमनी सेवा आ लोकमां केवीरीते थई श्के ? - एवी जो शंका होय तो त्यां आ समाधान होइ शके : - ". (१६)

"सहज एवो जे भाव ते तो मात्र स्वामिनिजीओ मा ज सिद्ध छे. आम (ए स्वामिनिजीओ मां) रहेलां भाव नुं बीजाओ मां - आपणा जेवाओ ना ह्रदय मां आववुं क्यांथी संभवे ?". (१७)

"ए स्वामीनिजीओ मां जेवा प्रकार नी योग्यता छे तेवी यौग्यता बीजाओ मां कोई प्रकारे नथी. हा, मात्र ए श्रीस्वामिनिजीओ नी कृया थाय तो ए यौग्यता प्राप्त थाय खरी." (१८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८०)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरूपणं"

''

"प्रभु माटे पण जे प्रमाणे ए श्रीस्वामिनिओ नी कृपा मेळववी मुशकेल छे ते प्रमाणे आपणे मानवीओ माटे पण ते कृपा मेळववी मुश्केल छे. ए खातर ज श्रीकृष्णचंद्रजी ए पोतांना मुखार्विन्द ना अवतार रूप श्रीवल्लभाधिश्वर प्रभुने प्रकट कर्या". (१९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८१)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

''

"श्रीस्वामिनिजीओ ना ह्रदय मां रहेलां भावरूप प्रभु श्रीकृष्णचंद्रजी नुं जे मुख ते भावात्मिक अग्नि रूप जाणवु, अने ए भाव विरहरूप छे." (२०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८२)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

''

"ए विरहात्मक भाव नुं दान करवा भावात्मक , वळी पोताना सानिध्य थी फलदान करनार आपणा श्रीमदाचार्यचरण सदा आपणा मस्तक उपर बिराजे छे." (२१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८३)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

''

"श्रीमहाप्रभुजी द्वारा प्रभु ने आत्मनिवेदन करातां एओश्री ना सानिध्यथी मुख्य सेवानी साधनता मां रहेलो एक प्रकारनो भाव उत्पन्न थाय छे". (२२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८४)

****

"स्वमार्गीग कर्तव्य निरुपणं"

''

"श्रीगोकुलाधीश प्रभु श्रीकृष्णचंद्रजी ने सर्व वस्तुओं नुं समर्पण करवा मां आवे त्यांरे ज भावनी सिद्धि थाय. दरेके दरेक रीते आपणे आपणा सर्वस्वनुं प्रभूने निवेदन करी चुकिये त्यांरे ज ए सर्व वस्तु नुं समर्पण सिद्ध थाय छे". (२३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८५)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

''

"(ए रीते समर्पण सिद्ध थाय) ते माटे ज (श्री आचार्यचरणे) तनुजा अने वित्तजा थी युक्त एवी शारीरिक भगवत्सेवा बतावी छे. (२३ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८६)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

''

"ए प्रमाणे प्रभुमां ज चित्त राखीने बधु करनार जीवे चिंता थी तद्दन रहित थई, सेवामां तत्पर बनी, हृदयथी प्रभुना विरहनो अनुभव करवो जोइए". (२५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८७)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

" ''

"जे प्रमाणे प्रभु गोचारणमां पधार्या होय त्यांरे श्रीगोपीजनोए भावना करी तेवी भावना सेवा ना अनवसर ना समयमां करी प्रभुना विरह नो अनुभव कड़ावो. ए ज फल नी अंतिम पराकाष्ठा छे" (२६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८८)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरुपणं"

''''''''''''''''''''''''''''''',,''''''''''''''''''''''''''''''

"आ प्रमाणे सारीरीते समजीने, विधिपूर्वक प्रसादी पदार्थोथी पोतानु भोजनादिक करी, हमेशां प्रभु मां आदरयुक्त रही, बराबर ध्यानपूर्वक श्रीमदाचार्य श्रीवल्लभाचार्यजीनो आश्रय करी ने स्थिति करवी". (२७)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३८९)

****

"स्वमार्गीय कर्तव्य निरूपणं"

""

"आ प्रमाणे श्रीमदाचार्यचरण सब्रीवल्लभाचार्यजीनि कृपा थी आ में लखयु छे ; आने हमेंशा संतोष तथा पयत्नपूर्वक पोतांना हृदय मां जीवोए स्थापवुं जोइए". (२८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"इति समाप्तम"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९०)

****

"स्वमार्गीय साधन रहस्यम्"

""

"श्रीमदाचार्यवर्य श्रीवल्लभाचार्यजी नो मार्ग त्रण प्रकार ना साधन विनाना जे जीवो तेमने माटे ज फलरुप छे. श्रीमहाप्रभुजी नी जेमना ऊपर कृपा छे, तेवा जीवो ने आ मार्ग मा श्रीमहाप्रभुजीनुं भावन ज भावना साधन रूप छे. (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९१)

****

"स्वमार्गीय साधन रहस्यम्"

""

" ए भाव सत्संग विना कदापि थई शकशे नहीं. ग्रह - स्त्री- पुत्र - धन वगेरे मां रहेलां सर्व प्रकार ना राग नो - आसक्ति नो अभाव सत्संग मां साधन छे." (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९२)

****

"स्वमार्गीय साधन रहस्यम्"

""

"जेना ऊपर श्रीमहाप्रभुजी नी कृपा छे तेवां भगवादियो नी सतत सेवा वड़े राग नो अभाव थाय छे. एवा भगवदीयोनी कृपा आ मार्ग मां साधन छे. भगवदनुग्रह मां साधन रूप एवी ए कृपा, ए भगवदीयोने तुष्ट करवा थी सिद्‌ध थाय छे." (३)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९३)

****

"स्वमार्गीय साधन रहस्यम्"

""

"एमना प्रत्ये भक्तिभाव वधार्या थी एमने संतुष्ट करी शकाय छे. 'भाव ज भक्तिमार्ग नुं सर्वस्व छे'. ए भाव नुं रक्षण करवुं जोइए. भावनात्मा सेवा पण चित्तमां सतत त्यांरे ज थई शके छे" (४ १/२).   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९४)

****

"स्वमार्गीय साधन रहस्यम्"

""

"हमेशां आत्मनिवेदन नुं स्मरण कर्या करवुं", एवुं परम साधन जे नवरत्न ग्रन्थ मां कह्यु छे, त्यां "ए तादृशी भगवदीयो नी साथे रही करवुं" - एम कह्यु छे, ए वाक्यथी आ भक्तिमार्ग मां सत्संग नी आवश्यकता छे, तेम समझी शकाय छे. श्रीवृत्रासुर चतुःश्लोकी मां ना "उत्तमश्लोक प्रभुना जनो मां सख्य - मित्रता थाओ" - ए वाक्य प्रमाणे आ मार्ग मां सत्संग साधन रूप पण छे अने मोक्षरूप पण छे. तेथी भगवदीयो नो संग न थयो तो बधुज फोगट छे. (६ १/२)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९५)

****

"स्वमार्गीय साधन रहस्यम्"

""

"तेथी सर्वनो त्याग करी सत्संग पूर्वक सदैव अन्दरना अने बहारना बन्ने प्रकार ना चित्त थी प्रभुनी सेवा करवी. सत्संग पोतेज फलरुप छे, एम समजी सदैव सत्संग करवो". (८)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

। समाप्तम ।

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९६)

****

"भक्तिमॉर्गे पुष्टिमार्गत्व निश्चयः"

""

"ज्यां फल जाते ज साधन थई ने रहे, ते पुष्टिमार्ग. आ पुष्टिमार्ग साक्षात फलात्मक अने परोक्ष फलात्मक एम् बे प्रकार नो कहेवामां आव्यो छे. (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९७)

****

"भक्तिमार्गे पुष्टिमार्गत्व निश्चयः"

""

"प्रभु ज्यारे भुतल ऊपर बिराजता होय छे त्यांरे जे पुष्टिमार्गे स्थिति छे ते 'साक्षात-फलात्मक' छे, परंतु ज्यारे प्रभु भूतल ऊपर नथी बिराजता होता त्यांरे जे पुष्टिमार्ग नी स्थिति छे ते 'परोक्ष-फलात्मक' छे". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

मित्रो श्रीहरिरायजी ना आ ग्रंथो मां आपे श्रीमहाप्रभुजी द्‌वारा प्रतिपादित पुष्टिभक्तिमार्ग नी बारीकीओ ने समजावी छे, तदर्थ तेने मात्र वांचवा ना मेसेज न समझता तेनो मर्म समझवा प्रयत्न करवो जोइए.

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९८)

****

"भक्तिमार्गे पुष्टिमार्गत्व निश्चयः"

""

"आ मार्ग प्रमाणो थी पर छे, एज व्यवश्था छे " (२ १/२)

श्रीहरिरायजी अही एक शंका प्रस्तुत करे छे !.

के - " फलरुप कृष्णनो जे वखते प्रकट दर्शनादिनो अनुभव थतो होय, ते वखते तो ए कृष्ण रसलीलाओ मां दरेक प्रकारे जाते साधनभूत बने, परंतु, परोक्ष भक्तिमार्ग मां एटले के ज्यारे प्रभु अप्रकट रही सुखदान करवा मांगता होय त्यांरे पण तेओ सुखदान मां साधनभूत केवी रीते बनी शके ?

कारण के एक तो पोते अप्रकट छे, बीजु तेओ देखाता पण नथी, अने जो प्रभु पोते साधनरुप न बने तो ए भक्तिमार्ग 'पुष्टिभक्तिमार्ग' कई रीते कही शकाय ? " अर्थात -

"जीव स्वयं साधन करी फल प्राप्त करे ते तो 'मर्यादामार्ग' छे, अने प्रकट प्रभु स्वयं साधन रुप बनी जीवने फलदान करे ते 'पुष्टिमार्ग' एवो सिद्धान्त छे", तेथी जीवना साधनो द्वारा फल मलतुं होय तो, ए मर्यादामार्ग कहेवाशे, पुष्टिमार्ग नहीं !". (५ १/२)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (३९९)

****

"भक्तिमार्गे पुष्टिमार्गत्व निश्चयः"

""

"सिद्धान्त ए छे के श्रुतिओ ए जेने सम्मति आपी छे तेवां प्रभु साक्षात रसात्मक छे ; ए पण श्रृंगार-रसरूप. श्रृंगार रसात्मक प्रभु ना पण बे प्रकार छे - १.संयोग अने २. विप्रयोग. " (६ १/२).   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४००)

****

"भक्तिमार्गे पुष्टिमार्गत्व निश्चयः"

""

"आम होवाथी जेनुं नाम 'पुष्टिमार्ग' छे तेवां भक्तिमार्ग मां प्रभुनो वियोग - विप्रयोग ए ज साधन छे, एटले ए विप्रयोग ने भगवत्स्वरूपात्मक कहयो छे." (७ १/२)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०१)

****

"भक्तिमार्गे पुष्टिमार्गत्व निश्चयः"

""

"आ विप्रयोग नुं जे साधनपणु छे, ते ज साक्षात प्रभु साधनरूप बन्या छे एम समाजवु. आथी ज आ पुष्टिमार्ग नुं पुष्टिपणु निर्विघ्न रहे छे एम जाणवू ". (८ १/२)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

समाप्तम

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०२)

****

"भक्तिद् वैविध्य निरुवणं"

""

"भक्ति ना प्रकार छे - एक 'चरणारविन्द' नी भक्ति, अने बीजी 'मुखार्विन्द नी भक्ति. आ बे प्रकारो मां चरणारविन्द नी भक्ति शीतळ छे, (तापात्मक नथी). शितळ होवानुं कारण ए छे के ए भक्ति श्रवण अने कीर्तन द्वारा थाय छे. आ भक्ति नो मुख्य संबंध श्रवण अने कीर्तन साथे ज होवाथी सुलभ छे, कारण के नारदजी जेवा अनेक भक्तो द्वारा ए प्राप्त थयेली ज़ोवा मले छे". (१ १/२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०३)

****

"भक्तिद् वैविध्य निरुपणं"

""

"बीजा प्रकार नी भक्ति (मुखार्विन्द नी) महा दुर्लभ छे, कारणके ते (अति दुर्लभ एवा) श्रीप्रभुना अधरामृत नी प्राप्ति द्वारा सिद्ध थाय छे. ए भावभावना रुप छे. उपरान्त ए विरहानुभव रुप छे. ए तो प्रभुए पोते केवळ श्रीगोपीजनोंने कृपा करी ने आपी छे". (अर्थात - प्रभु मारा उपर केटली कृपा करी रह्या छे, परंतु माराथी प्रभुनु सुख विचारी सकातुं नथी, हुं तो प्रभूने परिश्रम आपी रह्यो छुं, ए प्रकार नो भाव सतत आ प्रकारनी भक्ति मा रहेलो छे) (२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०४)

****

"भक्तिद् वैविध्य निरुपणं"

""

"ए विरहात्मक मुखार्विन्द नी भक्ति आपवा माटे ज परम कारुणिक भावात्मा प्रभु श्रीकृष्णचंद्रजीए कृपा करीने विश्वनो उद्धार करवा खातर, पोतांना उत्तम मुखार्विन्दरूप भावात्मक अग्निस्वरूप श्रीवल्लभाचार्यजी नो आ जगत मां आविर्भाव कर्यो, जेथी पोतांना मुखार्विन्द नुं दर्शन करावी, वचनरूपी अमृतना बिंदुओ द्वारा , वेणुनादनी जेम, स्वकियजनोने अधरामृत नुं पान करावी, मुखार्विन्द रूपा भावात्मिका भक्ति नुं दान कर्यु". (४-५-६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०५)

****

"भक्तिद् वैविध्य निरुपणं"

""

"एवा प्रकारे पोताना मुखार्विन्द ना अवतार श्रीमहाप्रभुजीनी भक्ति ना दान ना कारणे हरि - भगवाने अंतरंग सकल दैवी जीवो ने कृतार्थ कर्या छे". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०६)

****

"भक्तिद् वैविध्य निरुपणं"

""

"तेथी निश्चय करीने, आ लोक सम्बन्धी अने परलोक संबंधी दरेक कार्यो मां आवा स्वरूप वाळा कृपा ना सागर श्रीवल्लभाचार्य चरण नो मैँ आश्रय कर्यो छे". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'समाप्तम'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०७)

****

" स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

""

"श्रीकृष्णचंद्रजीना वादनावतार श्रीमहाप्रभुजी ने आशरे जेनुं चित्त छे एवो हुं श्रीमहाप्रभुजी ना मार्ग मां रहेली अद्भुत एवी बे प्रकार नी भक्ति नुं अहीं निरुपण करुं छु". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०८)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

" """

"सृष्टि नी उत्पत्ति बतावनारा वाक्यो अने तेने (भगवान थी) अभेद बतावनारा उच्चत्तम उपनिषद् वाक्यो मां थी 'वेदसिद्ध' अने 'स्वतन्त्र' एवी बे पकार नी भक्ति छे एम मालुम पड़े छे". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४०९)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

""

"पहेली वेदसिद्ध भक्ति प्रभुना माहात्म्य ज्ञान अने भाव ए बन्ने थी सिद्ध थाय छे . वेद पूरुषार्थ नुं प्रतिपादन करनार होवाथी , आ भक्ति मोक्ष नामना चतुर्थ पूरुषार्थ नी सिद्धि कराववामां उपयोगी छे". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१०)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

''',

"आत्मा अने परमात्मामां अभेद छे तेम श्रुति वचन ना कारणे आपण ने प्रभु पोतानी जात जेवा वहाला लागे छे, अने प्रभुए सृष्टि उत्पन्न करी छे, ए प्रमाणे कह्यु छे माटे प्रभुनी महत्ता नो ख्याल आवे छे". (४)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४११)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

''

""प्रकृति' अने 'प्रत्यय' नो विचार करिए तो 'भक्ति' शब्द मां थी आ नो आ ज अर्थ निकले छे. 'भक्ति' शब्द मां 'भज' धातु जेनो अर्थ स्पष्ट पणे 'सेवा करवी' एम थाय छे. ते 'प्रकृति' छे अने ए धातु पर थी स्त्रीलिंग क्रियावाचक नाम तेने 'ति' प्रत्यय लगाड़वा थी थाय. (शब्द ना मूल स्वरूप ने 'प्रकृति' अने बिभक्ति नुं रूप बनाववा जे लागे तेने 'प्रत्यय' कहेवाय). 'ति' - प्रत्यय नो अर्थ 'प्रेम' छे, 'स्त्रिभाव' एटले 'प्रेम'. आ प्रकार नी भक्ति मोक्षोपयोगी छे, (कारण के श्रीमहाप्रभुजीए निबंन्ध मां आज्ञा करी छे के 'मोक्ष नी कामना होय तो कृष्ण ना मूल स्वरूप नी भक्ति करवी)". (५-६)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१२)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

''''''''',,''

"श्रीकृष्णचंद्रजी ना प्रकट थवामां प्रेम पण कारण रूप होवाथी ए प्रेम साधन छे. आम जे भक्ति नुं निरुपण कर्यु तेवाज लक्षणो होवा छतां तेनाथी जुदा प्रकार नी बीजी स्वतन्त्र भक्ति पण छे. एवा लक्षणवाळी न होय तो ते भक्ति ज न होय, तै माटे ज अहीं बीजी स्वतन्त्र भक्ति नुं निरुपण करवामां आवे छे. आ भक्ति नो प्रकार , जे श्रुतिरुपा गोपीजनोए करी बताव्यो हतो ते वेद मा जणाववा मां आव्यो छे." (७-८)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१३)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

''',''''''''

"जे प्रमाणे वेदसिद्ध भक्ति मां सृष्टिवाक्यो द्वारा प्रभुना माहात्म्य नुं वर्णन करवामा आव्यू छे, तेम रासपंचाध्यायी ना पहेला अध्याय मां, गोपीजनोनां 'मैवं विभोर्हति' वगेरे वाक्यो द्वारा आ स्वतन्त्र भक्ति मां पण प्रभुना माहात्म्य नुं वर्णन छे. प्रभु केवा समर्थ छे, (एनुं आ प्रसंग मां श्रीगोपीजनोए निरुपण करेलु छे) के बधु छोडीने गोपीजनो प्रभूने भजे छे. (प्रभु गोपीजनोना मन ने अन्यत्र जवा देता नथी). तदुपरान्त, 'गतिस्मित' वगेरे वाक्यो द्वारा भगवान अने भक्त एवा गोपीजनो वच्चे अभेद (एकता) नुं निरुपण करवामां आव्यू छे. (आम तेमना भाव - प्रेम नुं निरुपण कर्यु छे)." (९ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१४)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

''

"जे प्रमाणे वेदसिद्ध भक्तिमां अहंभाव नष्ट थाय छे, ते प्रमाणे आ स्वतन्त्र भक्तिमां पण ए भाव नष्ट थाय छे. पहेलां प्रकार मां भक्ति शब्द ना अर्थ मां जे प्रकारे 'सेवा' अने 'प्रेमभाव' समायेला छे, ते प्रमाणे आ बीजा प्रकार मां पण ए शब्द ना अर्थ मां बन्ने भावो समायेला छे". (१० १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१५)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

''

"परन्तु ए बन्ने प्रकार मां (तफावत ए छे के) बीजा प्रकार नी सेवा 'मानसी' छे, अने प्रेमभाव नुं स्वरूप ए छे के भक्त पोताना मनमां भाव एवो राखे छे के 'भगवान मारा प्रियतम छे अने हुं भगवान नी प्रियतमा छुं'.परंतु वेदसिद्ध भक्ति मां एकज प्रकारे भगवद-भजन छे, ज्यारे स्वतन्त्र भक्ति मां सर्व प्रकारे भगवद-भजनं छे. एटले अहीं सायुज्य सदृश कामभोजन छे. वेदसिद्ध भक्ति जन्य मोक्ष मां जेम सर्वेत्र ब्रह्मस्वरूप नो अनुभव थाय छे, तेम आ स्वतन्त्र भक्तिजन्य परामानंदानुभव मां सर्व प्रकार नी इच्छा परिपूर्ण थाय छे". (११ - १२ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१६)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

''

"वेदोक्त भक्तिंमां ज्यारे ब्रह्म साथे सर्व प्रकारे एकता नो अनुभव थाय छे त्यांरे ऊपर वर्णवेल सर्व प्रकारनो अनुभव थतो होतो नथी. आ बीजो प्रकार स्वतन्त्र एटला माटे छे के वेदे ए नथी बताव्यो, फलरुप जे प्रभु, तेमनी गेरहाजरीमा पण ए थई शके छे, आ विचक्षण वात छे, जे बुद्धिशाली ज् समजी शके छे". (१३ १/२)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१७)

****

"स्वमार्गीय भक्तिद् वैविध्य विवेकः"

""

"भक्ति ना ज़े बे प्रकार बधे शास्रमां वर्णव्या छे ते ऊपर। निरुपण कर्यु ते प्रमाणे छे. एक चरणारविन्द नी भक्ति अने बीजी मुखार्विन्द नी भक्ति. परंतु, आ वात श्रीमहाप्रभुजी ना सेवको ना ह्रदय मां ज् समजाय छे". (१५)　　　(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"समाप्त"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१८)

****

"स्वमार्गीय मुक्तिद् वैविध्य निरूपणम्"

""

"जीवोनो श्रीकृष्णचंद्रजी साथे सम्बन्ध थाय तेनेज भक्तिमार्गमां मोक्ष कहे छे. ए मोक्ष - 'भक्तिमार्गीय मोक्ष' बे प्रकार नो छे : १ जीवकृतिथी साध्य अने २ प्रभु कृतिथी साध्य" (१)　　　(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४१९)

****

"स्वमार्गीय मुक्तिद् वैविध्य निरूपण"

""

"मार्ग मां निष्ठा राखी, क्रमे करी जीवने कृष्ण संबंध थतां परमानंद मां जे प्रवेश थाय ते ते ज 'सायुज्य छे". (२)　　　(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२०)

****

"स्वमार्गीय मुक्तिद् वैविध्य निरूपणम्"

""

"प्रभु (कृपा करीने) जीवना ह्रदय मां पधारे तैनु नाम 'सद्यो मुक्ति'. आ प्रकारमां भक्ते कोई साधन करेलुं होतुं नथी. अत्यंत कृपा करीने स्वप्रमेयबले एटलेके पोताना स्वरुपबलथी स्वेच्छाए प्रभु जीवना ह्रुदय मां पधारे छे, अने ते ज क्षणे जीव मुक्त थाय छे. (३-४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२१)

****

"स्वमार्गीय मुक्तिद् वैविध्य निरूपणम् "

""

"उपरोक्त बन्ने प्रकारनी मुक्ति ना द्रष्टांत नीचे मुजब छे - (वेणुनाद थतां) जे गोपीजनो पोताना घरमांथी बहार न जई शक्या तेमना पुण्य अने पाप नो क्रमे करी क्षय थयो, परंतु जेओ श्रीकृष्णचंन्द्रजी पासे जई पहोंच्या ते रासमां रहेला गोपीजनोने प्रभुना आवेश मात्र थी क्षणमात्र मां 'मुक्तपणुं' प्राप्त थयुं" (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२२)

****

"स्वमार्गीय मुक्तिद् वैविध्य निरुपणम्"

""

"बे प्रकार वच्चे नो भेद आ रीते समजवो जोईए - 'जीव जईने प्रभुने मळे' ए एक प्रकार, अने 'प्रभु जईने जीव ने मळे' ते बीजो प्रकार" (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२३)

****

"स्वमार्गीय मुक्तिद् वैविध्य निरुपणम्"

"""

"आथी ज आपणा आचार्यचरणे संन्यासनिर्णय ग्रंथमां 'बर्हिचत्प्रकट: स्वात्मा' - अर्थात् 'जो आत्मा बहार प्रकट थाय अने ए अग्नि नी माफक ज्यारे प्रवेश करे, त्यारे सकल बन्ध नाश पामे छे' ए वगेरे श्लोको द्वारा मुक्ति नुं लक्षण आप्यु छे. (एने ज सद्यो मुक्ति कही छे)." (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"समाप्ता"

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२४)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रुप निर्णय"

''

आ ग्रंथमां श्रीहरिराय महाप्रभु पुष्टिमार्ग मां महत्व ना विषय "सेवा -साधन-फल विशे समजावी रहया छे.

" हवे श्रीवल्ल्भाचार्यजीना मार्गमां सर्वस्व- रुप एवी सेवा, साधन साथे अने दृष्टांत साथे विस्तारपूर्वक कहेवामां आवे छे" (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२५)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रुप निर्णय"

''

"प्रभुमां चित्तने परोवी देवुं एनुं नाम 'मानसी सेवा'. ते फलरुपा छे. निरोध रुपे कहेवामां आवेली ते मानसी सेवा मात्र व्रजवासीओ मां ज देखाय छे". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२६)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रुप निर्णय"

''

"प्रमेय बल थी उत्पन्न थयेलो एवो जे निरोध ते प्रभुए ए व्रजवासीओने कराव्यो हतो. ए निरोधनुं स्वरुप एवुं छे के तेमना भाव ने कारणे जीव प्रभुनो बनी जाय". (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२७)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रुप निर्णय"

''

"विरह ना कारणे तापक्लेशथी (प्रभुथी हुं विखुटो पड्यो छुं, प्रभु क्यारे मळे, एवी तालावेली थी प्रभु संबंधी) विचार करवामां आवे ए भाव. आवी भावात्मक स्थिति ज्यारे थाय त्यारे रसात्मक प्रभुनो भक्त ना हृदयमां आविर्भाव थाय छे". (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२८)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रुप निर्णय"

""

"विरह ना कारणे बाहय कोई पण पदार्थ नी स्फुरणा न थतां विप्रयोग रस ह्रदय मां प्रकट थाय त्यारे रसात्मक प्रभु नो त्यां आपमेळे प्रादुर्भाव थाय छे". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४२९)

****

" स्वमार्गीय सेवाफल रुप निर्णय"

""

"एज प्रभु ह्रदयमां सकल तीला नो अनुभव करावे छे, एटसे रसात्मक रुप प्रभु नी स्थिति ह्रदयमां सर्वकाल रहे छे". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३०)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रुप निर्णय"

"" ""

"एवा ज प्रकार नी स्थिति श्रीस्वामिनीजीओ / व्रजांगनाओ ना ह्दयमां जाणवी. श्रीमहाप्रभुजीए 'नमामि ह्रदये शेषे ....' (सु. का १०.१.१) - 'ह्रदय रुपी शेषशैया पर लीला रुपी क्षीरसागर मां शयन करता अने हजारो लीलाओ रुपी लक्ष्मीथी सेवाता कलानिधि प्रभुने नमन करुं छुं' - त्यां ए ज भावात्मक स्थिति कही छे". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३१)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रुप निर्णय"

""

"जेमनामां आवा प्रकार नी स्थिति होय छे तेमने स्वतंत्र भक्तो कहेवाय छे, एवी ज रीते तेमनी भक्ति पण स्वतंत्र होय छे, बीजी रीते ए स्वतंत्र न थई शके कारणके आ प्रकार नी भक्तिमां प्रभुना बहार प्राकट्य नी जरुर नथी होती". (८ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३२)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

"एवी स्वतन्त्र भक्ति रासलीलामां रहेल व्रजांगनाओ मां ज देखाय छे तेम अन्य स्थाने पण देखी शकाय छे. ए स्वतन्त्र भक्तिने प्रभुना मुखार्विन्द ना वतार श्रीमहाप्रभुजी मां प्रभुए स्थापी छे. श्रीमहाप्रभुजीने आश्रये गयेला बगगवदीयोने ए। भक्ति श्रीमहाप्रभुजीनी कृपाथी प्राप्त थाय, केमके एवा शरणे आवेला जीवो ने माटे ज प्रभुए समर्पण नी आज्ञा। करी छे". (१० १/२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३३)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

"श्रीठाकोरजीए ए भक्ति नुं दान श्रीमदाचार्यचरण श्रीमहाप्रभुजीने कर्यु छे, अने बीजाओ ने ए दान श्रीमहाप्रभुजीनी कृपा द्वारा थवानुं छे. आ बन्ने वात निर्विवाद छे". (११ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३४)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

"आपणा मार्ग मां रूचि थाय त्यांरे समजवू के आपणी ऊपर (भगवद) कृपा छे. हवे सौथी पहेला योग्यता प्राप्त करवा माटे जे 'आत्म समर्पण' - ब्रह्मसम्बन्ध छे ते श्रीआचार्यजी द्वारा ज करवुं एम काहेवामां आव्यू छे, माटे श्रीमदाचार्यचरण द्वारा ज ए थवुं जोइए". (१३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३५)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

"माटे श्रीआचार्यजी द्वारा ए प्रमाणे समर्पण करी प्रेम पूर्वक नी सेवा सिद्ध करवी. ए समर्पण अधिकार रूप छे, अर्थात योग्यता उत्पन्न करनार छे, एटले के समर्पण पछी नी सेवा अधिकार वाळी छे, सत्तावाळी समर्थ बने छे. ऐवी तनु-वित्तजा सेवा, ते वास्तविक अर्थात अंतःकरण पूर्वक नी समर्पण भावना ने हृदय मां जन्म आपे छे". (१४ /२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३६)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"सर्व वस्तुओनो (प्रभूने) विनियोग करावावाथी समर्पण सार्थक थाय छे, अने ए विनियोग द्वारा (प्रभुमां उत्तरोत्तर) पेम, आसक्ति वगेरे बधु थाय छे. (प्रभुनी) विशेष कृपा थतां, प्रपंच अर्थात जगतं नुं विस्मरण थतां ज व्यसन दशा प्राप्त थाय छे". (१६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३७)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"आ ज 'निरोध' छे, ए ज 'मानसी सेवा'. व्यसनादि अवस्था मां आसक्ति कारण रूप छे. (प्रथम मार्ग रुचि, पछी प्रेम अने पछी आसक्ति, अने त्यारपछी व्यासन दशा थाय छे, माटे आ श्लोक मां आसक्ति ने व्यसन नुं कारण कही छे)". (१७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३८)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"प्रभुमां आसक्ति थवाथी ज प्रपंच - जगत नुं विस्मरण थाय. श्रीकृष्णचंद्रजी आ आसक्ति द्वारा ज प्रथम जगत नुं विस्मरण वृजांगनाओ ने कराव्यू. एना दृष्टान्त रुपे जे क्रमे तेमने फल प्राप्त थयु ते क्रमे अहीं निरुपण करवा मां आव्यु छे." (१८ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४३९)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रुप निर्णयः"

""

"श्री नंदरायजीना घरमा प्रकट थईने, ए व्रजांगनाओ ने समर्पण करावी, त्यां स्वयं लीला। करता प्रभु शोभावा लाग्या. श्रीमद भागवत (१०. ५ .९) मां 'आत्मानं भुषयांचक्रुः' कह्यु छे, अर्थात व्रजांगनाओए

जन्मोत्सव प्रसंगे पोताना आत्माने शणगार्यो, ते तेमना समर्पण नुं निरुपण छे". (२०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४४०)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"प्रभु सुखदान देवा माटे पुनः सामर्थ्य बतावे त्यां सुधी समर्पण नुं फल - वच्चे ना समय मां, व्रजांगनाओ ने (प्रभु अंतर्धान थतां) थयेल ताप-कलेश कहेवामां आव्यो छे." (२१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४४१)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"ए ताप-क्लेशने लीधे पोताने इष्ट एवा रूप नो आविर्भाव बाल्यकाल मां पण थई शके छे, अने ए ज ताप-क्लेश थी भावि मां थनारी समग्र लीलाओमां सुख नो अनुभव छे.". (२२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४४२)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"यहृयर्यंगना" - (भा. १०-८-२४, तृणावर्त वध नो प्रसंग) वगेरे प्रसंगो मां पण एज वात सारीरीते निरुपवामां आवी छे. आगळ जतां क्रमशः समग्र निरोध नुं निरुपण करवा मां आव्यू छे". (२३)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४४३)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"निरोध कराव्या छतां जेओ ने रमण करावववा नी प्रभुनी इच्छा न हती, ते (अंतःगृहगता) गोपीजनो ने प्रभुए मोक्ष आप्यो तेम कहे◌ेवामा आव्यू छे. वेणुनाद श्रवण करीने, प्रभु पासे जवानी इच्छा होवा छतां,

जेओने घरमां रोकाई जवुं पड्युं ते गोपीजनोना देहो न रह्या; तेमां कारणभूत प्रभु नी इच्छा हती, जीव नी नहीं. आ वात 'स्थापयित्वा' शब्दो थी कही छे''. (२४ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४४४)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"प्रभु स्वेच्छाथी जीव ने पोतानामां हमेंश ने माटे समावी दे तेंनु नाम मोक्ष. कोइक वार संयोग रस नो अनुभव कराववा प्रभु ए जीव ने बहार काढ़े छे पण खरा, परंतु ए लीला नो अनुभब करावी पाछा अंदर समावी दे छे." (२६) (सेवाफल मां कहेलु 'सायुज्य फल' आ प्रकार नुं छे). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४४५)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"फलात्मक भक्ति तो आ मुक्ति करतां जुदा ज प्रकार नी छे. तेमां प्रभु पोते भक्त ना ह्रदय मां स्थिति करी ने रहे छे ; वळी जेटली लीला- कृतिओ छे, ते बधी सदैव भक्त ना ह्रदय मां बिराजी ने छे, अने जीव नुं पूर्व रूप हमेंशा कायम राखे छे " (२७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४४६)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"आत्यंतिक विप्रयोगनूं बधे ठेकाणे निरुपण करवा मां आव्यू छे. आ फल मोटेभागे सेवा मां पण प्राप्त थाय छे. आ फल (साधन साध्य नथी, परंतु कृपा ना) दान द्वारा साध्य छे. आ वात (सेवाफल ग्रन्थ मा) 'अलौकिकस्य दाने हि चाद्यः सिध्येन मनोरथ:' वाक्य थी स्पष्ट रीते वर्णवी छे. आवु दान करवा माटे ज् श्रीमहाप्रभुजीने प्रकट थवुं पड्यु छे''. (२८-२९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

""श्रीहरिराय मुक्तक" (४४७)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"तेथी सर्वभावथी दरेक रीते ए श्रीमहाप्रभुजी नो सदैव आश्रय करवो. ए श्रीमहाप्रभुजी ना अनन्य विश्वास वाळा मनुष्योने अवश्य फल सिद्‌ध थशे." (३०)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

. "श्रीहरिराय मुक्तक" (४४८)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"आथी सर्व कांई मात्र कृपाथी ज साधी शकाय छे. हवे जो एवा प्रकारनी कृपा न थाय तो एवा मनुष्य ने सायुज्य मुक्ति एज फल मले एम चोक्कस जाणवु." (३१)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४४९)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"आ 'सायुज्य' (ज्ञानमार्गीय सायुज्य नी जेम) अक्षरब्रह्म मां लीन थतुं नथी, परंतु श्रीपुरुषोत्तम मां थाय छे. भक्तिमार्गीय त्रण फल (सेवाफल मां) आने मध्यम फल कहेवाय छे". (३२)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४५०)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"तत्त्वार्थदीपनिबंध (शा.प्र.१४)" मां 'आदिमूर्तिः कृष्ण एव सेव्यः सायुज्य काम्ययाः' वाक्यथी आ वात कहेवामां आवी छे. 'दुर्लभे न सोच्यते' - ए भक्ति दुर्लभ छे, माटे एनुं निरुपण अही कारवामां आव्यू नथी, एम् श्रीमदाचार्यचरण कहे छे. ते उपरथी आ वात नी प्रतीति थाय छे" (३३)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४५१)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"तेथी अनुग्रह ना भेद थी अनेक प्रकारना फल कहेवाय छे - सायुज्य, सद्‌योमुक्ति, अने भक्तिमार्गनी रीते सेवा ना त्रण फलो पैकी पहेला बे फलोना अनुभव माटे भगवान नी कृपा उपरांत अनुकूल कुटम्ब स्थिति

वगेरे आवश्यक छे, अने त्रिजु फल जे भक्तिमार्गीय सेवा ते प्रभुनी साधारण कृपा होय तो पण ते प्राप्त थाय छे. आ त्रणे फलो मां कालादि कांई करी शकता नथी". (३४ - ३५)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४५२)

****

"स्वमार्गीय सेवाफल रूप निर्णयः"

""

"आ प्रमाणे फल विशे विशेष प्रकारनुं ज्ञान मेळवी फलरुप सेवाने आचरी रहेला जीवोए ए फलने देवावाळा श्रीमदाचार्यचरण नो सदैव आश्रय राखवो जोइए". (३६)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

समाप्त

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४५३)

****

"पुष्टिमार्गीय स्वरूप निरुपणं"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"श्रीवल्लभाचार्यजी ना चरणकमल नी कृपा थी पुष्टिमार्गमां जे स्वरूप नी प्राप्ति आपणे करवानी छे तेनो निर्णय अहीं करवामां आव्यो छे". (१)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४५४)

****

"पुष्टिमार्गीय स्वरूप निरुपणं"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"श्रृंगार रूप ना आधार रूप जे स्थायिभाव होय छे ते प्रभु छे. रसशास्त्र मां जेवा प्रकार ना रस नी वात कारावva मां आवी छे, तेवां ज नृत्य - बंध आदि स्वरूप थी प्रभूने जाणवा. एमां क्रिया पण कारण रूप च्छे". (२ १/२)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४५५)

****

"पुष्टिमार्गीय स्वरूप निर्णयः"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"नृत्य - बंध वगेरे क्रियाओ थी शास्रोमां कह्या प्रमाणे उमळका पूर्वक जे स्वामीनी भावनुं उद्‌बोधन (जाग्रत) करवा नुं छे, ते ज आपणा मन्मथ प्रभु छे, तेवो गुढभाव छे, जे स्त्रीभाव हृदय मां रहेलो होय छे, ते

कृपारस नी खाण जेवो होय छे. आ भाव सुखरूप तो त्यांरे ज थाय के ज्यारे भक्तनो समागम थवा एनुं फरी फरी ने चर्वण थाय अने तेना द्वारा एनो फरी फरी वार अनुभव थाय. ए रस ना भोक्ता प्रभु छे" (३-४-५)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय.मुक्तक" - (४५६)

****

"पुष्टिमार्गिय स्वरुप निर्णयः"

""

"कामाख्यं सुखमुत्कृष्टं कृष्णो भुंक्ते न चापरः" (भा. १०-३० सुबोधिनी. कारिका - ५ १/२) मां आ वात (जे आगल ना श्लोक मां कही) नुं निरुपण करवामां आव्यु छे. ए सुख मात्र भाव थी ज भोगवी शकाय तेवुं होवाथी प्रभु एना भोक्ता छे ते समजी शकाय छे". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" - (४५७)

****

"पुष्टिमार्गिय स्वरुप निर्णयः"

""

"कृपाबलथी ए प्रभुने एवा अतिगूढ जाणवा अने जेमने ए प्रभु नो आश्रय सदा सिद्ध छे तेवा आश्रितो ए, प्रीतिरुप सेवा थी, सदा ए ज प्रभुनी सेवा करवी". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

समाप्त

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४५८)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चिंतन प्रकार"

""

आ ग्रंथमां श्रीहरिराय महाप्रभु पुष्टिमार्ग मां प्रभुनुं चिंतन केवीरीते करवुं जोईए ते समजावी रह्या छे.

"श्रीमद् वल्लभाचार्यजीना चरणकमलोनी कृपा थी आपणा मार्गमां सेव्य- स्वरुप प्रभुना चिंतन नी रीत हवे कहेवामां आवे छे". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४५९)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चिंतन प्रकार"

""

"वनवनमां, खास करीने वृक्षो अने लता वगेरे मां परीभ्रमण करतां, विरह मां विकल बनेला, जेमना वस्त्र खसी गया छे, जीभ सुकाई गई छे, केश विखराई गया छे तेवा, द्वेषवाला, हे नाथ ! हे नाथ ! एम बोलता गोपबालिका, (रसनायिका मारा प्रभुना स्वामिनी) नी हमेंशा भावना करवी". (२-३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६०)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चिंतन प्रकार"

''

"जेमना चरणो सतत चालता ज रहे छे, दुःखने लीधे वारंवार जेमना नेत्रो बिडाई जाय छे, प्रभुना चरणकमलमां शोभित चिन्होनी धूलमां पडेली छापने जोई व्याकुल थयां छे एवा, जेमने दावाग्नि नी ज्वालाओ देखाई रही छे, जेओ निसासा मुकी रह्या छे अने पृथ्वि पर पडीने अत्यंत विरह थी आकुल-व्याकुल चित्तवाला थया छे, तेवां गोपबालिका (रसनायिका मारा प्रभुना स्वामिनी) नी हंमेशा भावना करवी" (४-५)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६१)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चिंतन प्रकार"

''

"जेमने ह्रदयमां थता भावो द्वारा श्रीगोकुलनाथजी ना दर्शन थई रह्या छे तेवा, 'हे नाथ , मने आप उठावी लो' एम वारंवार व्याकुलताथी बोलतां, विचारशून्य, चित्तमां उद्भवती चिंताथी आकुल व्याकुल चित्तवाला, मनमां उत्पन्न थयेला गूढ भावात्मक प्रिय प्रभुना प्राकट्यने झंखता गोपबालिका (रसनायिका मारा प्रभुना स्वामिनी) नी हमेंशा भावना करवी". (६-७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६२)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चिंतन प्रकार"

''

"प्रभुनी समग्र लीला नुं अनुकरण करी प्रभुनी भावना करतां, करोडो कामदेवना जेवा लावण्यवाला भावात्मक प्रिय प्रभुनो ज जेमने आश्रय छे तेवां, नित्यललाना आश्रवाला, नित्थ रति करवामां तत्पर, अत्यंत

आर्द्र प्रेमथी तरबोल हृदय रुपी कमल माटे जेमने मान छे तेवा गोपबालिका रसनायिका मारा प्रभुना स्वामिनी नी हंमेशां भावना करवी". (८-९ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६३)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चिंतन प्रकार"

""""""""""""""""""""""""""

"ते एक स्वामिनीजी ना ज हृदयमां नित्य रहेनार एमना भावात्मक प्रभु ते ज श्रीकृष्ण छे, ते हजारो लीलाओथी युक्त तेमज तेमनी लीला सामग्री सहित ते सदानन्द रुप, नन्द वगेरे थी सदा लालित प्रभु श्रीकृष्णचंद्रजी नी भावना करवी". (१०-११) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६४)

****

"श्रीमत्प्रभोश्चितन प्रकार"

" """"""""""""""""""""""""""

" सिद्धांतमुक्तावली मां आ ज वातनी 'आत्मानंद समुद्रर्थं कृष्णमेव विचिन्तयेत्' - अर्थात् आत्मानंद रुपी समुद्रमां रहेला श्रीकृष्णचंद्रनी कामना करवी एवी श्रीमदाचार्यचरणे आग्या करी छे. ए वाक्यो नो आशय प्रभु कृपाथी लख्यो छे. आने जाणी सर्वजनोए सदैव श्रीहरि भगवान नुं चिंतन करवुं" (१२-१३)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

समाप्त

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६५)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्

"""

"(आगल ना ग्रथमां प्रभुना चिंतन नो प्रकार बतावी हवे आ ग्रथमां) जेमनो अंगीकार पुष्टिभक्तिमार्ग मां थयेलो छे, तेवा नीजजनोने बोध आपवा माटे, सुक्ष्म रीते विचार करीने स्वमार्गनो सर्व प्रकार स्पष्ट करवामां आवे छे" (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६६)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"अष्टाक्षर मंत्र वडे नाम ग्रहण करीने, शरणे जईने, ब्रह्मसंबंध मंत्र वडे श्रीगुरुदेव द्वारा सर्व समर्पण करीने सेवा करवी. ब्रह्मसंबंध थवाथी सेवा नो अधिकार प्राप्त थाय छे, माटे ब्रह्मसंबंध कर्या पछी सेवा अवश्य करवी जोईए". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६७)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"सेवानी सार्थकता सिद्ध करवा माटे अने देहादि नो प्रभुनी सेवा सिवाय अन्यत्र विनियोग न थाय ते माटे (पोताना) तनथी - धनथी सेवा करवी. ए प्रकारे तन अने धन थी साधन रुप सेवा करतां, फल रुप मानसी सेवा सिद्ध थशे. ए मानसी सेवा आ मार्गमां फल रुप छे एम समजवुं" (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६८)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"अलौकिक सामर्थ्य, सायुज्य अने सेवोपयोगी देह, ए त्रणेय प्रकार मानसी सेवाना फलरुप छे, अर्थात् ए त्रणेय फल मानसी सेवाथी सिद्ध थाय छे. माटे श्रीमदाचार्यचरणे 'सेवाफल विवरण' ग्रंथमां 'सेवायां तु फलत्रयं' एम सेवाना फल रुपे निरुप्या छे." (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४६९)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"सेवा तो, मानसी, एक सरखी ज छे, माटे फलरुप थया पछी पण एवी ज रहेवानी, विलक्षण थशे नहीं. जे सेवा निरंतर करवामां आवती होय ते ज सेवा प्रभुनी कृपाथी फलरुप बने छे, एटले सेवामां कांई तफावत पडतो नथी. एटला माटे सेवाना बधा प्रकार फल रुप छे, केमके आ प्रकारो फलरुप मानसी सिद्ध थया पछी थाय छे''. (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७०)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"प्रभुए जेवुं वरण कर्यु होय तेवा प्रकारे सेवा प्राप्त थाय छे. एटले के प्रभुए कृपा करीने जेवा उत्तम, मध्यम अथवा कनिष्ट अधिकारनुं दान कर्यु होय तेवी ज सेवा ए जीव करी शके छे. ए ज सेवा पछीथी फलरुप मानसी थाय छे. माटे फलरुप मानसी सेवा अने ते पहेलानी सेवा, ए बन्ने ना तफावत साथे कहुं छुं". (६)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७१)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुणम्"

''

"सेवाना ए प्रकारो 'सेवाफल' नामना ग्रंथमां श्रीमहाप्रभुजीए समजाव्या छे. सेवाना त्रण फल छे - एक - अलौकिक सामर्थ्य, बीजु - श्रीपुरुषोत्तम मां सायुज्य, अने त्रीजु - सेवानो अधिकार प्राप्त थाय तेवुं वैकुंठादि मा दिव्य देह नी प्राप्ति". आम पुष्टिमार्गमां सिद्धातोनो सुक्ष्म संग्रह करवामां आवेलो छे. (७ - ८)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७२)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

* हवे आगल श्रीहरिरायजी पुष्टिमार्ग ना विविध सिद्धांतो समजावे छे *

"शरणागति"

''''''''''''''''''''''''''

"जे जीव प्रभुने शरणे गयेलो छे, तेणे शुं करवुं जोईए ते कहेवामां आवे छे. 'शरणे गयेलो' तेने समजवो, जे पुष्टिमार्ग ना गुरु श्रीमहाप्रभुजी द्वारा शरणागत होय. तेओ आ मार्गना आचार्य छे. (परंपरागत रीते आप निजकुलमां बिराजी परोक्षमां तेमना द्वारा जे जीवो प्रभुने शरणे जाय छे, तेओने पण शरणे गयेला समजवा)". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७३)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"(उपर कह्या प्रमाणे) शरणे गया पछी अने प्रभुए शरणे लीधा पछी, मारा स्वामी, मालिक, नाथ, सर्व दुःखहर्ता श्रीहरि ज छे अने हुं तेमनो सेवक छुं, दास छुं, एवी भावना करवी जोईए. भक्ति एटले सेवा. सेवा नी सिद्धि माटे लोकनां व्यवहारना कार्यो करवां, अने वेदमां कहेला वर्णाश्रम ना नैमित्तिक धर्मो पण आचरवा". (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७४)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"अन्यमार्गनो आश्रय न ज करवो. ज्यां प्रभु न बिराजतां होय ते देश नो आश्रय न करवो, अर्थात् ज्यां प्रभु प्रत्यक्ष दर्शन न आपतां होय त्यां रहेवुं न जोईए. भगवानने छोडीने तीर्थमां ज मारुं कल्याण थशे तेम मानी तीर्थनो आश्रय करवो नहीं. अभिमानथी हुं ज करुं छुं, अर्थात हुं ज कर्ता छुं तेम न मानवुं". (११)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७५)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"वैदिक, तांत्रिक, यांत्रिक मंत्रो उपर पोतानो बधो आधार राखवो नहिं. मंत्रोथी प्रभू मने मलशे एम धारीने एवा मंत्रोनो आश्रय करवो नहीं. तेमज यग्य-यागादि कर्म करीश तो ज प्रभु मलशे एम मानीने बीजा कर्मो नो आश्रय न करवो''. (११ १/२). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७६)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"बधा दोषोनी निवृत्ति थाय ते माटे प्रभुनी सेवा, प्रभुनुं स्मरण करवुं, प्रभुमां ज धर्मनी दृष्टि करवी. धर्मस्वरुप प्रभु श्रीहरि छे एम समजवुं. श्रीहरि विना बीजो कोई आश्रय के धर्म नथी एम समजवुं. बीजा धर्मो परथी आसक्ति उठी जाय त्यारे सर्व दोषो चाल्या जाय. मुख्य धर्म रुप प्रभु ज छे, तेम दृढ थई गया पछी

बीजानो आश्रय वगेरे छोडवाथी कोईपण दोष लागे नहीं. दोषनी निव।त्ति माटे श्रीहरिने धर्म स्वरुप जोवा." (१२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७७)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुर्गम्"

""

"प्रभु पोतानी ईच्छाथी ज सर्व करशे" ए सिद्धांत द्दढ करवो ए 'विवेक'. विवेक धैर्य अने आश्रय ए प्राप्त न थया होय तो दिनताथी एम समजवुं के प्रभु अर्थ रुप छे. अर्थ नामनो बीजो पुरुषार्थ पण मारा प्रभु ज छे, एम समजवुं. भक्तो पासे प्रभुने प्रसन्न करवानुं कोईपण साधन होय तो ए मात्र दीनता ज छे, एम श्रीमहाप्रभुजी सुबोधिनीजीमां आग्या करे छे" (१२ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७८)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"दरेक जीवने सुखनी अने आनंदनी ईच्छा थाय छे. 'मने सुख केम मले, अने ए कायम केम रहे, एवा आनंदनो ल्हावो केवीरीते लई शकाय ?', एवी कामना दरेकना मनमां थाय छे अने तेने माटे जीव अनेक प्रयत्नो करेछे, पण ए बधा नकामा छे. आपणी ए कामना सफल करवा माटे, पूर्ण आनंद स्वरुप श्रीहरि ज छे, एम जाणवुं जोईए. जे पोते आनंदथी परिपूर्ण होय ते ज आनंद माटे नी कामना पूर्ण करी शके. प्रभु विना बीजु कोई पूर्णानंद नथी, एम जाणीने, ए ज बधी कामना पूर्ण करशे तेम निश्चय करीने "काम" रुप पुरुषार्थ पण श्रीहरि ज तछे तेम समजवुं.". (१३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४७९)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"साधनो करवाथी मोक्ष थतो नथी, केमके श्रीहरि ज मोक्षरुप छे. ए श्रीहरिना दास थई जईए तो मोक्ष ज मली गयो एम समजी लेवुं. ज्यारे ए दयालु कृपा करीने पोताना दास तरीके जीवनो अंगीकार करे त्यारे भगवदीयपणु प्राप्त थई जाय. ए प्राप्त थतां मोक्ष मली ज गयो एम समजवुं. सदानंद श्रीकृष्णना दासानुदास

सेवको मोक्ष नी आकांक्षा कदापि राखता नथी. अर्थात् प्रभुना दास थवुं ए ज मोक्ष छे अने मोक्षरुप पुरुषार्थ प्रभु छे एम जाणवुं ते खरुं ग्यान छे." (१४ १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८०)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"कलिकाल महादोषयुक्त छे, अने एनो दोष सर्वने लागे छे, दोष उत्पन्न करनारा अन्यमार्ग करतां निर्दोष भक्तिमार्गमां रहेवुं विशेष कल्याणकारक छे, कारणके श्रीहरि ज कालरुप साधन थवाथी, तेमां काल बाधा करतो नथी. बीजा देशनो आश्रय न करवो केमके देशरुप पण प्रभु पोतेज छे. तीर्थनो आश्रय न करवो तेम कहेवानुं कारण पण द्रव्यरुप साधन प्रभु ज छे. तेवी ज रीते मंत्ररुप साधन तथा प्रभूनी सेवा ज कर्म होवाथी मंत्ररुप तथा कर्मरुप साधन पण श्रीकृष्ण ज छे.

आम देश, काल, द्रव्य, कर्ता, मंत्र अने कर्म ए छ साधन दोषयुक्त थया छे, परंतु भक्तिमार्ग निर्दोष प्रभुनो मार्ग होवाथी, तेनो आश्रय करवाथी सर्व साधन रुप श्रीकृष्ण ज छे, तेथी दोष लागतो नथी तेम निश्चय जाणवो". (१५ १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८१)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"प्रभुनुं शरण ग्रहण कर्या पछी प्रायश्चित वगेरेमां मां बुद्धि राखवी नहीं. मतलब के प्रायश्चित करवाथी ज हुं पवित्र थईश एवी भावना शरणे गया पछी राखवी नहीं" (१६). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८२)

****

"स्वमार्गीय-शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्''

""

"दूर न करी शकाय तेवा अनेक प्रकारना दोषो थयेला होय, तो पण 'मारुं शरण मात्र श्रीहरि ज छे' एम स्मरण करवुं जोईए. आथी एवो निश्चय करवो के प्रभुनुं शरण स्वीकार्या पछी नाना-मोटा दोष थई जाय तो

तेने दूर करवा कोई प्रायश्चित न करतां ' हुं प्रभुने शरणे छुं, सर्व दोष रहित मार्गमां प्रभुए मारो अंगीकार कर्य छे, एवुं स्मरण करतां रहेवुं. माटेज श्रीमहाप्रभुजीए आग्या करी छे - ' अशक्य के सुशक्य मां सर्वथा प्रभु ज मारुं शरण छे". (१७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८३)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"पोताना स्वामी प्रभु सिवाय बीजा कोईनो पण आश्रय ते 'अन्याश्रय' कहेवाय, जे कदापि न करवो, केमके ते बाधक छे तेम श्रीमहाप्रभुजी आग्या करे छे. श्रीगुसांईजी पण आग्या करे छे के अन्य देवोनी गंध पण गलु कपाववा बराबर छे. जेम स्त्री पोताना स्वामीनुं गृह छोडी अन्यत्र जती नथी तेम ज्यां पोताना स्वामी न बीराजतां होय त्यां जवुं नहीं. कोईपण मुश्केली आवे तो पण अन्यत्र के प्रभु पासे पण प्रार्थना करवी नहीं, केमके सर्वग्य-सर्व व्यापक होवाथी प्रभु बधुं जाणे छे. प्रभुए उत्तमोत्तम फल आपवानो संकल्प कर्यो होय, छतां दुःख आपीने परिक्षा करतां होय, माटे धीरज राखवी. प्रभु सर्व समर्थ छे, तेथी योग्य ज करशे तेम दृढ वश्वास राखवो." (१८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८४)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"पोताना स्वामी प्रभुमां कदि अविश्वास लाववो नहीं. हनुमानजीने ईन्द्रजीते ब्रह्मास्त्रथी बांध्या हतां, परंतु तेमां रावणे अविश्वास लावी दोरडाओ थी बांध्या, जेथी ब्रह्मास्त्र नुं बल चाल्यु गयु. आ दृष्टांतथी समजवुं के गमे ते थाय तो पण प्रभु पर अविश्वास करवो नहीं. तेओ जे करे छे ते सारुं ज करे छे, एवो दृढ निश्चय राखवो. लौकिक अने वैदिक कार्योमां आसक्ति राखवी नहीं. लौकिक कार्यो यश के कीर्ति मेलववानी ईच्छा अथवा वैदिक कार्यो स्वर्गादि फलनी ईच्छा थी करवा नहीं." (१९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८५)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"लौकिक-वैदिक कार्यो तेमां आसक्ति राख्या विना न छुटके करवां, जेवीरीते मजुर गमे तेटलो किंमति सामान लई जतो होय, परंतु ए माल साथे तेनो कोई संबंध होतो नथी, एतो मात्र तेने भार रुप समजे छे, तेम ए कार्यो बोजा रुप गणवा. तेमां ममतानो त्याग करवो. जेम मजुर उपाडेला बोजामा ममता राखे तो दुःखी थाय, तेम लौकिक-वैदिक कार्योमां ममता राख्या विना साधी लेवा. जेम मजुरने बोजो ठेकाणे पाड्या विना चैन नथी पडतुं तेम कार्य रुप बोजो पोते अलग रहीने पार पाडवो." (२०)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८६)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"हृदयमां लोभ नहीं करवो कारणके द्रव्यनो लोभ थवाथी एनी प्राप्ति माटे अने प्रयत्नो करवा पडे छे, अनेक प्रवृत्तिओ मां जोडावुं पडे छे. तेने लीधे प्रभुनी सेवाथी विमुख थवुं पडे छे. जे आवी मले तेमां संतोष मानीने धननो प्रभुनी सेवामां करवो. परात्पर पूर्ण पुरुषोत्तम उत्तम पदार्थोना भोक्ता छे, तेथी प्राप्त होय तेवा उत्तम पदार्थो प्रभुने अंगीकार कराववा, एमां लोभ नहीं करवो. प्रभुनी ईच्छाथी जे प्राप्त थयुं होय तेनाथी प्रभुनी सेवा करवी". (२० १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८७)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"शरण ना जे धर्मो होय ते सिद्ध थतां शरणे जवुं. उपर जे धर्मो बताव्या ते शरणे गयेला जीवो ना धर्मो छे. शरणे गया पछी जीवे शुं करवुं जोईए ते तेमां जणाव्यु छे. शरणे गया पहेला जीवे केटलाक धर्मो सिद्ध करवाना होय छे. निःसाधनता, दीनता आदि अने ते सिद्ध थया पछी शरणे जवुं जोईए' (२१)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८८)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"श्रीकृष्णना आश्रयनुं पोषण करनार 'विवेक अने धैर्य' छे. विवेक एटले 'श्रीहरि पोतानी ईच्छा मुजब बधुं करशे' तथा धैर्य एटले 'बधा दुःखो सहन करवा'. ए बन्ने श्रीकृष्णनो आश्रय दृढ थवामां निरंतर कारण रुप छे. ए विवेक, धैर्य अने श्रीकृष्ण ना आश्रय नुं स्वरुप श्रीमदाचार्यचरणना 'विवेकधैर्याश्रय' ग्रन्थ थी समजीने विवेक धैर्य अने आश्रयनी भावना ह्रदयमां करवी जोईए". (२२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४८९)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"श्रीकृष्णनो आश्रय करीने आ (शरणागतिनो) मुख्य धर्म छे ते कह्यो. श्रीमहाप्रभुजी नो आश्रय करीने, शरणे जई ने , शरण गयेलाना धर्मो जाणीने श्रीकृष्णनो आश्रय करवो". (२३) (अहीं सुधी 'शरणागति' नो सिद्धांत समजावी हवे 'समर्पण' नुं तात्पर्य कहेशे). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९०)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"अगाउ कह्यु तेम 'शरण धर्म' सिद्ध थया पछी जीवे 'समर्पण' करवुं जोईए. जीवने ब्रह्मसंबंध थाय अने ए सर्वस्व मांथी अहता-ममता छोडीने प्रभुने ते प्रभुने समर्पे तेने 'समर्पण' कहेवाय. समर्पण कर्या पछी तेने सार्थक करवा माटे शुं करवुं जोईए ए हवे कहेवामां आवे छे". (२४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९१)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"जेम ब्राह्मणना बालकने गायत्री मंत्रना उपदेश द्वारा यग्योपवित संस्कार थया पछी वैदिक कर्मो करवानो अधिकार मले छे, तेम ज्यारे जीवने ब्रह्मसंबंध थाय छे त्यारे ते सेवानो अधिकारी बने छे. श्रीवल्लभ द्वारा ब्रह्मनो संबंध थवो ए अलौकिक संस्कार छे. त्यार पछी निरंतर सेवा करवी जोईए. जेम यग्योपवित थया पछी जो ब्राह्मण संध्यादिक न करे तो ब्राह्मणपणु नष्ट थई जाय तेम ब्रह्मसंबंध थया पछी सेवादिक न करवाथी वैष्णवपणु न रहे. कारणके ब्रह्मसंबंध थया पछी जीव नो देह तथा देह संबंधी बधी वस्तुओ

भगवान साथे थई जाय छे. माटे ते सर्वनो विनियोग निरंतर भगवान नी सेवामां करवो जोईए" (२५)(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९२)A

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"श्रीमहाप्रभुजी 'सिद्धांत रहस्य' ग्रंथमां आग्या करे छे के 'ब्रह्मसंबंध करवाथी सर्व दोषो दूर थाय छे, सर्व.लोकोना जीव अने देह ना सर्व दोषो नाश पामे छे तथा पूनः लागता नथी'. तदनुसार भावना करवी के पोते सर्व दोषोथी मुक्त थई गयेलो छे. जीव स्वभावथी दुष्ट छे, परंतु प्रभु दोष रहित अने सम होवाथी, एमनो.संबंध भगवान साथे थवाथी जीव पण दोष रहित अने सम थई जाय छे. माटे ब्रह्मसंबंध थया पछी कोई पण समये प्रभुने समर्प्या विना नी वस्तु पोताना उपयोगमां लेवी जोईए नहीं". (२६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९२)B

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"सेवकनो ए ज धर्म छे के पोताना स्वामी नी आग्याथी तेमना उपयोगमां आवी गया पछी जे कांई मली जाय तेज उपयोगमां लेवुं जोईए. तेवी ज रीते प्रभुने समर्पिने पछी प्रसादि अन्न ज लेवुं. असमर्पित पदार्थना भक्षणथी ब्रह्मसंसंधनी भावनानो नाश थाय कारणके प्रभुने न समर्पायेली वस्तु ब्रह्मसंबंध विनानी गणाय, तेथी तेना उपयोगथी 'हुं दोष रहित थयो छुं' एवी भावना नष्ट पामे. माटे सर्वथा कोईपण समये असमर्पित अन्न लेवुं नहीं". (२७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९३)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुणम्"

""

"लोक व्यवहारना विवाहादि कार्योमां प्रथम बधी वस्तुओ प्रभुने समर्पण करीने पछी तेनो उपयोग करवो. वैदिक यगय ईत्यादि कार्यो मां पण पहेला प्रभुने समर्प्यापछी ज जोयती वस्तुओ उपयोगमां लेवी. माटेज सर्व कार्योमां पहेला प्रभुने समर्पण अवश्य करवुंजोईए. श्राद्धादिक वैदिक कार्योमां विष्णुने निवेदन

करेला अन्नथी बीजा देवताओनुं यजन करवानुं पद्मपुराणमां कह्यु छे. श्रीभागवतमां ए सिद्धांत प्रकट छे".
(२८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (४९४)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"जे वस्तु जेवीरीते समर्पी शकाती होय ते प्रकारे समर्पवी जोईए. यग्ययागादिकमां अने विवाहादिकमां सर्व पदार्थो प्रभु समक्ष धरवा अने प्रभुनी आग्या लीधा पछी जे ते कार्यो सिद्ध करवा. सेवकनो ए ज धर्म छे के पोताना स्वामी ने देखाड्या विना अने आग्या लीधा विना स्वतंत्र रीते कांईज करी शकाय नहीं. तेथी प्रभुने निवेदन करी, तेमनी आग्या लईने सर्व कार्य करवा एम सेवक धर्म नभाववो जोईए. (२९ १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९५)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"श्रीमहाप्रभुजी आग्या करे छे के श्रीठाकोरजीने अर्धभुक्त सामग्री कदापि समर्पवी न जोईए. अर्धभुक्त एटले आपणा धरमां जे पण वस्तुओ लावीए तेमांथी थोडो भाग वपराशमां लीधा पछी ते वधेलो भाग 'अर्धभुक्त' कहेवाय जे श्री ठाकोरजीने समर्पि शकाय नहीं" (३०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९६)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"जो दरेक पदार्थ प्रभुने निवेदन कर्या पछी ज लेवातो होय तो अर्धभुक्त पदार्थ केम होय, अने तेना निषेधनी आग्या केम करी ?, तेना खुलासामां कहे छे के कोईने भ्रांति थाय के ब्रह्मसंबंध करती वखते सर्वस्व समर्पण करी दीधु छे, तेथी तेना पहेला ना पदार्थ नो पोते उपयोग करे अने पछी बचेलो पदार्थ जो प्रभुने समर्पे तो ते अर्धभुक्त कहेवाय तेथी ते प्रभु माटे वापरवो नहीं जोईए. श्रीमहाप्रभुजीनी आग्या नुं आ रहस्य समजाव्यु छे. माटे ज 'असमर्पित' अने 'अर्धभुक्त' एम बे भेद करीने एनो निषेध कर्यो छे". (३२ १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९७)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"मुर्तिमां भगवान होवानुं ग्यान, साकार भगवान मूर्तिमां प्रवेश करे छे, अर्थात मूर्तिमां भगवान नो आवेश आवे छे, एनाथी थाय छे, एवो एक मत छे. भक्तिमार्ग नी दृष्टिथी आम मानवानुं नथी. भक्तिमार्ग मूजब तो जे मूर्ति देखाय छे ते 'साक्षात् भगवद् स्वरुप', प्रभु नुं स्वरुप ज छे, एम मानवु जोईए.. मूर्ति जुदी छे, अने एमां आवेश आववाथी ते भगवान कहेवाय छे, तेम मानवुं नहीं" (४०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९८)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"सिद्धांतरहस्य ग्रंथमां असमर्पित वस्तु वर्जवी एम सामान्य रीते आग्या करी छे. माटे अर्धभुक्त पदार्थ प्रभुने न समर्पवो एम भीजी वार आग्या करी. एमां अर्ध एटले अडधी भोगवेली वस्तु, ते अर्धभुक्त कहेवाय छे. भोग करवा लायक वस्तु नो भोग प्रभुने समर्प्या विना करवो नहीं एवो आशय छे. भोग एटले उपयोग. मतलब के जे वस्तुुनो पोते उपयोग कर्यो होय ते प्रभुने न समर्पवी अने जे वस्तु प्रभुने समर्पेली न होय तेनो उपयोग पोते न करवो, ए रीतनो भेद समजवो जोईए" .(३४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (४९९)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"प्रभुने निवेदन करेला पदार्थोने ग्रहण करवा, कारणके आ सेवामार्ग पूजामार्गथी जुदो छे. सेवामार्गमां परात्पर पूर्ण पूरुषोत्तमनी सेवा छे, माटे निवेदन टरेला पदार्थो पोताना उपयोगमां लई शकाय छे, पूजामागमां ए पुरुषोत्तमना अंशनी, अवतारोनी, कलाओनी पछूजा करवामां आवे छे. माटे तेमां नैवेद्य लई शकातुं नथी. सेवामार्ग अने पूजामार्ग एवीरीते जुदा होवाथी पूजामार्गनी रीत सेवामार्गमां आवी शके नहीं.". (३५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५००)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"जन्मपर्यंत (अगाउ कह्यु ते मुजब) समर्पणनी भावना थवाथी मनुष्योने सर्व स्थले ब्रह्मसंबंध थशे. जेम गंगाजी थी बीजा जलना दोषो दूर थाय छे, अर्थात् ए जल गंगा रुप बने छे, एटले निर्दोषणु प्राप्त थाय छे, सर्व रीते दोषरहित बनशे." (३६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०१)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"नवरत्न ग्रंथमां जेवा प्रकारनी चिंताओ श्रीमहाप्रभुजीए निरुपण करी छे, ते नवरत्न ग्रंथथी समजीने वैष्णवोए कदापि एवी चिंताओ करवी जोईए नहीं एवो निश्चय छे". (३७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०२)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"ए प्रमाणे ब्रह्मसंबंध रुप संस्कार थया पछी सर्व चिंताओथी रहित थईने साक्षीभाव थी भगवाननी कृति ने जोतां जोतां सेवामां तत्पर थवुं जोईए". (३८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०३)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

शरण तेमज समर्पण विशे समजावी हवे श्रीहरिरायजी 'सेवा' विशे निरुपण कर छे.

"समग्र सेवा विधि पण अनुक्रमे लखवामां आवे छे. सेवा अंगे जे जे करवानुं आवश्यक छे ते सर्वे हवे लखाय छे. पहेलां उत्तम प्रकारे मूर्तिनी सेवा करवा संबंधमां कहेवामां आवे छे. भगवत् स्वरुपनी उत्तम प्रकारे सेवा करवी जोईए ए तात्पर्य छे.". (३९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०४)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"मुर्तिमां भगवान होवानुं ग्यान, साकार भगवान मूर्तिमां प्रवेश करे छे, अर्थात मूर्तिमां भगवान नो आवेश आवे छे, एनाथी थाय छे, एवो एक मत छे. भक्तिमार्ग नी दृष्टिथी आम मानवानुं नथी. भक्तिमार्ग मूजब तो जे मूर्ति देखाय छे ते 'साक्षात् भगवद् स्वरुप', प्रभु नुं स्वरुप ज छे, एम मानवु जोईए.. मूर्ति जुदी छे, अने एमां आवेश आववाथी ते भगवान कहेवाय छे, तेम मानवुं नहीं" (४०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०५)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"पूजामार्गमां पूज्य देवताओनुं मंत्रविधीथी अर्चन थाय छे. वेदमां जे जे देवता माटे ना जे जे मंत्र कहेला छे, ते ते मंत्रोथी ते ते देवतानुं पूजन पूजामार्गमां करवामां आवे छे. पूजामार्ग करतां भक्तिमार्गमां आ विशेषता छे के - तेमां मूर्ति साक्षात पूर्णपुरुषोत्तम-स्वरुप थाय छे. जेम पारसमणीना सं◌ंगथी ताम्र वगेरे धातु सुवर्णरुप बनी जाय छे, तेम ज मूर्ति पण साक्षात श्रीकृष्ण स्वरुप थाय छे. तेथी भक्तिमार्गमां सेवा मुख्यत्वे भाव द्वारा ज थाय छे अने ते भाव वडे स्वरुपनी जे सेवा करवामां आवे छे, ते श्रीकृष्णनी ज सेवा थई तेम जाणवुं" (४१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०६)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"हवे जो आधुनिक तीर्थरुप गुरुओ उपर जणावेला लक्षणवाला गुरु नथी तो पण एओ जे उपदेश आपे ते तो पहेला वर्णवेला सद् गुरुए करेलो उपदेश ज आपे, माटे हालना गुरुओ एवा न होवा छतां, जो तेमनी दुःसंग रुपी दोषथी बुद्धि भ्रमित थई नहीं होय तो, पहेला बतावेल मुख्य सद् गुरु ना उपदेशनी पेठे ज फलदायी थाय. जो खराब पुरुषोना संगथीथी बुद्धि भ्रष्ट थई हशे तो उपदेश फलित थशे नहीं". (५१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०७)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"गृहस्थ तरीके नी जवाबदारी निभावतां पण मनथी सर्वनो त्याग करवो ए उत्तम छे. व्यावृत्ति छतां पण एमां आसक्ति न राखतां प्रभुमां मन जोडी देवुं ए मनथी करेलो त्याग कहेवाय छे. सर्वनो त्याग न कर्यो होय त्यारे पण गृहस्थाश्रम मां सेवादिक साधनोमां स्त्री पुत्र वगेरे अनुकुल होवा जोईए. धरमां रहीने सेवा करवा माटे स्वधर्म वडे ज निरंतर श्रीकृष्णनुं भजन करवुं. जो अधर्म करे तो हीनयोनीमां एनो जन्म थाय छे. माटे धरमां रहीने पोताना धर्म वडे निरंतर श्रीकृष्ण सेवा करवी. (४४-४५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०८)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"उद्वेग न थाय एटला माटे प्रेमसहित श्रीकृष्णना स्वरुपने अलंकारो धरावववा, वस्त्र तथा आभरण धरावववा, भोग-सामग्री धरवी. वस्त्राभरणो नी रचना एवी करवी के प्रभुना स्वरुपनी सुंदरताने निरखीने मन एमां लागी जाय, त्यांथी पाछा हटवानुं नाम न ले." (५३ १/२)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५०९)

****

"स्वमार्गीय.शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"श्रीहरि ना लीलायुक्त स्वरुपमां चित्तनुं परोवावुं, चित्तने लागी जवुं एज सेवा छे. तेथी प्रभु नी सुंदरताथी पोतानुं मन प्रभुमां रहे तेवीरीते श्रुंगार करवा. सेवानो उद्यम तेने माटेज छे. सेवा एवीरीते करवी के मन प्रभुमां परोवायेलुं रहे. एवी फलरुप सेवाना साधन तरीके देह अने द्रव्य थी करवामां आवती सेवाने मानवामां आवे छे. 'तनु-वित्तजा' सेवा 'मानसी' फलरुप सेवानुं साधन छे एम श्रीमहाप्रभुजीए 'सिद्धांतमुक्तावली' ग्रंथमां कह्यु छे.". (५४-५५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५१०)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"ए प्रमाणे अन्न वगेरे वस्तुओनो प्रभुमां विनियोग सिद्‌ध करी स्त्री वगेरे जो सेवामां अनुकुल होय तो एओ पासेज सेवा कराववी. श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीने प्रार्थना करे छे के - 'हे कमललोचन, अमारा धरावेला पदार्थो नो भोग आपे करवो ज जोईए, जो आप नहीं करो तो पुष्टिमार्गीय मर्यादा नष्ट थई जशे'. अन्न वगेरे वस्तुनो ज्यारे प्रभुमां ज सिद्‌ध थयो तो स्त्री वगेरे पण जो अनुकुल होय तो एमनी पासे पण प्रभुनी सेवा कराववी".
(५६)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५११)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"अन्नादि वस्तुओनो विनियोग थाय (मात्र तेनाथी ज कृतार्थता न समजवी), त्यारबाद पत्नी - पुत्र पासे पण (एमने सन्मुख करवा) सेवा कराववी. एमने सेवादि कार्योमां रस न पडतो होय तो सेवादि जाते करवां. (प्रभुनुं स्वरुप आनंद रुप होई क्लेश थाय तेम न करवुं)" (५८)
(अहीं वधुमां समजाव्यु छे के पत्नी - पुत्र उदासीन होय छतां तेमनुं पालन- पोषण अवश्य करवुं, जेथी लोकमां वैष्णवता निंदनीय न बने, तेओ सतावेतो आपणुं मन सेवामां न जोडाय, आपणे तेमने पण समर्पित करेला होई, तेओने भगवान ना समजी तेमनुं पोषण करवुं कर्तव्य बने छे. जेम मांदगीमां देहथी धार्यु कार्य न थवा छतां देहनुं पोषण करीए छीए, ते आशाथी के सारा थये ते कार्य करशे, तेम आगल सद् बुद्‌धि जागता पत्नी - पुत्र सेवादि कार्य करशे, एवी आशा राखी तेमनुं भरण-पोषण करवुं)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५१२)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"जो ए आसुर होय अने पोताने कृष्णसेवा न करवा दे तो एमनो परित्याग ज करवो एवो निश्चय छे. अर्थात् तेओ पोते सेवा न करे अने आपणने पण न करवा दे, तो एवा असुरनो त्याग ज करवो जोईए ए सिद्‌धांत छे."
(५९)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५१३)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"भक्तिमार्ग नो नियम છે के अभक्तो साथे भक्तोऐ कदापि वसवुं जोईए नहीं. भक्तिमार्गीय जनोए जो स्मृतिए स्वीकारेल धर्म नो त्याग करवो पडे तो ते करवो, कारणके धर्मशास्त्रथी भक्तिमार्ग બલવાન છે, अर्थात् मनु आदि द्वारा प्रतिपादित शास्त्र (स्मार्त धर्म) थी पण બલવાન भक्ति शास्त्र છે". (६० १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५१४)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"चित्त हरि मां राखीने वृत्ति मेलववा (कमावानो) प्रयत्न करवो. (यथा संभव) वेपारादिक ना उद्यम नो प्रयास स्वयं न करतां अन्य पासे करावववो अने पोतानुं चित्त श्रीहरिमां राखवुं. यदि कमावानी (निर्वाह नी) कोई व्यवस्था न होय तो एक प्रहर सुधी सेवा परायण रही बीजा समयमां वृत्ति (रोजगार) माटे प्रयत्न करवो. जो वृत्ति सहजमां सिद्ध थती होय तो मात्र श्रीकृष्णमां आसक्ति राखीने रहेवुं. अर्थात् कायाथी प्रयत्नशील रहेवुं, मनथी उपेक्षा न करवी. मन निर्वाहमां न राखतां चित्त तो प्रभुमां ज.राखवुं". (६१-६२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक" (५१५)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"श्रीहरिनी सेवा माटे प्रयास करतां, पण जेटलो समय श्रीहरिथी विमुख थवायुं तेथी 'वैमुख्य दोष' उत्पन्न थयो. तेना निवारण माटे नियमपूर्वक श्रीमद् भागवत नो पाठ करवो.". (६३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५१६)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"चित्त विक्षिप्त थवाथी (खलभली उठवाथी) श्रीहरिथी विमुखता थई जाय છે. एनाथी पण विमुखता दोष लागे છે. एनो नाश करवा माटे ज कांई आपत्ति आवी पडे ते सहन करवी. कोई કઠોર વચન कहे , कोईना तरफथी मारकूट વગેરે करवामां आवे तो ते पण सहन करवा". (६४)

(श्रीहरिरायजी समजावे छे के कोई कठोर वचन कहे तो कोई ना हृदयमां बिराजी श्रीठाकोरजी ज ते कहे छे तेवी बुद्धि राखवी. श्रीठाकोरजी तेमां राजी थाय छे तेम जाणी दासधर्म नभाववो.)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५१७)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुणम्"

"लोभ न रहे माटे वैराग्य अने संतोषनी भावना करवी, कारण के काम अने लोभ प्रभु-प्राप्तिनी आडे आवनार बे महान पहाडो छे जे दूर करवा जरूरी छे. उपरांत 'मारो आ छेल्लो जन्म छे तेमज प्रभु मारे माथे बिराजे छे, तेथी हुं कृतार्थ छुं' एम स्मरण करवुं. ब्रह्मसंबंधथी सर्व दोषो निवृत्त थई जाय छे.". (६५)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (५१८)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"उपर कह्या प्रमाणे चित्त वडे निश्चय करीने आलोक अने परलोक नी अपेक्षा राख्या विना अंतःकरण स्थिर करीने श्रीहरिमां, जेम मातापितामां होय तेम दृढ विश्वास राखवो के तेओ मारुं सारुज करशे. बालभावथी तेमज जेम एक पतिव्रता स्त्री पतिनी सेवा करे छे तेवी लौकिक युक्ति थी प्रभुनी सेवा करवी. जेवो समय होय, शीतकाल / उष्णकाल वगेरे, देशकाल तथा प्रभुनी अवस्था - बाल्यावस्था के किशोरावस्था, तेनो विचार करीने तदनुकुल सेवा करवी". (६६ - ६७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५१९)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"सेवा माटे यर्थ वचन कहेवुं नही. खोटु बोलवुं नहीं, ए मुखरता दोष छे. ए दोप मोटामां मोटो छे. 'मारी कृतिथी ज बधुं बने छ' तेम मानवुं नहीं. जीवनी कृतिथी जे सिद्ध थतुं होय तेनो परित्याग करवो, जेमके 'साधन संपत्तिथी प्रभु टदापि प्रसन्न थतां नथी' एम सुबोधिनीजी मां कह्यु छे. (६७ १/२).
(सेवामां विक्षेप करनारा व्यर्थ वचनो, व्यर्थ कृतियो, अने व्यर्थ विचारोथी दूर रहेवुं)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२०)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"बहुज क्लेश करीने पयत्नथी जे मेलव्यु होय, जे मेलववा सेवाथी विमुख थवुं पड्यु होय, ते प्रभुने समर्पवुं जोईए नहीं. भगवान कहे छे -'भक्तो प्रेमथी थोडुं पण मने जे अर्पण करे छे, ते मने धणुं थई पडे छे, अभक्त मने धणुं समर्पे, अर्थात्, भक्ति विना मने कांईपण समर्पवामां आवे, तेनाथी मने संतोष थतो नथी.".

लोकमां जे बहु ईष्ट होय, लोको जेने बहु ईच्छता होय, पोते घणा समयथी चित्तमां विचारी राखेली होय, जे सर्वथा सेवा संबंधी होय, ते वस्तु ज प्रभुने भक्तिपूर्वक समर्पवी, अन्य नहीं" (६९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२१)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"तेमज ज्यारे भीतरनी सेवानो समय न होय त्यारे बहारनी सेवा पण मुख्य सेवानी पेठे ज करवी. प्रभुना श्रीअंगना अने बीजा बिछाववाना वस्त्रोनुं प्रक्षालन करवु, तेवी सर्व सेवाने मुख्य रुप सेवा गणीने ज करवी. (७०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२२)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"एक समय, बे समय के त्रण समय प्रभुसेवा करवी. जेटली वार प्रभुनी सेवा बने तेटली वार.करवी. स्वधर्म नुं आचरण करवुं. संध्यावंदन आदि नित्य-कर्म अने जातकर्म आदि संस्कारो नैमित्तिक कर्म पण स्वधर्मनुं अंग होवाथी करवां जोईए." (७१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२३)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"जे कार्यथी पोताना धर्ममां बाध नडे, ते धर्मथी आग्रहपूर्वक निवृत्ति राखवी एवो निश्चय छे. वैष्णवोनो मुख्य धर्म 'भगवत्सेवा' छे. सेवामां जे प्रतिबंध करनारो धर्म होय ते 'विधर्म' कहेवाय, जेने आग्रहपूर्वक त्यजी देवो एम सिद्धांत छे. कदाच एवा विधर्मथी धर्मनी सिद्धि थाय तो पण मुख्य 'भगवद्धर्म' ज छे. तेथी भगवद्धर्मनुं सर्व धर्मथी विशेषपणुं छे. ए भगवद्धर्मनुं आचरण करवाथी सर्व धर्मो सिद्ध थई जाय छे. जेम मूलमां सिंचन करवाथी आखा वृक्षने पुष्टि मले छे, तेम सर्व धर्मनुं मूल भगवद्धर्म होवाथी, तेनुं आचरण करवाथी सर्व धर्मोनी सिद्धि थाय छे. माटे ज भगवत्सेवा सर्वथी श्रेष्ठ छे." (७२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२४)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"ईन्द्रिय रुपी घोडा बलवान होवाथी तेनो निग्रह करवो, तेने वश थवुं नहीं. श्रीमहाप्रभुजी आग्या करे छे के जेमना चित्तमां विषयोनो आवेश थयो होय, तेमां प्रभुनो आवेश थतो नथी. प्रत्येक विषयो ना लोभथी मृत्यु पामनार हरण, पतंगीयु, भमरो, मीन, हाथी ना द्रष्टांत जग प्रसिद्ध छे. तो पांचेय ईन्द्रियोने गफलतमां आखनार मनुष्यनी केवी दशा थाय ?. परोपकार, सदाव्रत आदि धर्मो नुं फल स्वर्गादि सुख छे जे पुण्य परवारतां पूनः आ लोकमां आववुं पडे छे, जे तेनाथी श्रेष्ठतम् फल देनारी भगवत्सेवा पासे दुर्बल होय तेमां शुं आश्चर्य छे. (७३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२५)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"उपर प्रमाणे स्वधर्माचरण करतां करतां भगवाननो आवेश थाय छे अने आवेश थवाथी, प्रभुना साधनोमां निष्ठा थाय छे, माटे नित्य प्रभुनी सेवा करवी, कारणके सेवा.करवाथी ज भाव उत्पन्न थाय छे - वधे छे". (७५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२६)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुणम्"

""

"सर्व स्वरुप श्रीकृष्ण ज छे एम जाणीने ह्रदयमां दीनता लाववी अर्थात् एवी भावना करवी के हुं सुक्ष्म अने सर्वदोषथी भरेलो जीव क्यां अने निर्दोषपूर्ण गुणविग्रह एवा प्रभु क्यां ? 'हुं करुं छुं' एवा अहंकार नो सदंतर त्याग करवो". (७५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (५२७)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"श्री हरिनी सेवामां सन्मान मेलववानी ईच्छा न राखवी. श्रीहरिना नामनुं कीर्तन सभामां उभा रहीने कोईनी पण शरम राख्या विना करवुं. श्रीहरिनुं नाम कदापि छोडवुं नहीं कारणके अन्यथा आशूरावेश आवे तेम श्रीगुसांईजीनी, श्रीमहाप्रभुजीनी अने भागवतजीनी आग्या छे.". (७६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२८)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"कोईनो पण भय के कोईनी स्पृहा राख्या विना - परवा / दरकार कर्या विना निरंतर श्रीकृष्णमां चित्त राखीने श्रीकृष्णना नामनुं - भागवतजीनुं नित्य कीर्तन करवुं, एज मुख्य साधन छे. निबंधमां श्रीमहाप्रभुजी आग्या करे छे के 'कोईपण स्वार्थ के दंभ / आडंबर / निमित्त विना, पोताना प्रयत्नथी (जाते) श्रीभागतजीनो पाठ अवश्य करवो". (७७ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५२९)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"सेवाना अंतर्गत अने पूजाना अंगरुप होवाथी शंख, चक्र, आदि मुद्राओ सवामां अवश्य धारण करवी, तेमज तुलसी काष्टनी माला तथा तिलक पण भगवद्-चिन्ह होवाथी अवश्य धारण करवा.जोईए, तेनी श्रीमहाप्रभुजीए 'निबंध' ग्रंथमां विशेष रुपे विस्तारपूर्वक आग्या करी छे. तिलक - 'भगवद् चरणारविंद ना आकार'नुं ललाटमां करवुं". (७८ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३०)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"एकादशी आदि व्रत वैष्णव मत प्रमाणे ज करवा. दशमीनो वेध न आवे ए रीते एकादशी व्रत करवुं. एक पल पण जो वधे तो ए एकादशी ने दिवस व्रत न करतां द्वादशीने दिवसे व्रत करवुं. जन्मष्टमीनु व्रत प्रभुना प्राकट्यनो उत्सव मानीने करवुं. सुर्यदय समये सातम होय तो व्रत बीजा दिवसे करवुं एज प्रमाणेनो क्रम रामनवमी, नृसिह चौदश अने वामन जयंति नो राखवो. अन्य जन्मदिन ना उत्सवो पण तेज रीते मनाववा. ए सिवाय बीजा उत्सवो शरदपूर्णिमा आदिमां निर्णय जयंतव्रतवत न थाय. ते उत्सवोमां क्यांक नक्षत्र, समय के तिथि नी मुख्यता हौय छे". (७९- ८० १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३१)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"उपर कह्या प्रमाणे (जप-पाठ, माला-तिलक, व्रत-जयंति आदि) नुं नियम - निष्ठा पूर्वक आचरण करनार गृहस्थ कृतार्थ थाय छे तेमां कशो संशय नथी" (८१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३२)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"गृहस्थाश्रम पूर्वे ब्रह्मचर्याश्रम अने पछी वानप्रस्थाश्रम छे. ते बन्नै आश्रमवालाओने साधनो उपलब्ध थतां होय तो उपर जणावेलो सेवामार्ग अनुसरवो जोईए. संन्यस्ताश्रममां रहनारा संन्यासीओनो मार्ग त्याग रुप छे. ए मागमां मुख्य त्यागरुप तीर्थाटन छे, अर्थात् सर्वनो त्याग करी तीर्थनी यात्रा करवी". (८२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३३)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

""

"संन्यासीए कोईने वश न थतां, संग रहित थईने, स्वेच्छाथी स्वतंत्र रहेवुं जोईए. कोईना प्रत्ये आसक्ति राखवी जोईए नहीं. एक स्थान पर न रहेतां नित्य पर्यटन करवुं. जे दिवस जेटलुं अन्न आवश्यक होय, ऐक दिवस चाले तेटलुं ज ग्रहण करवुं. वधारे अन्न साथे राखवु नहीं. कोईनी पण लाज-शरम राख्या.विना भगवानना चरित्र नुं कीर्तन करवुं". (८३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३४)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"श्रीहरिना रहस्यमय चरित्र सर्वत्र जोवा, सर्व ईन्द्रियोनो निग्रह करी शांत थईने रहेवुं. क्रोध वगेरे न करवां. श्रीकृष्णमांज तत्पर थईने रहेवुं. चित्तने आकुल व्याकुल न थवा देवुं. स्वार्थ पण ए ज होवो जोईए के श्रीकृष्णनुं प्राकटय केम जल्दी थाय ! ए ज मनमां प्रयोजन होवुं जोईए. पोतानो स्थुल.देह पडे त्यां सुधी विचक्षण यतिए आ प्रमाणे खरवुं." (८४ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३५)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"चित्त स्थिर न.रहेवाथी कोई दोष लागशे तेम जणाय तो उपर सौन्यासी माटे तीर्थाटन कह्यु तेम बीजा पण ब्रह्मचारी, गृहस्थ तथा वानप्रस्ध जनो माटे पण समजवुं". (८५ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३६)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"सेवाथी प्रतिकुल.भार्यादि / गृहनो त्याग करीने भगवदीयजनो रहेता होय तेवा हरिना स्थानमां जईने श्रीकृष्णनी सेवा अने कथा जेने अत्यंत प्रिय छे तेवा भगवदीयो.ज्यां होय ते स्थान मां जईने, तेवा भगवन् मन्दिरमां रहीने मात्र श्रीकृष्णरुप अर्थनी अभिलाषावाला थईने रहवुं". (८६-८७-८८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३७)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"दुःसंग एटले श्रीहरिथी जे विमुख होय तेवानो संग, दुषित वस्त्र, कोईना पहेरेला के अपरस वनाना वस्त्रो, दुषित अन्न, अनप्रसादी अन्न, आ बधाना संबंधथी भय रहे छे, ए हेतुथी साधनो पण साथे राखवा अने सावधानपणे श्रीहरिमां तत्पर थई ने रहेवुं". (८९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५३९)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"एवीरीते सेवा अने कथामां निरंतर प्रेम थवाथी उत्तम प्राप्त थाय छे. ज.हृदयना भावोनो बाध थवानी संभावना होय तो एकांतमां कदापि न रहेवुं. कांतमां रहेवाथी चित्तनी अस्थिरता वगेरे थाय तो एकांतमां स्थिति न ज करवी" (९०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४०)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"श्रीहरि रक्षणहार छे, माटे एकांतमां न रहेतां बीजे स्थले जो जाय अने त्यां बीजानो संग थाय तो पण श्रीहरिनुं रक्षणहारपणुं तो रहेशे ज. एटले कोई पण प्रकारनो भय राखवो नहीं अने भगवत्सेवा परायण थईने रहेवुं.

जो अगाउ कहेला धर्मो न बनी शके तो श्रीभागवतशास्त्रनुं आदरपूर्वक त्रणे कालमां सेवन करवुं. जेम प्रभुना स्वरुपनी सेवा करवामां आवे छे तेम घणाज यत्नथी श्रीभागवतनी सेवा करवी. श्रीभागवतनी सेवा बे प्रकारनी.छे - एक स्वरुपसेवा, अने बीजी नामसेवा. स्वरुपसेवा उपरना श्लोकमां वर्णवी छे, नामसेवानुं स्वरुप आ श्लोकमां वर्णव्यु छे. ए प्रमाणे स्वरुपसेवानी पेठे घणा ज प्रयासथी नामसेवा त्रणे कालमां करवी. 'तव कथामृतं' ए 'गोपीगीत' ना सुबोधिनीजीमां श्रीमहाप्रभुजीए एज आग्या करी.छे के श्रीभागवत भगवानना स्वरुपनो परिचय करावे छे, माटे एनी सेवा.भगवद् सेवा ज समजवी". (९१ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४१)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"अगाउ त्रण प्रकारो कह्या - १. धरमां रहीने प्रभुसेवा करवी, २. कृष्णसेवा / कथामां तत्पर एवा भगवदीयो साथे रहीने प्रभुनी टहेल करवी, ३. श्रीभागवतजीनो पाठ करवो. जो आ त्रणेयनो अभाव होय तो छेल्लो प्रकार 'प्रपत्ति' नो - प्रभुने शरणे जवानो छे". (९२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४१)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-,सेवादि निरुपणम्"

"मोटा स्थानोमां जे ठेकाणे पूजामार्गनो प्रवाह छे ते स्थले एमांज परायण थईने स्थिति करवामां आवे तो कृतार्थपणु छे. श्रीमहाप्रभुजी 'निबंध' मां आग्या करे छे के 'जगन्नाथजीमां, विठ्ठलनाथजीमां, श्रीरंगजीमां व्यंकटेशबालाजी आदिमां ज्यां पूजानो प्रवाह चाली रह्यो होय.त्यां पूजामां तत्पर थईने रहेवुं". (९३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४२)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"उपर जणावेला मार्गमां, जे स्थले पूजानो प्रवाह चाली रह्यो छे ते मार्गमां, जे फल छे ते फल भक्तिमार्ग करतां जुदु नथी, कारणके ए ठेकाणे कृष्णसेवामां तत्परता एवीज छे अने सर्वथा देहनो योग कृष्णसेवामां थाय छे. तेथी भक्तिमार्गना फलथी ए मार्गनुं फल जुदुं नथी". (९४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४३)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"तो पण ए मार्गमां (गईकालनुं अनुसंधान) भक्तिमार्गना जे धर्मो छे तेनाथी ऊलटा धर्मो छे, कारणके ए ठेकाणे (पूजामार्गमां) प्रीतिनी दृढता नथी". (९४ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४४)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

"पूजामार्गमां घणा काल पर्यंत एक मूर्तिनी सेवा करी कोई वखते चित्त व्यग्र थई जाय अने ए चित्त स्थिर न रहेवारुप दोष देखावाथी ए मुर्ति सेवकने त्यजी दे छे, केमके एनो आग्रह नथी. एम थवाथी बीजा स्थानमां पण जाय तो कंई फल प्राप्ति नहीं थाय, कारणके एक ठेकाणे विश्वास न रह्यो तो बीजे ठेकणे क्यांथी रहेशे ?. एमां दृष्टांतरुप ब्रह्मास्त्र छे. ए दृष्टांतनुं रहस्य पहेला समजाव्यु छे". (९५ - ९६)(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४५)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"उपरोक्त कारणोथी ए पूजामार्गनो उत्कर्ष सिद्ध थतो नथी. जो भक्तिमार्गनो संभव होय, भक्तिमार्गमां रही शकातु होय, तो बुद्धिमान पुरुषे पूजामार्गमां यत्न न करवो जोईए. जो भक्तिमार्गमां रही शकाय तेम न होय तोज पूजामार्ग उत्तम गणाय". (९७)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४६)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

"(अद्य पर्यंतना ९७ श्लोको द्वारा कहेवामां आव्या) एवी रीते आश्रय सिद्ध थया पछीना शरणे गयेलाना धर्म, ब्रह्मसंबंध - आत्मनिवेदन थया पछीना धर्म अने श्रीकृष्ण सेवा संबंधी जे धर्मो छे ते ते संक्षेपमां आ ग्रंथमां निरुपित करवामां आव्या छे". (९८)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५४८)

****

"स्वमार्गीय शरण-समर्पण-सेवादि निरुपणम्"

''

अंतमां आ ग्रंथनो उपसंहार करतां श्रीहरिरायजी कहे छे - "समुदाय रुपे मारा संग्रह करेला स्वमार्गना बोधथी संतुष्ट,शरणे आवेला सर्व जीवोना समुहथी सेवायेला, तथा निःस्वार्थ करुणारसथी ज पुष्ट एवा श्रीवल्लभ मारा उपर कृपा करो". (१००)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५५०)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"(पुष्टिपथ नो) प्रथम मर्म छे - स्वकीय श्रीमदाचार्य-चरणकमलनो दृढाश्रय करवो. पुष्टिमार्गनुं फल प्रभुना आप्या विना मलतुं नथी; भगवत्स्वरुप मां रहेला अमंद आनंदनो सेवादिथी अनुभव करवो. ए फल ज्यारे प्रभु दान करे त्यारे ज मले छे. ए फलनुं सर्व दैवीजीवोने दान करवा माटे ज प्रभुए श्रीमहाप्रभुजीने भूतल उपर प्रकट कर्या छे". (२ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५५२)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"(पुष्टिपथ नो) बीजो मर्म छे - 'श्रीकृष्णसेवा'. 'तनु-वित्तजा' सेवा पछी 'मानसी सेवा' प्राप्त थाय छे. मानसी सेवा फलरुपा छे. प्रेम, आसक्ति अने व्यसन ए त्रण अवस्था छे. ज्यारे प्रेम अने आसक्ति, तनु-वित्तजा थी सिद्ध थाय छे, त्यारे ए भगवदीयने कशी अपेक्षा रहेती नथी. प्रभु आवा निर्पेक्षने आपे तो शुं आपे ? (५)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५५४)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"उपरोक्त निर्पेक्ष भगवदीयने फलरुप मानसी सेवा अने व्यसनावस्था ज्यारे प्राप्त थाय छे त्यारे व्रजरत्ना जेवा सर्वात्मभावथी मानसी सेवा करतां ए ज सेवा भगवत्स्वरुपनुं दान करे छे, प्रभुस्वरुप लावण्यनुं पान करावे छे. तेथीज एवी मानसी सेवा अलौकिक श्रृंगार-रसात्मा प्रभुने हृदयमां रोकी राखे छे". (६)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५५५)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"त्रीजो मर्म छे - 'लौकिक अने वैदिकनो त्याग करीने प्रभुने शरणे जवुं ए ज छे'. 'सर्वधर्मान परित्यज्य....' ए श्रीमुखनी आग्याने अनुसरीने लौकिकवैदिकने तिलांजली आपीने एटले एमां निष्ठा राख्या

विना प्रभुने शरणे जवुं, केमके प्रभु श्रीकृष्ण पोताना शरणमां रहेनाराओना उद्धारक छे, एम श्रीमहाप्रभुजीए 'शरणस्थ समुद्धारं कृष्णं विग्यापयाम्यहम्' एम 'कृष्णाश्रय स्तोत्र मां निरुपण कर्यु छे". (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५५६)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

''

"ज्यारे जीव मात्र प्रभुनुंज अथवा प्रभुना शरणमार्गनुं ज शरण ग्रहण करे छे, त्यारे प्रभुने चिंता थाय छे के आ जीवने शुं दान करवुं. शरणागत भक्त तो मात्र पोतानुं ज शरण पकडी रहयो छे, तेथी तेने बीजा कोई पदार्थनी ईच्छा नथी एम स्पष्ट ज थाय छे. एमां पण प्रभु अपार करुणाना सागर छे. तेथी पोताना सदानंदमय कोटिकंदर्प लावण्यमय अलौकिक माधुर्यैकभाजन स्वरुपनुं दान करे छे. " (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५५७)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

''

"चतुर्थ मर्म दिनता छे. ज्यारे सर्व साधनोथी हुं रहित छुं, में एवुं कोई साधन नथी कर्यु जेने लईने प्रभु मने फलदान करे, एवी निस्साधनता मनमां स्फुरे त्यारे दिनता प्राप्त थाय छे. ज्यारै जीवने प्रभु प्राप्ति माटे अत्यंत आर्ति प्रकट थाय त्यारे पःरभु पोताना स्वरुपनी प्राप्ति करावे छे." (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५५८)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

''

"(अगाउना अनुसंधानमां) केमके आपनुं अंतःकरण कोमल सुकुमार छे अने एमां पण भक्तना दुःखोने तो कदी सही शकता नथी. तेथी ज्यारे ज्यारे भक्तोने आर्ति थाय.छे, त्यारे पोते स्वरुपानंदनुं दान करे छे, केमके पोते अपार करुणाना सिन्धु-सागर छे, माटे दुखित भक्तनी उपेक्षा प्रभु कदीए करता ज नथी" (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५५९)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"पंचम मर्म 'भावोद्बोधन' छे. सदानंद प्रभुनी नूतन लीलानी निरंतर भावना करवी ते पांचमो मर्म छे. ए लीलानी भावना करवाथी प्रभुप्राप्ति थाय छे. भाव ह्रदयमां उद्भवे त्यारे ए भावस्वरुप पण ह्रदयमां पधारे ज. वली प्रभुनुं स्वरुप अने प्रभुनी लीला जुदा नथी. तेथी लीलानी भावना करवाथी ए लीलात्मक अने लीला भावात्मक प्रभु ह्रदयमां बिराजे छे". (११) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६०)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"ज्यारे लीलाना स्वरुपनो विचार करीए त्यारे प्रभुना स्वरुप अने तेमनी लीलाने जुदी पाडी शकाती नथी. जो प्रभुमां भेद होय तो तेमनी लीलामां भेद हो, जे बनी शके नहीं. प्रभुतो एकज छे, परंतु एमना धर्मो घणां छे, छतां ते पण भगवद् स्वरुपथी जुदा नथी, प्रभु रुप ज छे. तेथी भगवद् स्वरुपमां भेदनी कल्पना करवी अयोग्य छे." (१२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६१)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"परंतु प्रभु पोताना जुदा जुदा स्वरूपो प्रकट करे छे, तेमां भेद बुद्धि प्रभुनी ईच्छाथी ज थाय छे, तेमां दृष्टांत छे के जेम सूर्य विशे भेद बुद्धि लोकनी दृष्टिमां थाय छे. सुर्य उगे छे त्यारे ए जुदो अने एना किरणो जुदा एम लकनी दृष्टिमां देखाय छे".(१३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६२)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"ज्यारे प्रभु पोतानु स्वरुप अने ए स्वरुपथी करवानी लीला प्रकट करे छे, त्यारे ए लीलारुप धर्मो कने ए लीला रुप धर्मिस्वरुप एम भेद बुद्धि थाय छे. जे श्रीनवनिरतप्रियाजीना प्रकट स्वरुपमां बाललीलानी

स्फुर्ति थाय छे अने श्रीगोकुलेदुना स्वरुपमां मुख्यत्वे रासलीलानी स्फुर्ति थाय छे अने तेथी बन्ने स्वरुपमां भेदभाव थाय छे." (१४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६३)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

"लीलाभेदे स्वरुपभेदः" ए सिद्धांत मुजब ज्यारे स्वरुपथी भिन्नभिन्न लीलाओ प्रकट करेली होय छे त्यारेज तेना आधारे भेद भाव देखाय छे.जेम सूर्य उदय पामे त्यारेज एमां अने एना किरणोमां जुदापणु भासे छे , उदय पामेलो नथी होतो त्यारे तो सूर्य अने किरणो जुदाछे तेवुं ग्यान थतुं ज नथी, तेवीज रीते ज्यारे सदानंद प्रभु - पोतानी सदानंदमय लीला अने पोते प्रकट - थाय छे, त्यारे ए लीला अने ए स्वरुपमां भेदभाव भासे छे. ज्यारे पोते आंतर्रमण करे त्यारे लीला स्वरुपात्मक गणाय छे एवो निश्चय छे. ज्यारे लीला स्वरुपनी भीतर रहे छे, त्यारे तो लीला स्वरुपथी अलग जणाती नथी. ए वखते लीला ज स्वरुप छे एम निश्चथ क्षिद्धांत थाय छे". (१५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६४)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

"श्रीवेणुगीतना सुबोधिनीजीमां 'तन्मयता' शब्दनो अर्थ बताव्यो छे -'क्रीडारुप लीला स्वरुप' थई गया. कीडो जेम भ्रमर रुप थई जाय तेम गोपीजन जाग्रत के स्वप्न अवस्थामां प्रभुनी लीलाना दर्शन करतां करतां प्रभुलीलारुप थई गयां. आम प्रभुनी लीला प्रभुना स्वरुपथी भिन्न नथी, तेमां भेद नथी. दर्शन करती वेला ज्यारे लीला बहार प्रकट थाय छे त्यारे स्वरुप अने लीलामां तारतम्य थणाय छे." (१६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६५)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

"वस्तुतः भगवाननुं स्वरुप ज लीला अने लीला ज प्रभुनुं स्वरुप छे. तेथी प्रभुनी लीला हृदयमां स्थान मेलवे तो सदानंद भगवान प्रसन्न थईने हृदयमां प्रवेशे छे. जे लीलानी स्फुर्ति भक्त-हृदयमां थई होय ते

लीलामां जेटला प्रभुना स्वरुपो होय ते सर्व स्वरुपो साथे लीलात्मक प्रभु भक्तना हृदयमां प्रवेश करे छे, एवो निश्चय छे" (१७)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६६)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"छठ्ठो मर्म (श्रीहरिरायजी) विरही व्रजसुंदरीओना भावने बतावे छे. 'हा नाथ रमणप्रेष्ठ क्वासि क्वासि महाभुज', एम सतत उच्चारण करतां व्रजरत्नाना निगढ भावनुं स्मरण करतां , हृदयमां प्रभुलीलानी निरंतर भावना करवाथी ज थशे. विप्रयोगथी ज संयोगनी प्राप्ति थशे" (१८)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६७)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"व्रजभक्तोनी विरहावस्थानु, तेमना क्लेशभावनुं चिंतन - स्मरण करवुं. प्रभुनी लीलाथी स्वरुप जुदु नथी, तेथी त्यां मननो प्रवेश नथी. ज्यारे व्रजसुंदरीना भावमां के प्रभुनी लीलामां मननो प्रवेश थाय छे त्यारे तेनाथी स्वरुपनो भेद थतो नथी. माटेज जेमनाआ नंदनंदन बिराजे छे तेवां व्रजभक्तोनी निरंतर भावना करवी." (१९)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६८)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

""

"श्रीहरिरायजी पहेला भगवद्लीलानी भावना करवानी आग्या करे छे, पछी व्रजभक्तोनी भावना नुं स्मरण करवाथी सर्वात्मभाव सिद्ध थशे, तेम कह छे. ज्यारे मन लीलामां प्रवेश करे छे त्यारे लीला स्वरुपथी भिन्न न होवाथी सर्वात्म भाव अने प्रभुनी सम्यक प्राप्ति पण थाय छे. व्रजभक्तो लीलास्वरुपपणाने प्राप्त थयेला छे, केमके प्रभुनुं स्वरुप एमनाथी जुदु नथी. माटे जेमां साक्षात प्रभु बिराजे छे, तेवा व्रजसुंदरीनी.भावना करवी". (२०)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५६९)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

''

"सातमो मर्म गुणगान छे. सर्व दषना निवारणार्थ श्रीहरिना गुणो गावा जोईए. दोष निवारण माटे अन्य कोई साधन नथी. गुणोनु गान करवाथी जीव पर प्रभु प्रसन्न थाय छे. अने प्रसन्न थईने आप पोतेज स्वरुप प्रकट करीने स्वानंदनुं दान करे छे" (२१ - २२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५७०)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

''

"पहेला विरहावस्थामां प्रभुना स्मरणथी जे आर्ति थाय छे, अथवा तो गुणोनुं स्मरण करावीने विरहावस्थामां थती असह्य पीडाने शांत करे छे. भगवान पोते आनंदमय छे, एमनी लीला आनंदमय छे अने गुणधर्मो पण आनंदमय छे. तेथी ए गुणोनुं गान करवाथी, तेनुं स्वरुप जाणवाथी आनंद प्राप्त थाय तेमां कोई आश्चर्य नथी" (२३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५७१)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

''

"आठमो मर्म श्रीहरिना नामोना माहात्म्यनी स्फुर्ति थवी ए छे. अजामिलादि महादुष्टोनो घोर पातक-पंकमांथी उद्धार करनार भगवन्नाम ज छे. नाम सिवाय बीजा साधनोमां अल्प बुद्धि थाय, नाम जेवा चिंतामणि पासे बीजा साधनो तुच्छ लागे. नाम भगवद्रुप ज छे. प्रभु नाम अने रुप ए बन्ने स्वरुपे प्रगटे छे. नाम पण स्वरुपात्मक होवाथी एनी महत्ता प्रभुस्वरुपथी ओछी नथी". (२४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५७२)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

''

"नवमो मर्म भगवद्-वाक्य मात्रमां निष्ठा छे. कोईपण प्रकारनो विचार कर्या विना प्रभुनी जे पण आग्या थाय तेमां तत्पर रहेवुं. गमेतेवी विपरितता जणाती होय तो पण 'प्रभु जे करे छे ते मारा सारा माटेज करे छे' एवो दृढ विश्वास राखी पःरभुनी आग्याने आधिन थई जवुं. एम प्रभुनी आग्याने अनुसरवाथी साधनो बनी

शके, न बने अथवा कांई विपरित बनी जाय के मात्र मौन स्थिति थाय तो पण भगवान निजजनोने कृतार्थ ज करे छे" (२५-२६)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५७३)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

"अखिलना आत्मा अंतर्याभी भगवानमां विश्वास राखवो ए दशमो मर्म छे. प्रकट भगवत्स्वरुपमां होय तेवोज विश्वास तदीय एवा भगवदीयमां राखवो केमके प्रभुएज तेमनुं रुप धर्यु छे. जे स्थले जेवा कृष्ण कह्या छे तेवाज भगवदीयो छे अथवा जेवा भक्तो कह्या छे ते स्थले कृष्ण तेवा ज छे एम समजवुं. जो कोई विपरित जणाता होय तो पण तेमने भगवद्सद्दश जाणवा केमके तेमने भगवद् संबंध थयेल होवाथी स्वरुपातमक समजवा जोईए". (२७-२८)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५७४)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

"कृपापरायण सदानंद नंदनंदन पोताना निजजनो माटे जे कांई करे छे ते सारुं ज करे छे तेम मानवुं. जेम माबापनुं प्रत्येक कार्य पोताना ज हितमां होय छे तेम मानवानी तेमना पुत्रनी फरज होय छे तेम जीवोए पण मानवुं के प्रभुनो संबंध धरावनार महानुभावी भगवदीयो जे कांई करे ते सारु ज करे छे. भगवदीयोमां विश्वास राखवो अने तेमनामां उत्तमता ज जोवी." (२९-३०-३१)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५७५)

****

"पुष्टिपथमर्म निरुपणम्"

"आ दश मर्मनै जे जे जन सर्वांशे समजे छे, ते श्रीमहाप्रभुजीनी कृपाथी भक्तिमार्गमां महान बुद्धिमान थाय छे. भक्तिमार्गमां एनी बुद्धि सारी पेठे प्रवर्ते छे. एने मार्गना ईश्वर श्रीकृष्ण तत्काल वश थाय छे. श्रीमहाप्रभुजीना कृपापात्र सेवको अत्यंत विचक्षण होय छे. तेमना द्वारा आ दश मर्मो समजीने, अनुभवीने, भक्तिमार्गमां स्थिति करवी." (३२)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

'पुष्टिपथमर्म निरुपण संपुर्ण'

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५७६)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"बुद्धिशाली पुरुषोए दरेक रीते भक्तिमार्गनी मर्यादा बीजा मार्गो करतां खास करीने उलटी छे एम जाणवुं कारणके पूर्वधर्म एमां जता करवाना होय छे." (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक" (५७७)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"आ मार्गमां धर्म त्यागरुपे रहेलो छे एम जाणवुं. ए धर्म ज्यारे निवृत्तीने बदले प्रवृत्तिमां करवानो होय त्यारे ए प्रभुना आश्रयरुपे रहेलो छे. आ मार्गमां सेवा मानसी जाणवी अने कर्ममार्गीय पूजा करतां एने जुदा प्रकारनी समजवी". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (५७८)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"आ मार्गमां प्रभुनी आग्यानुं बराबर पालन करवुं ए ज धर्म वगेरेनुं अनुष्ठान छे. अने प्रभुए श्रीमहाप्रभुजी समक्ष प्रकट थईने जे आग्या करी ते ज प्रमाण छे" (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५७९)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"आ मार्गमां प्रमेय, वस्तु मात्र प्रभु श्रीहरि ज छे, स्वर्ग वगेरे प्रमेय नथी. ए प्रमेयनी प्रपाप्ति माटे नुं साधन प्रभुनो मार्ग (पुष्टिमार्ग) ज छे.आ मार्गमां साधन अने फल बन्ने एकज छे. (साधन अने फलनी आ मार्गमां अनन्यता छे)." (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८०)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

''

"आ मार्गमां फलस्वरुप प्रभुने तो प्रथम ज पधरावी आपवामां आवे छे. त्यारपछी नी सैवा ते साधन ; ए सेवा पण आ मार्गमां फलरुप छे. आ मार्गमां प्रभुसेवामां प्रवृत्ति करवी ज साचो त्याग छे, अन्य सर्वै प्रवृत्ति आ मार्गथी हजारो गाउ दूर छे.". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८१)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

''

"सर्व देह संबंधी तेमज ईन्द्रिय संबंधी जे कांई छे ते प्रभुनी सेवा माटे ज छे. (कृष्णसेवा सिवाय देहेन्द्रियोनो अन्य कशो पण उपयोग नथी). श्रीकृष्णचंद्रजीए युद्धभूमी पर अर्जुनने जे वात कही ते उपरथी स्पष्ट थाय छे के सर्व धर्मत्याग रुप विरुद्ध कृति ज आ मार्गमां धर्म छे". (६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८२)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

''

"युद्धभूमि उपर अर्जुनने उपदेश आपवाने बहाने प्रभुए आज वात बतावी छे. एटलुं ज समजो के जेनाथी श्रीकृष्णचंद्रजी साथे संबंध स्थापित थाय एनेज आ मार्गमां धर्म कह्यो छे." (७) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८३)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

''

"भक्तिमार्ग दासपणामां रहेलो छे. ए दासधर्मथी भक्तिमार्गीय विधगविधाश छे. भक्तिमार्गीय त्याग पण जो 'गीता' मां अर्जुन प्रत्ये भगवाने करेल आग्यानुसार होत्य तो सफल थाय". (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८४)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

''

"खरुं जोता आ मार्गने त्याग आपोआप ज ईष्ट छे, केमके सेवा करवामां आदर होवाना करणे पोताना देहादिक नी सेवा नी लेशमात्र पण अपेक्षा होती नथी" (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८५)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

''

"ग्यानमार्गमां जे त्याग रहेलो छे ते कोने माटे छे ए नक्की ज न होवाथी नकामो छे. ज्यारे भक्तिमार्गीय त्यागमां तो बधुं ज प्रभु माटे छे." (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८६)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

''

"जे कांई पण परमानंदात्मक प्रभुना संबंधनुं थाय छे, तेनी दरेक रीते सफलता ज होय छे ; अने देहादिक सर्व भगवदर्थ थतां ए सर्व नी कृतकृत्यता सिद्‌ध थाय छे." (११). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८७)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

''

"बधे ज स्थले प्रभुना धर्मो नो ज विचार आव्या करतो होवाथी आवा भक्तने सर्वत्र भगवान ज रहेला छे एवो भाव स्फुरे छे. ईन्द्रियोनो संबंध तेमज अन्य पदार्थोनो संबंध आ भगवद् बुद्‌धिथी नष्ट थई जाय छे". (१२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८८)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"आ जगत वगेरे नी स्फुर्ति ना विषयनी वात करतां पण ए जगदादिनुं विस्मरण ज आ भक्तिमार्गीय त्यागमां रहेलुं छे. ए खातर ज दरेक प्रकारे प्रभुना जे सर्व धर्मो छे, ते श्रीभागवतजीमां थी श्रीसुबोधिनीजी द्वारा जाणी लेवा, कारणके प्रभुना धर्मोनुं ग्यान न होय तो जगत वगेरेमा प्रभुना धर्मोनी स्फुर्ति थई शके नहिं". (१३-१४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५८९)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"श्रीमद् भागवत ज सर्व भक्तोनी साची गति छे. ए शुं करे छे ? पोताना ब्वरुपबल थी दरेक प्रकारे भक्तना संसारनो (अहंता-ममतात्मक बुद्धि ना कारण संसारिक पदार्थोमां रहली आसक्तिनो) नाश करे छे. प्रभुना धर्मोनो बोध करावे छे. भगवद्-भावनुं दान करे छे, भक्तिना समग्र प्रकारनुं ग्यान आपे छे. अने प्रपंचनी - जगदादिनी स्फुर्ति वालानी बाबतमां एना विस्मरण रुप ईष्ट अर्थने सिद्ध करे छे" . (१५ - १६ १/२)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५९०)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"श्रीमद्भागवत् शास्त्रनुं जो ग्यान थाय तो फलदायक थाय छे, परंतु आ ग्यानमां गुरुचरणनो आश्रय हेतु रुप छे, केमके तेमना आश्रयथी ज भक्त उपर तमनी कृपा थाय छे. तेने माटे गुरु-शिष्य भावथी तेमनुं सानिध्य प्राप्त करवुं जोईए. आ गुरु-शिष्य संबंध त्यारेज शक्य बने, ज्यारे गुरुचरणनी सेवा करवामां आवे". (१८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५९१)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"सेवा त्यारेज सिद्ध थाय छे ज्यारे गुरुदेव (श्रीआचार्यजी) जे प्रमाणे आग्या करे ते प्रमाणे करवामां आवे. अमुक विधिथी सेवा करवी तेवुं नथी. आ तो दासधर्म छे. एटले जे प्रमाणे तेओ आग्या करे ते ज कर्तव्य रहे छे. एमां कोई शास्त्रोक्त विधि नियामक नथी". (१९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५९२)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"कोईपण रीते पोताना गुरुदेव (श्रीवल्लभ) केवीरीते प्रसन्न रहे (तेमनी आग्यानुं पालन करवाथी स्तो) एवुं करवामां आवे एज हितकर छे. जो गुरु प्रसन्न थाय तो सकल फल सिद्धि ज समजवा. एमां कोई वातनी शंका न लाववी" (२०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५९३)

****

"स्वमार्ग मर्यादा निरुपणम्"

""

"तेथी भक्तिमार्गीय जीवोए पोताना मार्गनी मर्यादाओने सारी रीते जाणीने भक्तिमार्गमां स्थिति.करवी.जोईए. जो ए प्रमाणे न करवामां आवे तो भक्तिमार्गमांथी भ्रष्ट थवानो वारो आवे छे." (२१)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* सम्पुर्ण *

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५९४)

****

"स्वमार्ग रहस्य निरुपणम्"

""

"रसो वै सः" - "प्रभु रसात्मक छे, ए श्रुति वाक्य अनुसार प्रभुनुं स्वरुप रसरुप छे. एमनुं स्वरुप आपणा शास्त्र मां कहया प्रमाणे स्वीकारवुं जोईए. ए रस बे प्रकारनो छे - पहेलो 'संयोग रस'अने बीजो 'बीजो विप्रयोग'. (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५९५)

****

"स्वमार्ग रहस्य निरुपणम्"

""

"क्रिया जेमां मुख्यत्वे रहेली छे, तेवा संयोगात्मक श्रुंगार रसमां रसने जाग्रत करवा माटे (स्थायी) भावो रहेला छे. ते ज प्रमाणे विप्रयोगात्मक श्रुंगार रसमां जे स्वरुप छे ते एवुं ज भावात्मक कहेवायुं छ. विप्रयोगात्मक स्वरूपनी प्राप्तिनुं नाम ज 'भावप्राप्ति' छे, बीजुं कांई ज नहिं." (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (५९६)

****

"स्वमार्ग रहस्य निरुपणम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"एवो भाव प्रथमना शरीरने पोताना स्वरुपे ज राखीने, एने जे प्रमाणे कोईपण जातनी मुझवण विना प्रभुना विरहनो अनुभव थाय तेवा प्रकारना समग्र सामर्थ्यवाला नवा ज शरीरमां फेरवी नांखे छे". (४ १/२)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५९७)

****

"स्वमार्ग रहस्य निरुपणम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"आ वियोगानुभवने लायक जे स्थिति होय छे तेने ज श्रीमहाप्रभुजीए 'निरोध' नी संग्या आपी छे. प्रपंच (जगत आदि) ना स्मरण थी आ निरोधने बाधा आवे छे. (जगतना विषयोमां आसक्त रहेवाथी निरोध सिद्ध थाय नहिं). आ प्रपंचनुं स्मरण त्यारे ज न थाय ज्यारे प्रभुनी.निरोधलीला नुं गुणगान करवामां आवे". (५-६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (५९८)

****

"स्वमार्ग रहस्य निरुपणम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"जो सदैव दीनतानी भावना करवामां आवे तो एवा प्रकारना भावनी प्राप्ति थाय छे जे ब्रह्माजी वगेरेने पण मुशकेलीथी प्राप्त थाय छे. ए मनुष्योने सिद्ध केवी रीते थाय एवी चिंतावाला परमकृपालु प्रभुए पोताना मुखार्विंद ना अवतार रुप श्रीमहाप्रभुजीने प्रकट कर्या. तेथी श्रीमहाप्रभुजीने आश्रये जवाथी मोटेभागे बधाने विप्रयोगात्मक तापक्लेशनो अनुभव थाय छे". (७-८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक" (५९९)

****

"स्वमार्ग रहस्य निरुपणम्"

""

"जो एवा प्रकारनो तापःक्लेश थाय तो ज सर्व रीते दुन्यवी सर्व पदार्थोनो त्याग थाय, अने तमाम दुन्यवी सर्व पदार्थोनो त्याग थाय त्यारे ज प्रपंच - दुनियानुं विस्मरण थ ई शके ". (९). (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६००)

****

"स्वमार्ग रहस्य निरुपणम्"

""

"दुनियाना पदार्थोनुं विस्मरण सिद्ध थतां ज तरत ज प्रभुमां दरेक प्रकारे आसक्ति थाय छे, अने आसक्ति थया पछी जो व्यसन दशा थाय तो पछी बाकी शुं रहे ?" (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०१)

****

"स्वमार्ग रहस्य निरुपणम्"

""

"प्रभुमां प्रेम थवो मुश्केल नथी, परंतु दुन्यवी (जगतना) पदर्थोनुं विस्मरण थवुं ज भारे बाधा करनारुं छे ; माटे ज बुद्धिशाली षुरुषे श्रीमहाप्रभुजी मां दृढाश्रय राखवो जोईए". (११)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०२)

****

"स्वमार्ग रहस्य निरुपणम्"

""

"तेथी श्रीमहाप्रभुजीने शरणे आवेला अनन्य अने निस्साधन जीवोए हंमेशां समग्रभावपूर्वक श्रीमहाप्रभुजीनुं सेवन करवुं जोईए." (१२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

संपुर्णम्

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०३)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"श्रीठाकोरजीना मुखारविंद स्वरुप श्रीमहाप्रभुजीना चरणकमल नी कृपाथी प्रभुना स्वरुपना विषयमां आ ग्रंथमां निरुपण करवामां आव्युं छे." (१)

"रसो वै सः ए प्रकारना श्रुति वाक्यानुसार ए प्रभु रसात्मक छे. एवा रसात्मक श्रीकृष्णमां ब्रह्मवादना सिद्धांत अनुसार भाव राखवो" (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०४)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"ब्रह्मवादमां भगवानने आनंदाकार (आनंद स्वरुप) कहेवामां आवे छे. ए प्रभुना मुख - चरण वगेरे सर्वे अंगो आनंदरुप कहेवामां आवे छे. (आनंदमात्रकरपादमुखोदरादि). " (३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०५)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"करोडो कामदेवोना लावण्यनुं एकत्र मलेलु रुप आनंद मां ज रहेलुं छे. ऐश्वर्य वगेरे बधा भगवद् गुणो आनंदात्मक ज- छे, एमां कोई संशय नथी." (४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०६)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"जगत पण आनन्दाकार जे ब्रह्म छे, तद्रुप ज छे. जगतनुं प्रतीयमान एटले देखातुं स्वरुप भले 'जगदाकार' होय, तेनुं वास्तविक स्वरुप तो 'ब्रह्माकार' ज छे. जेम धडो, दीवाल वगेरे वास्तविक रीते तो ब्रह्म ज छे, फक्त तेने धडो नाम आप्यु माटे धडो, दीवाल नाम आप्यु माटे दीवाल कहीए छीए. (जेवीरीते सोनामांथी धडायेला कंकण, कुंडल आदी वास्तवमां सोनु ज छे छतां तेना जुदा जुदा आकारोने कारणे तेनी ओलख भिन्न भिन्न नामोथी थाय छे)". (५ -६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०७)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"एवी कोई वस्तु नथी के जेने आकार न होय. ब्रह्म साकार होवाथी ए ब्रह्मना आकारना कारणे ज ते समग्र जगत रुपे साकारत्व प्रकट करे छे. (आनंदनुं स्वरुप ज एवुं छे के ते आकार लीधा विना न रहे.)". (७)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०८)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"आथी ज 'श्रीतत्त्वार्थदीपनिबंध' ग्रंथमां श्रीमदाचार्यचरणे सर्वना निचोड रुप वाक्य कह्यु छे - "अखंडं कृष्णवत् सर्वं" - 'सर्व जगत अखंड - एक कृष्ण स्वरुप छे'. (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६०९)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"प्रभुना धर्मो अने शक्तिओ पण प्रभु रुप ज छे. आनंद वस्तु मात्रनुं स्वरुप छे. माटे जे आनंदनो आकार छे ते वस्तु मात्र नो आकार छे". (९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६१०)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"आम (अगाउ कह्यु तेम) रसात्मक एवुं जे स्वरुप ब्रह्म नुं बताव्यु तेने आस्तिकोए 'साकार' छे तेम समजवानुं छे". (९ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६११)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"रस शास्त्रमां जेवा प्रकारनो रस कहेवामां आव्यो छे ते रस बे प्रकारनो सिद्ध छे, तेज रीते श्रुंगार रस संयोग अने विप्रयोग एम बे प्रकारनो छे. संयोग रसनी माफक ज विप्रयोग रस श्रुंगार रसरुप छे एवो निश्चय छे." (१०-११)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६१२)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"श्रुंगार रसना आ बे स्वरुपो मां आटलो ज भेद जाणवो : संयोगरस क्रियात्मक छे अने ए लोक अने वेदमां कहेवामां आवेल छे. ज्यारे विप्रयोगरस भावात्मक छे अने केवल अनुभवथीज जाणी शकाय तेवो छे." (१२ १/२)   (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६१३)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"विप्रयोग अथवा विरह श्रुंगार रसात्मक प्रभुनुं भावात्मक स्वरुप छे. प्रभुनुं भावात्मक स्वरुप जे विरह तत्संबंधी छे जे व्रजभक्तोने ते पण भावात्मक छे. भावात्मक स्वरुप विरह तेओने अखंड छे. माटे तेओ पण भावात्मक ज छे. ए वात तद्‌दन निःसंदिग्ध छे, अने तेओनी सामग्री पण भावात्मक ज छे." (१४)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६१४)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"श्रुतिओ अने अग्निकुमारोने फलरुप मूल लीलानो अनुभव कराववा, तेमां खास तो आपे एमने जे वरदान आपेलुं ते पूर्ण करवा मूल लीलाना कर्ता प्रभुनुं प्राकट्‌य थयुं छे." (१५ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६१५)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

उपर 'श्रुति' अने 'अग्निकुमारो' नो उल्लेख कर्यो तेनो खुलसो करतां कहे छे "वेद नुं अक्षरात्मक रुप आधिभौतिक, अर्थात्मक माहात्म्य ते आध्यात्मिक अने तेनुं सन्मनुष्याकृति रुप ते आधिदैविक स्वरुप, जेमां पुरुष रुप वेद, जे मर्यादारुप अने स्त्रीरुप ते श्रुति पुष्टिरुप. ते श्रुतिओए प्रभुना लोकवेदातित स्वरुपनी लीलारस माणवानी ईच्छा प्रकट करवाथी तेमाटे तेमने सारस्वत कल्पमां व्रजमां गोपी तरीके प्रकट थवानी आग्या करी तेमने स्वरुपानंदनु दान करवानुं वरदान आपेलु. तेवीज रीते रामावतारमां दंडकारण्यमां तप करी रहेला ऋषीओए रामचंद्रजीमां मोहित थई तेमनी साथे रमणनी कामना करेली त्यारे तेमने पण सारस्वत कल्पमां तेमनी ईच्छा परिपूर्ण करवा वचन आपेलु. तेथी तमणे व्रजमां कुमारिकाओ रुपे जन्म लीधेलो. आ बन्ने प्रकरना गोपीजनो - श्रुतिरुपा अने ऋषिरुपा ने आपेला वचननी परिपूर्ति करवा प्रभुनु व्रजमां प्राकट्य थयुं छे." (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६१६)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

''

"प्रभुए पहेलां ए भावात्मक व्रजभक्तोने प्रकट कर्या. त्यारबाद संयोगस्वरुप पोते श्रीवसुदेवजीना गृहमां प्रकट थयां. त्यारबाद आप श्रीनंदरायजीना घेर पधार्या. त्यां आपनुं भावात्मक जे व्रज तेने स्वस्थान बनावी श्रीगोपीजनोना भावात्मक आपनुं जे स्वरुप ते स्थिर कर्युं, अने आ स्वरुपे आपनी लीला व्रजमां सदा सर्वदा कायम छे." (१८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६१७)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

''

"श्रुतिओना अने अग्निकुमारोना मनोरथ पूर्ण करवा माटे आ प्राकट्य छे, एटले आ अवतारलीलाना मुख्याधिकारी तेओ ज छे. माटे विरहभावात्मक प्रभुनुं जे मुख्य स्वरुप छे तेनो क्वचित ज अनुभव था छे." (१९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६१८)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

''

"अत्यारे आपणे भोतिक देहथी श्रीठाकोरजीना स्वरुपनी सेवा करीए छीए एटले श्रीठाकोरजीना मूल स्वरुपनो अनुभव कोईक वार ज थाय छे ; ए प्रमाणे श्रुतिओनी अने अग्निकुमारोनी बाबतमां समजवुं." (२०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६१९)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"श्रीननंदरायजीने धेर (भगवान) प्रकट थया बाद (भागवतजी दशम स्कंध ना तामस) प्रमाण प्रकरणथी लई फल प्रकरण पर्यंत तेमणे एवी लीला करी, प्रथम व्रजभक्तोना मन पोतानामां परोव्या, अने ए द्वारा तेमना देहाध्यास वगेरे पंचपर्वा अविद्या दूर करी, एमना देह मन वगेरेमां आनंद भरी दीधो". (२१-२२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६२०)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"आ रीते ए श्रुतिओ अने ऋषिओने निर्दोष आनंद स्वरुप बनाव्या पछी जेने आत्यंतिक वियोग कहेवामां आवे छे तेवुं मुक्ति करतांए चढियातुं केवल विरहभावात्मक फल आप्यु अने त्यारबाद भावात्मक व्रजमां पोताना स्वरुपमां एमने स्थिर कर्यां". (२३ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६२१)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""

"अक्रुरजी ज्यारे श्रीठाकोरजीने व्रजमांथी पधरावी गया ते वखते अन्यथाभाव एटलेके संयोगथी विपरित भाव अर्थात् विरहभावनुं प्रभुए गोपीजनोने दान कर्युं. कारणके प्रभुए जाण्यु के तेओ जे कारणे व्रजमां प्रकट। थया हतां (श्रुतिओ अने ऋषिओने रास रमाडी पोताना स्वरुपानंदनुं दान करवा) ते हवे सिद्ध थई चुक्यु छे." (२४-२५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६२२)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

''

"(आ रीते) श्रुतिओ अने ऋषिओने स्वरुपात्मक व्रजमां स्थिर करी भगवाने पोताना आत्यंतिक विरह रुप फलना अनुभव योग्य बनाव्या परंतु अंतर्गृहगता गोपीजनोने (जेओ वेणुनाद श्रवण करवा छतां वडिलोए रोकवाथी प्रभु पासे जई न शक्या) तेमणे क्रियारुपे पोतानामां दाखल कर्या, अने ज्यारे समय.आवे त्यारे तेमने बहार काढी तेमनी साथे विहार करे छे अने पाछा पोतानामां समावी दे छे." (२६ - २७ १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक" (६२३)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

''

"आ रीते (उपर जे निरुपण कर्यु) ते बन्ने ने भावरुप समजवा अने ब्रह्मवादीओए तो आ बन्नेने साकार ज समजवाना छे". (२८)

(उपरोकत अनुभवगम्य बाबतो छे, बुद्धिगम्य नथी. तेम छतां बुद्धिथी तेनुं निरुपण करी शकाय छे. एक 'क्रियारमण' छे जेनी लौकिकमां मुख्यता छे, अने बीजुं 'भावरमण' जे अलौकीकमां मुख्य छे. उदा. - महेमान धेर आवे त्यारे तेने जमाडीए त्यारे तेने संतोष थाय, परंतु स्नेहीने तो जमवानो आग्रह न होय, ते सामाना स्नेहथी ज तृप्त थई जाय. 'क्रियारमण' अनित्य, पराधिन होय जेमां सुख साथे दुःखनी पण संभावना होय; 'भावरमण' नित्य, स्वाधिन होय. ते सदा सर्वदा सुखरुप ज छे) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक (६२४)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

''

"लोक अने वेदमां प्रसिद्ध एवा पुरुषोत्तम ते सर्वना आधाररुप छे. ए प्रभुनो आधार अक्षरब्रह्म छे. अक्षरब्रह्मनो आधार अलौकिक प्रपंच छे. (लीलामां) रहेला जीवोए ए ज अलौकिक प्रपंचाधार वाला अक्षरथी पर एवा पुरुषोत्तयने समजवा" (३०) (आ ज वात भगवाने गीतामां कही छे - "यस्मातक्षरमतितोहम् ....अतोस्मि........ पुरुषोत्तम"

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक (६२५)

****

"स्वमार्ग मूल निरुपणम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"श्रीगोपीजनोना हृदयमां गूढभावरुपे रहेला श्रीहरि तो एनाथी ए पर छे. अने ए श्रीकृष्ण केवल श्रीआचार्यजी श्रीमहाप्रभुजी नी कृपाथी ज जाणी शकाय छे". (३१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* "संपूर्ण" *

(जेमणे श्रीमद्भागवत - रासपंचाध्यायी नुं अवगाहन कर्यु छे, तेमने आ स्तोत्रमां करवामां आवेला खुलासा सरलताथी समजमां आव्या हशे)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६२६)

****

"मूलरुप संशय निराकरणम्"

""

"श्रुतिरुपा गोपीजनोनी कृपा द्वारा ज श्रीठाकोरजी पोतानुं मूल रुप बतावे छे. आप रसात्मक अने स्वरुपात्मक श्रीगोपीजनोनी साथे ज सदा सर्वदा रहेला छे". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६२७)

****

"मूलरुप संशय निराकरणम्"

""

"रसात्मक अने स्वरुपात्मक व्रज अने श्रीगिरिराजजीमां आप नित्य विलास करी रह्या छे. पहेला श्रीरामचंद्रजी स्वरुपे अग्निकुमार ऋषिओ उपर आपे कृपा विचारी, त्यारबाद स्वरुपात्मक भावनुं एमना हृदयमां स्थापन कर्युं". (२ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (६२८)

****

"मूलरुप संशय निराकरणम्"

""

"त्यारे ए ऋषिओ ऋषिरुपा गोपीजन स्वरुपे स्वरुपात्मक बन्या. आपना बे स्वरुप छे - एक उत्तरदलात्मक विरहभावात्मक मूल लीला स्वरुप अने बीजु पूर्वदलात्मक संयोग रसात्मक पूर्वरुप. छतांए

संयोग रसात्मक स्वरुपमां विरहभावात्मक स्वरुप आविष्ट थईने मूल रुपथी तेवीज लीला करे छे" . (३-४)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६२९)

****

"मूलरुप संशय निराकरणम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"जेवीरीते ऋषिरुपाओमां तेवीज रीते श्रुतिरुपाओमां पण विरहभावात्मक स्वरुपे भगवान प्रवेश करे छे. ए श्रुतिरुपाओने स्वरुपात्मक बनावे छे अने एमनामां रमण करे छे.". (५) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३०)

****

"मूलरुप संशय निराकरणम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"आवीरीते स्वरुपात्मक बनेला व्रजभक्तो, भगवान ज्यारे रसदान अथवा विहार करे छे त्यारे, तेओ भगवानना आश्रय या आधारभूत छे. ते लीलानी माफक ज अहिं पण आधेयभूत प्रभु अने आधारभूत गोपीजनोना ह्रदयो ए बन्नेनी भावरुपता छे, तेम ब्रह्मवादीओए मानवुं जोईए". (६)(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३१)

****

"मूलरुप संशय निराकरणम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"मूल स्वरुपना बे दल छे - एक स्त्रीदल जे पराशक्ति छे, बीजुं भावदल तेने कृष्ण कहेवामां आवे छे. जेम भावदल स्वरूप कृष्ण भावात्मक छे तेम स्त्रीदलरुप पराशक्ति पण सर्वभावात्मक छे. भक्तना ह्रदयमां स्त्रीदलयुक्त भावदल प्रभु बिराजे छे. बन्ने दलो एकमेक थाय छे त्यारे तेना कारणे ए बन्ने अलौकिक श्रुंगाररसरुपता धारण करे छे, परंतु रस द्विदलात्मक होवाथी आलंबन स्वरुप श्री ठाकोरजी अने श्री स्वामिनीजी एम भिन्न प्रकारे ए रसनुं निरुपण करवामां आवे छे." (७-८-९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३२)

****

"मूलरुप संशय निराकरणम्"

""""""""""""""""""""""""""""""""

"आ प्रमाणे प्रभुना आश्रये आवेला भगवदीयोए बधे स्थले बधी रीते श्रीस्वामिनीजी सहित बिराजतां श्रीगोकुलाधीश स्वरुपमां थता सर्व संदेहोने दूर करवा". (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

संपुर्णम

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३३)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

"भक्तिमार्गमा प्रभुनू प्रकट थवुं एज फल कहेवाय छे. प्रभु परमानंद रूप होवाथी (आने आनंद ए ज परमफल होवाथी) प्रभूनू प्रकट थवू ए फलरूप छे". (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३४)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

"प्रभूनु प्राकट्य थावामा हेतु भक्तनुं दुःख होय छे. प्रभूना त्रने रूपोमा पन प्रभूनो अवतार भक्तोनी तकलीफ ने कारणे ज होय छे". (२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (६३५)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

"आ वात (गई काल ना मुक्तक मा क हे ली) श्रीमहाप्रभूजी ए 'भव दुःख विनाश ' _ 'प्रभु संसार ना दुखो नो नाश करवा मा टे प्रकट थाय छे' ए प्रसंग मा कहीं छे" (२ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३६)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

"जयारे भक्तों ने कोई अन्य असुरादिक थी दुःख थाय छे त्यारे एवा असुरोनो संहार करवा ने माते प्रभु तरत प्रकट थाय छे" (३ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३७)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

"प्रभूने मेलाववा नी कामना ना विषय मां जो दुःख अनुभवतु होय तो त्यां पूर्ण रसघन प्रभु नू प्राकट्य थाय छे". (४ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३८)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

"ज्यां सहज स्नेह ने कारणे भक्तने दुःख थयेलू होय छे त्या करुणा ना सागर प्रभु स्वयं पोते ज मूल स्वरूप थी प्रकट थाय छे". (५ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६३९)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

"उपरोक्त त्रण प्रकार ना प्राकट्य मा - १. भक्तों ने असुरो थी थतु दुःख दूर करवा ब्रह्मादि देवो ए प्रभु पा से जई प्रार्थना करवाथी - दैहिक दुःख दूर थयु, २. भक्तों नी इच्छा परिपूर्ण करवा माटे - वासुदेव देवकी जी ने इच्छा के भगवान जेवो पुत्र थाय तेने परिपूर्ण करवा - मानसिक दुःख, अने ३. श्रुति रू पा गोपिजनो ने सहज स्नेह ने का रणे थयेलू प्राकट्य - भक्त ना स्नेह नू दुःख कारण भूत हतु." (६- ७)

(नोंध _ प्रथम बे मा जीव ने पोताना सुख नो विचार छे, त्री जा मा भक्त ना दुःख मा जीव ने प्रभु ना सुख नो विचार छे)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४०)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

"दुःख प्रभु ना विरह ने कारणे थाय छे, बीजी रिते नहीं. विरह पण दुःख ना कारण रूप त्यारे ज थाय के ज्या रे एवी स्फूर्ति हृदय मा थाय". (ज्या सुधी विरह व्यापी न जाय त्या सुधी दुःख नो अनुभव थातो ज न थी) (८) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४१)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

"विरह हृदय मा व्यापे त्यारे भगवान साथे संबंध थाय छे. संबंध बे प्रकार नो होय छे. _ एक देह ना लीधे, बीजो भावने लयिने. देहे करीने संबध त्यारे थाय जयारे भगवान स्वेच्छा थी भक्त ने संयोग नू सुख आपावा पधारे. आम देह संबंध प्रभुने आधीन छे, आने ते अनित्य छे. परन्तु भाव संबंध स्वाधीन आने नित्य छे. ए संबंध प्रभु प्रत्यक्ष होय के परोक्ष होय, बन्ने स्थिति मा होय छे, जेविरीते पत्नी नो पति साथ नों संबंध छे ते भाव संबंध छे आने ए भाव संबंध सर्वस्व निवेदन द्वारा ज संभवी सके छे. (अन्य स्त्री नो कोई पुरुष साथे भाव संबंध होतो नथी, मात्र देह संबंध ज होय छे) " (९ - १० १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४२)

****

"श्रीमत प्रभु प्राकट्य हेतु निर्णय"

""

अंतमा श्री हरिराय जी आज्ञा करे छे _

"जेवी रीते कन्या पोताना आग्रह थी पतिदेवने पोताना सर्वस्व नू समर्पण करी परोक्ष मा पतिना विरह ना तापक्लेश रूपी भाव नो स्वीकार करे छे, तेवी ज रीते अहिं पण पोताना आग्रह थी पोताना सर्वस्व नू प्रभु ने समर्पण करी परोक्ष मा विप्रयोगात्मक तापक्लेश रूपी प्रभु विषयक भाव नो पण स्वीकार भक्त करे छे. तेना अनुभव थी हृदय मा श्रीकृष्णचन्द्रजी नू प्राकट्य थाय छे. " (१३) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* सम्पूर्ण *

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४३)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

श्रीहरिरायजी आज्ञा करें छे - "हवेली श्रीमदाचार्यचरणना आश्रय-बले श्रीपुरुषोत्तम ना स्वरुपना आविर्भाव विषयमां हुं काईक कहुं छुं" (१)
"पुरुषोत्तम उपनिषदोमां वर्णित एवा रसरुप छे. श्रुंगार ए एके रस छे आने नाट्यशास्त्र नो सिद्धांत पण एज छे. नाट्यशास्त्र ना रचनारा भरत वडेरे मसरर बीजा रसोने रस मानता ज नदी". (२ १/२)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४४)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"ए बधा अन्य रसो श्रुंगार रस साथे संबंध राखता होय तो ज ते रस कहेवाय बाकी नहिं. जे प्रमाणे मोटा माणस ना काममां सोनु आवे छे ते प्रमाणे श्रुंगार रस ना काममां ए बधा रसो आवे छे." (मोटा वापरे तेथी सोनानी किंमत, बाकी सोनानो भाव कोण पूछे ?) (३-४) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (६४५)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"श्रुतिना समग्र वाक्योनी एकवाक्यता ना आधारे स्फुट थता रसात्मक प्रभु साकार छे, सत् चित् आनन्द स्वरुप छे, सर्व विरुद्ध धर्मों ना आश्रमरुप, रुपवाला, सर्वना आधार, अनन्त शक्तिवाला, स्वभावथी अलौकिक, एवा पोताना आनन्दरुप ईन्द्रिय वगेरे वाला छे'. (५-६) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४६)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"ए रसने शास्त्रमां 'संयोग' आने 'विप्रयोग' एम से प्रकारनो कह्यो छे. रसमां 'संयोग-श्रुंगार' अने 'विप्रयोग-श्रुंगार' एम बे भेद बताववामां आव्या छे. ते ज प्रमाणे रसात्मक प्रभुना स्वरुपमां पण भक्तोने ए प्रकारनो अनुभव थतो होवाथी तेवो भेद स्फुट थतो जाणवो" (७ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४७)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"संयोग-श्रुंगार रस जे प्रमाणे समग्र रसशास्त्रनी क्रिययाओना आधाररुप रहेलो छे, ते ज प्रमाणे 'विप्रयोग' ए भावात्मक छे तेमज भावरुप समग्र क्रियाओ ना आश्रयरुपे रहेलो छे." (८ १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४८)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"श्रुंगार रस ना पूर्वदल रुप प्रभु लोक आने वेल मां प्रसिद्ध छे. माटे तो ए प्रभुने लोकवेदप्रथित कहेवामा आवे छे. ए प्रभु श्रुतिमां सिद्ध समग्र ब्रह्मधर्मोना आधाररुप, जगतना कर्ता छे." (९ १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६४९)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"जगत जेनुं कार्य छे तेवा वासुदेव - संकर्षण - प्रद्युम्न - अनिरुद्ध ए चार व्युह सहित, समग्र आश्चर्योना धामरुप प्रभु छे." (१०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५०)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"विप्रयोग श्रुंगार रसात्मक प्रभु भावना गूढपणाने कारणे मात्र भक्तोना ह्रदयमां ज स्थिति करी रहेला, मात्र अनुभूतिरुप एक ज प्रमाणथी जाणी शकाय तेवा, अनन्त करोडो लीलाओना आश्रयरुप अने नित्य नवीन छे". (११ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५१)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"अने व्रजलीलामां जे प्राकट्य छे ते उत्तरदलात्मक स्वरुप प्रभुनुं छे. अने प्राकट्य अंगेनी सर्व व्यवस्था एटले के स्पष्ट समजावट श्रीमदाचार्यचरण श्रीमहाप्रभुजीए करी छे". (१२ १/२)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५२)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"लोक अने वेदमा प्रसीद्ध प्रभु वसुदेव जीने पूर्व जन्ममां आपेला वचनने सत्य करवा माटे व्युह साथे वसुदेवजी ना घरमां प्रगट्या". (१३ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५३)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"वसुदेवजीने त्यां जे प्रभुनु प्राकट्य थयुं छे ते वासुदेव (व्युह) नुं कार्य जे मुक्ति आपवी ते तो छे, उपरांत अन्य व्युहोनुं कार्य - भूभारहरण वगेरे पण छे. ए स्थले तेनुं निरुपण करवामां आव्यु छे. अने एटला व्युहो प्रकट थया छे एम पण कहेवामां आव्यु छे." (१४ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५४)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"वासुदेव व्युहनुं कार्य व्रजमां पण छे एमां संशय नथी. पूतना वगेरे महा दैत्योनो वध करी तेओने मुक्ति आपवाना कार्यथी वासुदेव व्युहनी सार्थकता छे" (१५ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५५)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"आगल 'राजस प्रकरण'मां दैत्यांशवाला कंसादि राजाओनो वध करवामां आव्यानुं कहेवामां आव्युं छे. ते भूभारहरण 'संकर्षण व्युह' नुं कार्य छे'. (१६ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५६)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"आथी शुद्ध सत्त्वात्मक, पर, प्रभु, वासुदेव नामे, श्रीकृष्णचंद्रजीना प्राकट्यने माटे प्रकट थयेला एम कहेवाय छे" . (१७ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५७)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"भावात्मक प्रभु तो शुद्ध सत्वगुणमां रहे छे ज" एवुं बतावववा वासुदेव व्युहनी उत्पत्ति कहीं छे. आ वात ख्यालमां राखीने ज "नंद: आत्मज जायन्ते" (भा. १०-५-१) 'ए स्थले प्रभु उत्पन्न थई चुक्या छे' ए प्रमाणे शुकदेवजी कहे छे. (१९) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५८)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"माता यशोदाजीने धावण उत्पन्न थयुं ते वासुदेव व्युह उत्पन्न थया ते माटे ज. प्रभु भावात्मक होवाथी प्रभुने माटे धावण उत्पत्ति न होय. शुद्ध सत्वगुणमां प्रभुनी जे जे स्थिति ते ज आ उत्पत्ति छे". (२०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६५९)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

""

"श्रीसुबोधिनीजीमां श्रीमहाप्रभुजीए श्रीठाकोरजी नुं प्राकट्य थयुं ते बाबत नो खुलासो सुंदर रीते कर्यो छे. भावरुप प्रभु उत्पन्न थया एम त्यारेज कही शकायके ज्यारे सदासर्वदा विद्यमान भावरुप प्रभु ना आधारभूत वासुदेवनी उत्पत्ति थाय. भावरुप प्रभु तो अजन्मा छे, एमनी उत्पत्ति संभवे ज नहिं." (जेम गुलाबनुं फुल उत्पन्न थाय त्यारे तेनी सुगंध अने गुलाबी रंग तेमां रहेला ज होय, ते पाछलथी उत्पन्न थतां नथी. तेवीज रीते उत्पत्ति तो शूद्धसर्वात्मक वासुदेव व्युहनी ज छे, जेमां भावात्मक प्रभु तो सदासर्वदा विद्यमान ज होय छे) (२१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६०)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

"प्रभुना प्राकट्य समये नन्दरायजीने एवो भाव जाग्यो के मारे त्यां पुत्र प्रकट्या छे. श्रीमहाप्रभुजीए सुबोधिनीजीमां आ प्रमाणे स्पष्ट आज्ञा करी छे. वृतांत दृष्टिथी विचारीये तो नन्दरायजीने त्यां पुत्र प्रकट थया ज नथी. नन्दरायजीनी ए प्रमाणेनी बुद्धि ते एक भ्रान्ति ज छे. परन्तु जो तेम होय तो नित्य वृद्धिगत थतो आनन्द, उल्लास अने प्रेम केम संभवे ?

उपरांत 'सर्व अज्ञानने दूर करनारा प्रभु प्रकट थया पछी अज्ञान रुप भ्रांति रही ज केवीरीते शके ?'

माटे प्राकट्य भावात्मक स्वरुपनुं ज छे. 'मारे त्यां पुत्र प्रकट थया छे' एवो नन्दरायजीनो भाव ए सत्य छे. ए सत्यभाव एज भगवाननुं भावात्मक स्वरुप छे.

जो आ प्रमाणे न होय तो श्रीमहाप्रभुजी नन्दरायजीने आ जातनी प्रतिति थईछे, बुद्धि छे, भाव छे ए प्रमाणे सुबोधिनीजीमां आज्ञा न करें." (२२ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६१)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

"वासुदेव शुद्ध सत्व एटले निर्मल अंत:करण रुप छे. एमां प्रभु सदा सर्वदा बिराजमान छे. ए प्रभुनो आधार छे. जेवुं अंत:करण निर्मल थाय के तरत ज एमां भाव स्वरुपे बिराजता प्रभुनो अनुभव थाय छे.". (२३ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६२)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

"आथीज गोपांगनाओए जन्मोत्सवना प्रसंगे जे मंगल गीतो गाया तेमां प्रभुने "अजन्मा" कह्या छे (भा. १०-५-११). श्रीमहाप्रभुजीए श्रीसुबोधिनीजीमां स्पष्ट कह्यु छे के गोपांगनाओ ए वात जाणी गयेल के आ बालक अजन्मा छे." (२४ १/२) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६३)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

"आ जे मूलरुप भावात्मक प्रभु, तेनुं पूर्वरुप जे शुद्ध सत्वात्मक वासुदेव व्युह ते चार व्युहोमां प्रथम छे. तेनो अवतार वसुदेवजीने त्यां थयो छे, अने एज अवतार नंदरायजीने घेर पधारेल छे. व्रजमां पधरावी लई जवानी अनुकुलता माटे आप प्राकृत बालक बनी गया. यशोदाजीनी गोदमां जेमने नित्य लाड़ लडावाय छे ते मूल स्वरुप नी नकल समु ए प्राकृत बालस्वरुप हतुं. व्रजमां पधार्या बाद ए प्राकृत बालस्वरुपमां मूलरुपनुं योजन थयुं. माटे ज संयोग अने वियोग ए बन्नेना अनुभव थया छे". (२५-२६-२७-२८ १/२)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६४)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

*केवल विप्रयोगात्मक स्थिति पछीथी थई ज्यारे पूर्वना वासुदेव व्युहात्मक स्वरुप प्रभु मथुरामां पधार्या त्यां वासुदेव प्रथमथी ज हतां; ए बन्ने स्वरुप एकरुप थई गया. आथी ज आ स्वरुप महान ज्ञानी भक्तोने पण मोह उपजावे छे". (३०) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६५)

****

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

"आज रीते जो खुलासो करवामां आवे तो प्रभुना बधा चरित्रोना विषयमां मेल मले. अतः भावात्मक स्वरुपनी लीला तो कोई कोई वार ज निरुपायेली छे. (ज्यारे अवतार लीला तो अनेक स्थले छे". (३१)
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६६)

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

"यहर्यंगना" (भा. १०.८.२४) ए प्रसंग वगेरेमां प्रभुनी भावात्मक लीलानुं निरुपण छे. आ प्रमाणे श्रीमदाचार्यचरणना आश्रित वैष्णवोए सघलु समाधान जाणवुं' (३२)

(भागवतजीना दशम स्कंध ना अ. ८ ना श्लोक २४मां भगवाननुं रुपचरित्र वर्णवतां "यहर्यंगना" शब्दथी वाछरडाना पुंछना आधारे चालतुं स्वरुप कहेलुं छे. अहिं त्रिविध लीलानुं निरुपण छे)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६७)

"श्रीपुरुषोत्तम स्वरुप आविर्भाव निर्णय"

"दरेक रीते जीव कदापि न निरुपी शके तेवी जातनी आ वात जे अहिं कहेवाई छे ते हरेदासे श्रीमहाप्रभुजीनी कृपाना प्रभाव वडे ज कही छे". (३३)

अंतमां श्रीहरिरायजी कहे छे -

"आ प्रमाणे अहिं में श्रीकृष्णचंद्रजी ना स्वरुपना आविर्भाव नुं विवेचन कर्यु छे. ए बराबर समजीने भगवदीयो प्रभुमां निरुद्ध थाय". (३४)

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* संपुर्ण *

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६८)

"भगवत्प्रादुर्भाव सिद्धांत"

"भगवान श्रीकृष्णनो जन्म थयो ते वखते भगवानना कया स्वरुपनो प्रादुर्भाव थयो ए संबंधी हवे विचार करवामां आवे छे. (१) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६६९)

****

"भगवत्प्रादुर्भाव सिद्धांत"

""""""""""""""""""""""""

"श्रीमद् भागवत वचन (१०-५-९) अनुसार 'नन्दस्वात्मज उत्पन्ने' ए श्लोक उपरना सुबोधिनीजीना प्रास्ताविक अंशमां 'पितु: पुत्र' ए प्रमाणे जे वचन छे तेनो आशय आ प्रमाणे छे" (जे हवे समजाववामां आवशे) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६७०)

****

"भगवत्प्रादुर्भाव सिद्धांत"

""""""""""""""""""""""""

"अहिं एक प्रश्न उपस्थित थाय छे के 'नन्दरायजीने त्यां केवल मायानो जन्म थयो छे, भगवान तो वसुदेवजी ना पुत्र छे. भगवानने वसुदेवजी अहीं पधरावी गया छे. एटले भगवान नन्दरायजीना दत्तक पुत्र थाय, तो पछी भगवान नन्दरायजीने घेर जन्म्या होय अने वेदविहित कार्य थाय एम शाथी करवामां आव्युं?' आवी शंकानो जवाब छे-

नन्दरायजीने त्यां पण प्रभुनुं प्राकट्य छे, जेनुं एक खास कारण छे - 'नि:साधन जीवोनो उद्धार'. ते नन्दरायजीने घेर प्रकट थवाथी थई शके एम छे, कारणके वसुदेवजीए तो पूर्वजन्ममां तप करेल छे एटलेके तेओ 'ससाधन' छे. परंतु प्रभु तो ससाधन अने नि:साधन बन्ने प्रकारना जीवोनो उद्धार करे छे. नि :साधन जीवो प्रभु पर मीट मांडीने बेठा छे. एटले एमना उद्धारनी प्रभुने विशेष चिंता छे. तेरी ज प्रभुए पहेलां एमनी साथे ज लीला करी छे". (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६७१)

****

"भगवत्प्रादुर्भाव सिद्धांत"

""""""""""""""""""""""""

"उपरोक्त खुलासाथी आपणने प्रश्न थाय के - प्रभु (मथुरा थी) अहिं पधार्या एटला मात्र थी काम थाय छे तो पछी 'प्रभुनो अहीं नन्दरायजी ने त्यां प्रादुर्भाव थयो' एम शा माटे कहेवामां आव्युं छे ?"

(आ हकिकत समजवा जेवी छे !) (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक" (६७२)

****

"भगवत्प्रादुर्भाव सिद्धांत"

''

"उपरोक्त प्रश्नना खुलासामां कहे छे -

वसुदेवजीने त्यां जे प्राकट्य छे ते वंश संबंधथी छे. तेथी भगवान जो ए स्वरुपथी नन्दरायजीने त्यां लीला करे तो ए लीला वंशसंबंधथी ज थई जाय. परिणामे प्रभुनो जन्म क्षत्रियकुलमां अने नन्दरायजी वैश्य जातिना, एटले तेमनो विवाहादि धर्मशास्त्रनी दृष्टिथी अनुचित गणाय. (जो के उद्धारक स्वरुपे लीला करे तो वांधो आवे नहिं). केमके तेमणे नंदरायजीना सगा-संबंधिओनो पण उद्धार करवानो छे, तथा भगवाने श्रुतिओने वरदान आपेलुं छे ते पण सार्थक करवानुं छे, तदुपरांत साधनविहोणा जीवोना उद्धार माटे पण आपनुं प्राकट्य छे. तेथी नन्दरायजीने त्यां जे स्वरुप प्रकट थयुं ते वसुदेवजीने त्यां प्रकटेल स्वरुपथी अलग ज छे.

आ कारणथी भगवल्लीलाना रहस्यने संपुर्ण रीते जाणनारा शुकदेवजी वगेरेए भगवान नन्दरायजीने त्यां उत्पन्न थया तेम वर्णन कर्यु छे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक (६७३)

****

"भगवत्प्रादुर्भाव सिद्धांत"

''

"आपणने प्रश्न थाय के - माया जेटले अंशे दूर थाय तेटले अंशे प्रभुनो प्रकट अनुभव थाय, तो अहिं प्रभु माया साथे प्रकट थया छे एम शा माटे कह्यु छे ?"_ आनो खुलासो छे -

"भगवान नुं प्राकट्य बे हेतु थी होय छे - १.पोताना स्वरुपनो अनुभव करावववा, २.लीला करवा. ज्यां स्वरुपज्ञान करावववुं होय त्यां योगमायाने दूर करवानी जरुर होय छे, केमके जो योगमायाने दूर करवामां न आवे तो स्वरुपज्ञान थई शके नहीं. ज्यां लीलाने माटे प्रमुनुं प्राकट्य छे त्यां तो योगमाया साथे ज तेओ प्रकट्या छे. जो योगमाया न होय तो प्रभुना स्वरुपनुं ज्ञान थई जवाथी अक्षरब्रह्म मां लयात्मक मोक्ष थई जाय, अने तेना कारणे लीला थई शके नहीं.

आ रहस्य समजाववा माटे ज 'प्रभुनो नन्दरायजीने त्यां योगमाया साथे प्रादुर्भाव थयो छे' एम कहेवामां आव्यु छे. अने केमके व्रजमां प्रभुनुं स्वरुपज्ञान करावववानुं होवाथी योगमायाने वसुदेवजी द्वारा दूर मथुरा मोकली देवाई, ज्यां जईने तेणे कंसने प्रभुना प्राकट्यनी वात जणावी. ते कार्य पतावी योगमायानुं पाछुं प्रभुनी लीलाओ माटे व्रजमां गमन थयुं छे.

एम न होय तो प्रभुए योगमायाने व्रजमां जवानी आज्ञा करी त्यांज रहेवानुं कहेलुं ते खोटुं ठरे. व्रजमां योगमायानी जे स्थिति रहेवानी ते देवता तरीके, नहींके प्रभुनी बहेन तरीके, केमके 'हे देवी व्रजमां तने मनुष्यो पूजशे' एम प्रभुए तेने वचन आपेलुं, एटलुं ज नहीं पण आगल फल प्रकरणमां श्रीशुकदेवजी 'योगमाया

लीलामां उपयोगी छे' एवा आशयथी 'प्रभुए योगमायानो आश्रय कर्यो' तेम कहेवाना छे."
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक (६७४)

****

"भगवत्प्रादुर्भाव सिद्धांत"

"प्रभु रसात्मक छे अने रसनिष्पत्ति माटे आलम्बन अथवा आधार आवश्यक होय छे, परंतुं अहीं आलम्बन अथवा आधार तो कांइ जणातो नथी, तो पछी प्रभुनुं प्राकट्य केम संभवे ? आ प्रमाणे कोई शंका करे तो एनो जवाब ए छे के 'शुद्ध सत्वस्वरुप वासुदेवव्युह' तो अहीं प्रकट थयेल छे अने ए ज अहीं आलम्बन या आधार छे." (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्री हरिराय मुक्तक (६७५)

****

"भगवत्प्रादुर्भाव सिद्धांत"

"कहीं वासुदेव व्युह प्रकट थयेल छे एम जे कह्यु तेनुं प्रमाण आपे छे के - गर्गाचार्यजीए नन्दरायजीने कहेलुं के 'आ तमारो पुत्र वासुदेव छे'. ए हकिकत उपरथी समजी शकाय छे के तेओ वसुदेवजीथी प्रकट थयेला हता. मथुरामां विशुद्ध सत्वना आश्रये प्रभुनुं प्राकट्य थयेलुं हतुं. आगल जतां तेओ प्रद्युम्न व्युहनुं कार्य पण करशे, परंतु अहीं व्रजमां तो वंशविषयक कोई पण संबंध न होवाना कारणे 'आ तमारो पुत्र वासुदेव छे, प्रद्यम्न नहीं' एवो आशय गर्गाचार्यजीनो कहेवानो हतो." (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक (६७६)

****

"भगवत्प्रादुर्भाव सिद्धांत"

अंतमां श्रीहरिरायजी जणावे छे के "श्रीवसुदेवजीने त्यां तेमज श्रीनन्दरायजीने त्यां शेषशायी प्रभुनो जे जन्म थयो तेना विशे जे कांइ संशय थाय ते सर्वने श्रीआचार्यवर्य श्रीवल्लभाधीश्वर प्रभुनी कृपा वडे कथित मारा वचनोथी दूर करवो". (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

* संपुर्ण *

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६७७)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

हवे श्रीहरिरायजी प्रभु श्रीपुरुषोत्तम ना प्रादुर्भाव विषयमां सुबोधिनीस्थ वाक्यना शंसय दूर करवा श्रीमहाप्रभुजीनी किंचित कृपाथी आ ग्रंथमां निरुपण करे छे.

प्रभुनुं स्वरुप समजावतां कहे छे - "रसो नै स:" ए श्रुतिमां भगवान ने रसरुप कह्या छे. रस तो श्रुंगार ए छे, केमके एज शास्त्रसिद्ध रस छे" (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६७८)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"श्रुंगार रसमां ज सर्व रस समायेला छे, एवो नाट्यशास्त्रनो सिद्धांत छे. 'श्रुंगार' एटले शुं ते समजवुं जोईए. 'श्रुंग' एटले गूढ भावांकुर, अने 'आर' एटले गूढ भावांकुर मां रहेलो रस. श्रुंगार रसमां संवलित हास्यादि रस रहेला छे. आ प्रमाणे भरतमुनी पण श्रुंगार रसनुं जो मुख्यपणु स्वीकारे छे". (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६७९)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"निर्मल आत्मावाला परमहंस मुनिओने भक्तियोगनुं दान करवाने आप पधार्या छो ए अमे स्त्रीओ केवीरीते जाणिए" एवुं पुष्टिमां अंगीकार कुंतीजीनुं वचन छे (भा.स्कं.१ ,अ. ८). आ मूल स्वरुप विना बीजा एमना अंश कला आवेशादि रुपोनो तो त्यांज ते ते कार्य करवाने ब्रह्मादिनी प्रार्थना पछी आविर्भूत थवानी ईच्छाथी प्रादुर्भाव थयो छे, अने जे कृष्णावतार थयो ते तो पूर्णावतार छे, भाटे एमनो सर्वांशे प्रादुर्भाव थयो छे.

कृपया (६७८) - "श्रुंगार रसमां ......स्वीकारे छे" ना अनुसंधान मां वांचो
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक (६७९)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""

"ए श्रुंगार रसने पण आकृतिवालो वर्णव्यो छे. 'प्रिय ए एनुं शिर छे. मोद दक्षिण पक्ष छे. प्रमोद उत्तर पक्ष छे. आनंद तेनो आत्मा छे. ब्रह्म पृच्छप्रतिष्ठा छे'. आम श्रुति श्रुंगार रसनो परिचय आपे छे के श्रुंगार रस साकार अने आनंदमात्र-कर-पाद-मुखोदरादी छे, एटले तेना सर्व अवयव आनंदमय छे. तेज श्रुंगार रसने, 'कोण प्राण दे छे, कोण जीवाडे छे, जो ए आकाशरुप आनंद न होय तो ?" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्री हरिराय मुक्तक (६८०)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"आनंद अने आनंदमयनी सितारसनी (साकर आशअने रस नी) अने एनी पूतलीनी माफक एकता ज जाणवी. भाटे श्रुतीमां ए ज रसात्मक रुपने आनंद अने आनंदमय शब्दथी वर्णवाय छे." ....
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्री हरिराय मुक्तक (६८१)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"स्वरुपथी आनन्द अने आनंदमय एक ज छे. पण रस अने रस ना गोला नी माफक भेदनो अनुभव थाय छे. परंतु एटलु विशेष छे के 'प्रकट रस धर्म सहित' स्वरुप 'आनंदमय' शब्द वडे कहेवाय छे, ज्यारे 'धर्मी' स्वरुप केवल भावात्मक स्वरुप होई 'आनंद' शब्दथी वर्णवाय छे"........ (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

श्रीहरिराय मुक्तक (६८२)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"आ ज हेतु थी श्रीप्रभुचरणे 'वेणुगीत" ना विवरण मां सुधास्वरुप दर्शावता कह्यु के 'ए सुधा ज आनन्दरुप छे'. ए सुधा भावात्मक भगवद् स्वरुप ज होवाथी आनन्दरुप ज छे. आ प्रमाणे श्रुंगार आ आनन्द अने आनन्दमय शब्दथी वर्णित श्रीपुरुषोत्तम नामथी ज, भगवत्शास्त्रोमां कहेवायो छे. माटे ज गीतामां 'अक्षरथी पण हुं उत्तम छुं' अने 'मने सामान्य मनुष्य जेवो समजे छे ते मूढ़ छे' इत्यादि वाक्यो छ".
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (६८३)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

मूल स्वरुपना प्राकट्यनुं कारण _ "आनूं कारण भगवाननी अनुग्रह करवानी ईच्छा ज छे कारणके 'वरदान आपवामां राजा एवो हुं तमारा मनोरथो पूर्ण करवा प्रकट्यो छुं' अने योगमायाने भगवाने आज्ञा करी के 'मारे माटे रमवानी जग्या तैयार करो' - आ प्रमाणे ना वाक्यों छे. उपरांत जेना पर कृपा थई छे तेवा भक्तो नी प्रपंचासक्तिरुपी पूर्वनिष्ठा स्वलीला द्वारा दूर करी भक्तियोगनुं विधान ज करवामां आव्युं छे" ....

नोंध _

सामान्य जनमानस मां एवी समझ होय छे के कृष्ण मथुरामां प्रकट थया, अने गोकुल मां वसुदेवजी मुकी आव्या पछी अगीयार वर्ष व्रजलीला करी मथुरा पधारी गया।

परंतु वास्तवमां भगवाननुं प्राकट्य मथुरा-गोकुल बन्ने स्थले एकसाथे - मथुरामां लोकवेदप्रथित पुरुषोत्तम रुपे अने गोकुलमां लोकवेदातित पुष्टिपुरुषोत्तम भावात्मक स्वरुपे थयुं छे, जेनो खुलासो श्रीमहाप्रभुजीए भागवतना दशम स्कंधना जन्मप्रकरणना सुबोधिनीजीमां कर्यो छे. तेज बाबतनी स्पष्टता श्रीहरिरारजीए अत्रे प्रस्तुत "प्रभू प्रादुर्भाव विचार" मां प्रभुना चार व्युहना तात्पर्य साथे करी छे, जे क्रमशः वांचवाथी समझी शकाशे. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६८४)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

(चालु) "निर्मल आत्मावाला परमहंस मुनिओने भक्तियोगनुं दान करवाने आप पधार्या छो ए अमे स्त्रीओ केवीरीते जाणिए" एवुं पुष्टिमां अंगीकार कुंतीजीनुं वचन छे (भा. स्कं.१ ,अ. ८). आ मूल स्वरुप विना बीजा एमना अंश कला आवेशादि रुपोनो तो त्यांज ते ते कार्य करवाने ब्रह्मादिनी प्रार्थना पछी आविर्भूत थवानी ईच्छाथी प्रादुर्भाव थयो छे, अने जे कृष्णावतार थयो ते तो पूर्णावतार छे, भाटे एमनो सर्वांशे प्रादुर्भाव थयो छे....... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६८५)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"श्रीमहाप्रभुजी पण 'सर्व चरित्रोनो साक्षात्कार आ स्वरुपमां ज थाय छे' एवी आज्ञा करे छे. पछीना राजस प्रकरण ना आरम्भमां पण 'प्रद्युम्न रुप भगवान ज वसुदेवजी नुं हित करवा पधार्या छे' एवुं वचन छे. 'अमे आपना वज्र-ध्वजादि चिन्हांकित पदथी अनुकंपित, पृथ्वीने अने स्वर्गने जोईशुं ए अमारा अहोभाग्य छे, आ ब्रह्मानी विनंतिथी भूभार हरवा तेमज धर्मादिनुं रक्षण करवा माटे चार व्युह सहित वैकुंठस्थ पुरुषोत्तम नो अहिं प्रादुर्भाव छे" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६८६)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

''

"भूभारहरण आदि कार्यो ते ते व्युह द्वारा पुरुषोत्तम नुं ज कार्य छे, माटे ते पण भगवद् कार्य ज छे. भगवद् कार्य होवाथी ज ते ते व्युह द्वारा पूतना वध आदि लीला निरोध करनारी थई ; अने निरोध मूलरुपनी लीलारुपे छे, तेथी ते ते व्युहनी लीला पण निरोध करनारी छे." .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६८७)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

''

"आ व्युहविशिष्ट प्रभु ज ब्रह्मादिनी प्रार्थनाथी यादवकुलनो संहार करी वैकुंठ मां पाछा पधार्या, परंतु पुरुषोत्तम तो 'मने भक्तिथी वश करें छे' आदि वाक्योथी भक्ति मात्रने ज आधीन छे. भाटे भक्तों साथे लीला करता तेओ लीलास्थानमां ज बिराजे छे ". .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६८८)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

''

"आ प्रभुनो साक्षात्कार ते (अवतारावस्था) वखते पण अवतार समयनी सामान्य ईच्छाथी थतो न हतो, भक्तिथी ज साक्षात्कार थतो हतो. 'भगवान अनन्य भक्तिथी ज प्राप्त थाय छे' ए गीतावाक्य साक्षी पूरे छे, माटे ए वात भूलवी न जोइए के अवतार समयनां दर्शन वखते पण (मूलरुपनुं) दर्शन अनन्य भक्ति थी ज थतुं हतुं". .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६८९)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"शुकदेवजीए पण सकललीलासहित (मूलरुप) भगवानने एज सर्वोत्कृष्टस्वरुपे बिराजता 'जयति जननिवास' श्लोकमां वर्णव्या छे. लीला कर्या पछी भगवान हालमां क्यां छे, एवो संशय न थवानुं कारण एज छे. प्रभासिय कथा तो व्यामोहिका छे, एटले आसुरोने मोह करवा माटे छे. 'ए तुं मायामय जाण' ईत्यादि वाक्योथी एने मायिक समजवानी छे". .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९०)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

हवे व्युह ना स्वरुपोने समजावतां कहे छे_

"यादव वंशमां (पुत्ररुपे) संबंध बांधवा माटे भगवान 'प्रद्युम्न व्युह' रुपे श्रीदेवकीजीमां उत्पन्न थया. 'विष्णुरुपिणी देवकीमां पुत्ररुपे प्रगट्या' ईत्यादि वाक्योथी ए वात सिद्ध थाय छे. भगवाने पण कह्यु के 'हे योगमाया ! हुं देवकीना पुत्र रुपे प्रकटीश"......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९१)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"ए ध्यानमां राखवुं जोईए के साक्षात पुरुषोत्तम पुत्र थता नथी, ए तो विशुद्ध तत्त्व (वासुदेव) ने अधिष्ठान (आधारस्थान) करीने ज प्रकट थाय छे. अने गर्भस्थिति तो प्रद्यम्न स्वरुपे ज छे. माटे ज शुकदेवजी 'देवकी जन्मवाद' एवुं विशेषण भगवान मां योजे छे. श्रीउद्धवजीए पण श्रीनन्दादिना मननुं समाधान करवा माटे कह्यु के 'आ बालकने माता श्री तेम पिता पण नथी"....... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९२)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""""

"अनिरुद्ध व्युह" धर्मरक्षा रुपी कार्य करवा माटे उत्पन्न थया छे. आ वात (भागवतमां) 'मनास्यासन् प्रसन्नानि' थी आरंभीने 'जायमाने जनार्दन' सुधीना वचनमां समजावी छे........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९३)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"संकर्षण " पण , सात्विक कल्पना अधिष्ठान रुपे जलशायी विष्णु स्वकलाशेषसहित प्रकट थया छे अने अविद्या निवृत्ति द्वारा मोक्ष आपे छे, त्यां सर्वनो प्रलय करवा समर्थ तेवा, अविद्या नो प्रलय करे छे. अने भगवाननुं प्रिय करवा माटे प्रकट थया छे.......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९४)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"आ संकर्षण व्युह रुप देवकीजीना गर्भने खेंचीने मायाए व्रजमां जई रोहिणीजीना उदरमां पधराव्या, तेथी तो ए व्रजमां गया, कारणके तेओ भगवाननुं प्रिय करवा ज प्रगट्या हतां. पूतनावध रुप अविद्या अने अध्यास ने दूर करवानुं कार्य तेमणे आज स्वरुपे कर्यु हतुं" ....

🌹🌹[मित्रो, आजथी बे वर्ष पूर्वे आज जेमनो प्राकट्य दिवस छे ते पुष्टि संप्रदाय ना विशिष्ट आचार्य श्रीहरिराय महाप्रभु ना विभिन्न ग्रंथोना अनेक लधु ग्रथोना आधारे "श्रीहरिराय मुक्तक" ना शिर्षकथी आपणी नित्यनी सवार उगी छे. लगभग ७०० मेसेज साथे हाल प्रस्तुत थई रहेलु "प्रभु प्रादुर्भाव विचार" अंतिम ग्रंथ छे, जेमां आपश्रीए प्रभुना प्राकट्यनु गूढ रहस्य प्रकट कर्यु छे. आशा छे आपने आपश्रीना आ विभिन्न ग्रंथोना आधारे श्रीमहाप्रभुजीना सिद्धांतो समजवामां सरलता थई हशे. आजना उत्सवनी आप सोने खुब खुब वधाई.]🌹🌹

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९५)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"मुक्तिदान तो 'वासुदेव व्युह' ज करें छे. 'आविरासित्' ए श्लोकथी सर्वधर्मवाला पुरुषोत्तम नो ज प्रादुर्भाव दर्शाव्यो छे, अने 'तमद्भुतम्' ए श्लोक पछी सर्वधर्मवाला प्रभुनुं ज वर्णन करेलुं छे. जो केवल प्रद्युम्न अंशनुं ज अहीं प्रागट्य थयुं छे अने पुरुषोत्तम नुं नहीं एम कहीए तो 'तमद्भुतम्' श्लोकमां जे बालस्वरुपनुं वर्णन कर्युं छे ते संभवे नहीं"……..... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९६)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"संकर्षण व्युह अंतरंग लीलामां शा माटे ?", आनो खुलासो करतां श्रीहरिरायजी कहे छे - "संकर्षण व्युहमां सात्त्विक कल्प-अधिष्टाता वासुदेव पोढे छे, अर्थात् भगवाननी शैय्या रुपे ज दास्य करवाथी ए भगवान ना भक्त छे. माटे जेम भक्तोमां कोईक वार मूल स्वरुपनो आवेश थाय छे तेवी ज रीते आ संकर्षण मां पण मुलभूत प्रभुनो आवेश थाय छे. .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९७)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"आ आवेश कदाचित ज थाय छे, हंमेश नहीं. जो हंमेश मानी लेवा मां आवे तो तेमनी प्रभु जोडे सरखामणी थई जाय, अने तेम थवाथी भक्तपणुं मटी जाय, अने भक्तपणुं न रहे तो श्रीहरिनुं प्रिय करवानुं संकर्षण थी बनी शके नहीं. एटले 'हरे: प्रियाकीर्षया' ए वाक्यमां जे संकर्षण व्युहनुं अंतरंगपणुं सुचववामां आव्यु छे ते अंतरंगपणाने वांधो आवे. संकर्षण व्युहमां भगवाननो आवेश छे ते 'अहो अमी' ए श्लोकमां श्रीमुखे आपे जे एमां रहेला पोताना असाधारण धर्म वर्णव्या छे तेना द्वारा समजी शकाय छे. ....

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९८)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"तेथी ज भक्तोमां प्रवेश करीने जे रुपे आप चरित्र करे छे ते ज रुप बलदेवजीमां छे एम जाणवुं. अर्जुन साथे भरतभूमिनो भूभार हरवा माटे सित अने कृष्ण केश संकर्षण कला अर्जुन अने भगवानमां आवी; आ वात 'ताविमौ हरेरंशाविआगतौ' ए श्लोकमां वर्णवी छे."............. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (६९९)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"वसुदेवने त्यां पुरुषोत्तम धर्मिस्वरुप नुं प्राकट्य" - केवल पुरुषोत्तम नन्दभवनमां मायासहित प्रकट थया छे. वसुदेवजीने घेर पण प्रकटेलुं जे धर्मविशिष्ट स्वरुप तेने स्वधर्मिस्वरुपमां अंतर्भाव करवा माटे प्राकृत शिशुरुपे प्रकट थया त्यां आनुं निरुपण छे. .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७००)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"आ वातनी 'आ तमारो पुत्र क्वचित वसुदेव ने त्यां थयो हतो' ए गर्गवाक्य साक्षी पुरे छे. जो नन्दरायजीने घेर प्राकट्य न मानीए तो नन्दरायजीने आ 'तमारो पुत्र' एवुं गर्गाचार्य केम कहे? आगल चालतां 'माटे आ नन्दनो पुत्र' इत्यादि वाक्योमां नंदपुत्र तरीके जे उल्लेख करवामां आव्यो छे, ते संभवी शके नहिं"..........
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७०१)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"हवे जो वसुदेवजीने त्यां प्राकट्य न मानीए तो 'देवकी जठरथी उत्पन्न थयेला' अने 'देवकीसुतना चरणकमलथी जेणे लक्ष्मी प्राप्त करी छे' एवुं देवकीपुत्र रुपे श्रीगोपीजनोए करेलुं वर्णन संभवे नहीं. शुं परम आप्त एवा गोपीजनो जुदा प्रकारनुं (असत्य) कहे ?.माटे वसुदेवजीना गृहमां पण ए समये मूलरुप प्रभुनो आविर्भाव मानवो जोईए" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७०२)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

" आविर्भाव ना कारण तो बे छे - एक, वसुदेवजी अने देवकीजीने विरह वडे अगियार वर्ष पर्यंत बाललीलानो भावना द्वारा अनुभव कराववो अने बीजुं धर्मविशिष्ट जे स्वरुपनुं दर्शन कराव्यु , ते वरदान समयना स्वरुपनुं भान करावववा माटे. ए ज आ भगवान एवुं समजावववा माटे आ धर्मविशिष्ट स्वरुपनु दर्शन करावववानी जरुर हती".......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७०३)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"नन्दरायजीने घेर वासुदेव व्युह" _ आ वात बे स्थले। छे - एक तो 'नन्दगृहे वासुदेव:' अने बीजु 'वासुदेवोत्रैव आधारभूत:' , वासुदेव व्युह नी लीला वसुदेव ने घेर ए वखते उपयोगी न हती, तेथी वसुदेव ने घेर वासुदेव व्युहनुं प्राकट्य नथी. साक्षात् मुक्तिदान करनार वासुदेव नुं प्रयोजन वसुदेवजीने त्यां न ज होय; अने 'पार्थास्तु पूता: पद्मापुरस्य' ईत्यादि वाक्योनी साथे त्यारे ज संगति मले छे".......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७०४)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"व्रजमां तो माया सहित पुरुषोत्तम नो आविर्भाव छे. व्रजमां पूतना वगेरे ने मुक्तिनुं दान करवा माटे वासुदेव व्युह नी जरुर छे, तेथी वासुदेव व्युह नन्दरायजीने त्यांज प्रकट थया एवुं कहेवुं पडे. हवे माया ना आवरणमां पुरुषोत्तम वासूदेव जेमनुं अधिष्ठन छे, तेवा समजवा. वासुदेव विशुद्ध सत्वात्मक होवाथी पुरुषोत्तम नुं अधिष्ठान पण छे. आ ज कारणथी, एटले के अहिं वासुदेव व्युह छे ए कारणे ज ईन्द्र, नलकुबेर, वरुण आदिने पण अहीं पुष्टिलीला ना दर्शन थया छे, नहिंतर फक्त व्रजजनोने ज थात. माटे नन्दरायजीने घेर प्रकट्या तेम युक्तिथी सिद्ध थयुं अने सिद्धांत पण आ प्रमाणे छे" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७०५)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"वासुदेव व्युह नन्दरायजीने घेर प्रकठ थया एमां प्रमाण छे - यशोदा नन्दरायजी पूर्वजन्ममां ज्यारे एओ धरा-द्रोण अवस्थामां हतां त्यारे ब्रह्माथी प्राप्त करेला वरदान ने सार्थक करवा माटे वासुदेव व्युह प्रकट्या, ए खुलासो पण छे, नहिं तो पुरुषोत्तम तो पुत्र रुपे प्रकटे नहिं. एतो वरणानुकुल पोतानी ईच्छाथी ज प्रकट थाय छे." .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक " (७०६)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"आम थाय तो वरदान व्यर्थ थाय माटे श्रीशुकदेवजीए पण 'पुत्रोभूते जनार्दने' एम नथी कह्युं. पुत्रपणु साक्षात्पुरुषोत्तम मां तो न ज घटे, कारणके भाव ए सर्वरुपे थाय छे; 'आ भगवानने माता नथी के पिता नथी' ए उद्धव वाक्य पण तो ज घटे. भगवान भावात्मक छे माटे भक्त जेवी भावना करे ते सर्व संभवे, (भक्तनी भावना भगवान सिद्ध करे) ; माटे कांई अयोग्य छे ज नहीं"............ (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७०७)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"आ वात श्रीमद् भागवत मां - 'यद्यद्भियात उरुगाय विभावयन्ति ततद्वपु: प्रणयसे सदनुग्राहाय' - अर्थात् 'भक्तोना उपर अनुग्रह करवाने माटे एओ जे जे बुद्धिथी आपनी भावना करे छे, ते ते देह आप धारण करो छो, प्रकट थाओ छो', श्लोकथी कही छे. श्रीमदाचार्यचरणे पण 'नन्दस्वात्मज उत्पन्न' आ श्लोक ना श्रीसुबोधिनीजी मां 'पोतानाथी ज पुत्र जन्म्यो' एवी नन्दरायजीनी बुद्धि ज वर्णवी छे" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७०८)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"नन्दरायजीने घेर पुरुषोत्तम प्राकट्य " _ नन्दरायजीने घेर पुरुषोत्तम ना प्राकट्य मां प्रमाण योगमाया छे. मायाना प्रादुर्भावथी भगवाननो प्रादुर्भाव सिद्ध थाय छे. माया भगवदावरण रुप छे.

आवरण प्रकट थाय त्यां आवरणवाला भगवान पण प्रकट होय ज, नहिंतर माया कोनुं आवरण करे? (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७०९)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"मायानी भगवानथी जुदी स्थिति तो संभवे ज नहीं. माया ए मूलरुप शक्ति छे. क्यांये पण शक्ति शक्तिमान ने छोडीने रही शके नहीं. आ हकिकत 'प्रकाशाश्रयवद् वा तेजस्त्वात्' ए व्याससूत्र मां सिद्ध करी छे के सूर्य अने सूर्यनो प्रकाश एक ज छे, तेम शक्ति अने शक्तिमान एक ज छे. आम जो बनाने वच्चे अभेद होय तो शक्तिरुप माया शक्तिमान भगवानने छोडीने क्यां स्थिति करे ?" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७१०)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"माया शक्ति छे, एवुं 'मायया च निपेवितम्' अर्थात् 'मायाथी सेवायेला' - लख्यु छे, तेथी माया शक्ति छे एवुं शास्त्र सिद्ध छे, माटे ज श्रीमदाचार्यचरणे 'माया कृष्णस्य' ए प्रमाणे निबंध मां आज्ञा करी छे, अने आ वात लक्षमां राखी 'मायया एव' - भगवान मायाथी रुपांतर पामता, एम पण कह्यु छे. आवी रीते मायाना निरुपण थी ज भगवाननो आविर्भाव नन्दरायजीने घेर सिद्ध थयुं. त्यां मायाना प्राकट्यनुं वर्णन कर्यु छे" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

" श्रीहरिराय मुक्तक" (७११)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"आम मायाथी पुरुषोत्तम आवरण वाला थईने रहे छे. जो आवरण रुप माया प्रकटे तो आवरण जेना वगर न संभवे तेवा भगवान पण अहिं ज प्रगटे ए वात सिद्ध थई ; तेथी ज (माया नुं आवरण होवाथी) श्रीठाकोरजीनी जुदी उत्पत्ति थई छे एवुं ज्ञान कोईने नथी थयुं. जो भगवत्प्रादुर्भावनुं ज्ञान कोईने थयुं होय तो ए फक्त व्रजजनोने ज थयुं हुं ; ए कारणथी ज सर्व व्रजजनोए उत्सव मनाव्यो छे"...........
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (૭૧૨)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"वृषभानु ना घरमां प्रादुर्भाव" _ भगवान मायाना आवरण सहित प्रकट थया ए उपरथी भगवानना रसात्मक स्वरुपनुं आपणने भान थाय छे. रस गुप्त होय तो ज रसपणानी सिद्धि थाय; अर्थात् गुप्तता ज रस पोषक छे......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (૭૧૩)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"भगवान गूढ रसात्मक छे. तेथी ज आप पितांबर सहित प्रकट थया. वात्स्यायन ऋषिनो पण ए ज मत छे. _ 'गुप्त रस ज रसताने पामे छे'. ए रस आलम्बन विभाव स्वरुपे, युगल रुपे, लीलासृष्टिमां श्रुतिरुपा आने अग्निकुमारो ने, कृपा करीने, संयोगरसनो अनुभव करवाने माटे, अने ए पोषक संयोगरस वडे केवल विरहरसनुं दान करवा माटे नन्दरायजीना घरमां अने व्रषभानु ना घर मां प्रकट थयो"..........

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (૭૧૪)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"जो आ रस बे आलंबन विभाव रुपे प्रकट थयो न होत तो श्रुतिरुपा अने अग्निकुमारो ने संयोगरसनो अनुभव ज न थात, कारणके मूलमां ए युगलस्वरुप प्रकट नथी. एटले संयोगरसनो जो अनुभव न थाय तो संयोगरसनो अनुभव थया पछी थनार स्वतंत्र विरहरसानुमव पण न ज थात"............(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (૭૧૫)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"बीजा आलंबनना एटले श्रीस्वामिनीजीना आविर्भाव मां तो आनन्दमय एवुं तेमनुं श्रीअंग ज आवरण छे. साकरनी रसनी ज्यां मूर्ति बनाववामां आवे त्यां मूर्ति ज आवरण छे. ज्यारे रसाकार भगवान मूर्तिरुप थई जाय, त्यारे रसपणु स्पष्ट रीते मालुम न पडे, जेम रसात्मक भगवान सर्वभवनसमर्थ रुप माया वडे अनेक रुप थाय छे" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७१६)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"अनंत रुप होवाथी बीजुं रुप ज प्रकट करे छे, मायाथी बनावटी रुप देखाडता नथी. तेवीरीते मुख्य स्वामिनीजी पण बीजा आलंबन विभाव रुप होवाथी रसात्मक छे. ए रसात्मक स्वामिनीजी अनंतरुप होवाथी जुदु रुप ज धारण करी शके छे, ए रुपांतरथी ज श्रीस्वामिनीजी नो संयोग सिद्धिने माटे अप्राकृत सर्व सामग्री सहित प्रादुर्भाव थयो छे, एमां जराय शंकाने स्थान नदी."........... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७१७)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"माटे वसुदेवजी माया ने मथुरा लाव्या त्यारे अधिष्ठान रहित थयेल रसनुं दर्शन नहिं थाय एवी शंका करवी नहीं, कारण के माया ने लई गया, पण व्रजमां वासुदेव नु अधिष्ठान छे अने माया ते लीलामां रसनुं पोषण करवानुं अने अन्यने ते लीलानुं भान न थवा देवानुं काम करवा माटे मध्यस्थ तरीके वर्ते छे"............. (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७१८)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"माया मथुरा गई तो जेने आधारे रही शके एवुं बीजुं भगवत् स्वरुप पण त्यां होवुं जोईए, एम कोई शंका करे तो एनो जवाब एम नथी ; मायानुं मात्र त्यां रवी ना किरणोनी माफक गमन ज छे, त्यां मायानो आविर्भाव थयो नथी ; माटे ज कंसना हाथमांथी उडीने आकाशमां गया बाद माया लीला मां उपयोगी होवाथी ते व्रज मां आवीने रही छे" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७१९)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

(आगलना ७१८ ना अनुसंधान मां वाचवुं)

"हे देवी ! तुं व्रजमां जा ; मनुष्यो तारु पूजन करने" वगेरे भगवद् वचनथी ए वात सिद्ध थाय छे, माटे खरी स्थिति तो व्रजमां ज छे. एटले ज फल प्रकरणमां कह्यु छे के - "भगवाने योगमायानो आश्रय करी लीला करी" .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७२०)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

लीला करती वखते तो मायानुं आवरण दूर ज थाय छे, कारण के लीला माटे मध्यस्थ तरीके मायाने पासे ज, पण अलग राखे छे. तेथी ज श्रीआचार्यचरण आज्ञा करे छे के 'भगवाने ज्यारे लीला करी त्यारे योगमाया नो पासे ज आश्रय करी बेठा' .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७२१)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

जेमने वरदान मल्यु छे तेवा श्रुति अने अग्निकुमारो पण चिरकालथी रहेली दर्शनेच्छाना तीव्र ताप-क्लेश ना भार वडे एमना ह्रदयमां 'भावैरंग्कुरित' ए श्लोकमां करेली रीते जे रुप प्रकट्युं ते भावात्मक रुप छे, अने ए पण गोपीजनो ज्यारे श्रीनन्दरायजीने घेर आव्यां त्यारे भगवद्-दर्शनानंतर त्यां ज नन्दगृहमां ज आव्युं, ए 'गोपीओ सांभलीने हर्ष पामी', ईत्यादि वचनथी वर्णवेलुं छे. .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७२२)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""""""""""""""

'वासुदेव' जेनु अधिष्ठान छे तेवा प्रभु प्रथम प्रकट थया, तत्पश्चात् नन्दगृहमां ज्यारे श्रीगोपीजनो पधार्या, त्यारे अधिष्ठान रहित व्रजसुंदरीना ह्रदयमां रहेलुं जे भावात्मक स्वरुप ते पण त्यां आवी पहोंच्युं.

एटले आ बन्ने स्वरुप संक्रांत (एकमेक) थई गया. एनो (जेलों जेनो) अधिकार (संतों ते) प्रमाणे व्रजमां बधे अनुभव थयो.......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७२३)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""

"अन्यथा" इत्यादि वचनोथी एम बतावे छे के 'नन्दरायजीने त्यां वासुदेव व्युहनुं प्राकट्य नथी' एम मानवामां शो वांधो छे ?. वासुदेव व्युह नन्दरायजीने त्यां प्रकट थयो_ ए वात अगाउ कहेवामां आवी छे. जो आ प्राकट्य न मानवामां आवे तो त्यां केवल मायानो ज वासुदेव रहित जन्म थयो एम कहेवाय. .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्री हरिराय मुक्तक" (७२४)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""

ए मायाना उत्पन्न थवाथी यशोदाजीने जे स्तन्य-दुग्ध थाय ते भगवान केम पीए ?, कारणके ए दुग्ध शुद्ध पदार्थ नथी. अहिं आशय आ प्रमाणे छे_ भगवाननो वास्तविक जन्म नथी (तेओ अजन्मा छे). एटले स्तन मां दुध भगवानने लीधे थाय नहिं. परंतु (भगवाने 'नन्दपत्नी माया ने कहेलुंके) "यशोदाजीमां तुं जन्मीश" ए वचनथी मायानो जन्म वास्तविक छे......... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्री हरिराय मुक्तक" (७२५)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""""""""""""""""""""""""

माया नो जन्म वास्तविक होवाने लीधे यशोदाजीने स्तन्य (धावण) उत्पन्न थयुं छे. जो वासुदेव व्युह नो नन्दरायजीने त्यां आविर्भाव न मानीए तो केवल माया जनित स्तन्य, भोग मात्र सिद्ध करनार होवाथी लौकिक स्नेहने कारणे उत्पन्न थयुं छे, तेथी शुद्ध नथी. तेथी शुद्धि ना अभावे अंत:स्थित बालकनी शुद्धिने माटे अलौकिक रसभोक्ता भगवान स्वयं सम्पन्न होई पान करे नहीं, अंगीकार न ज करे............
(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्री हरिराय मुक्तक" (७२६)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

उपरोक्त प्रसंगथी समझी शकाय छे के भगवानने भोगनी अपेक्षा नहीं होवाथी अने पोते अलौकिक होवाथी भगवान भक्त उपर कृपा करीने भक्तना समर्पित पदार्थोनो अंगीकार करे छे, नहीं के स्वयं भोग माटे, ए वात सिद्ध थाय छे. ....(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्री हरिराय मुक्तक" (७२७)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

भगवान नि:साधन भक्तो माटे प्रकट थाय छे. व्रजस्थ भक्तो नि:साधन हतां. देवकी - वसुदेवजी ए पूर्व जन्म मां तप आदि कर्यु हुं, तेथी तेओ तो सुसाधन हतां, परंतु व्रजजनोए एवुं तप वगेरे कर्यु नथी........... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्री हरिराय मुक्तक" (७२८)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

श्रुतिरुपा अने कुमारिकाओ ना तेमज तेमने अनुसरनारा अन्यने माटे ज प्रभु स्वेच्छाथी ए गोपीजनोमां अने भगवदीयोमां सर्वथा प्रकट थया तेम मानवुं ; अर्थात् नि:साधन भक्तो माटे ज भगवान प्रकट थाय छे.

आ वातनुं समर्थन करतां श्रीप्रभुचरण श्रीभागवत-सुबोधिनीजी उपरना श्रीमति टिप्पणिजीमां कहे छे के _ 'नि:साधन-फलात्मा आ प्रभु श्रीगोकुलमां प्रकट थया, माटे अमे सर्व प्रकारे निश्चिंत ज थया छीए' .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्री हरिराय मुक्तक" (७२९)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

"मायानुं प्राकट्य नवमीए ज छे" _ श्रीपुरुषोत्तम माया सहित नन्दरायजीने घेर प्रकट्या, तो माया अने पुरुषोत्तम नो प्राकट्य समय एकज थयो, आम छतां 'नवमीए मायानो जन्म थयो एम कहेवाय छे ए केम संभवे ? आनो खुलासो एक ज छे - माया नुं जन्मवु ए तो भगवानथी भिन्न थाय त्यारे ज संभवे, भगवानन्नी साथे नहीं, माटे ज मायानी साथे कही, भगवानन्नुं मुख्यत्व छे अने मायानुं गौणत्व छे, एम कही, मायानो प्रादुर्भाव नहीं, पण भगवानन्नो ज प्रादुर्भाव कह्यो छे........... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्री हरिराय मुक्तक" (७३०)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

भगवान ज मायाना आवरण वाला अष्टमीने दिवसे आविर्भाव पाम्या छे. माया तो जुदी ज (भगवद् प्राकट्य पछी) वसुदेवजी लेवा आव्या पछी जन्मी ; ए आशयथी ज नवमी ना दिवसे माया नो जन्म कह्यो छे. (तेथी तेने अनुजा कही छे)............ (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७३१)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

पुत्रोत्सव आदिक (नन्द महोत्सव) शुद्ध नवमीना दिवसे थयानो हेतु पण ए ज छे. ज्यारे माया जुदी पडी जाय त्यारे ज भगवान ना दर्शन थयां. आवरण दूर थाय त्यारे ज दर्शन थाय अने दर्शन थाय ते पछी ज उत्सव थाय ; माटे ज पुत्रोत्सव (नन्दमहोत्सव) नवमीना दिवसे थयो छे ए युक्तिसिद्ध ए छे. .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्रीहरिराय मुक्तक" (७३२)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

""

धरा-द्रोण ना पण अधिष्ठान श्रीस्वामिनीजीना हृदयमां बिराजमान भावात्मक श्रीनन्द-यशोदाजीनो पण भावात्मक भगवान ना प्रादुर्भाव समये आवेश थयो छे, एटले कोई पण अंशे आश्रित विद्वानोए संशय न करवो .... (डॉ. जयेन्द्र सोनी)

"श्री हरिराय मुक्तक" (७३३)

****

"प्रभु प्रादुर्भाव विचार"

''

इति श्रीवल्लभाचार्य कृपाना आश्रय थकी,
हरिदासे कर्यो आनो विचार निवृति महीं.

प्रसन्न नाथ हो मारा। श्रीमद्‌वल्लभ विठ्ठल,
स्वामिनी-स्वामी साथे ते तदनुसारीओ तथा.

* इति श्रीवल्लभाचार्य-श्रीविठ्ठलचरणरेणुनी अभिलाषा वाला दासानुदास श्रीहरिदासरचित 'प्रभु प्रादुर्भाव विचार' समाप्त थयो *

****

** आम छेल्ला बे वर्ष थी अविरत चाली रहेल "श्रीहरिराय वांग्मुक्तावली" ना अनेकानेक लधु ग्रंथोनो सत्संग अहीं समाप्त थाय छे. जयश्रीकृष्ण.**

(डॉ. जयेन्द्र सोनी)

''